

NOT FOR SALE

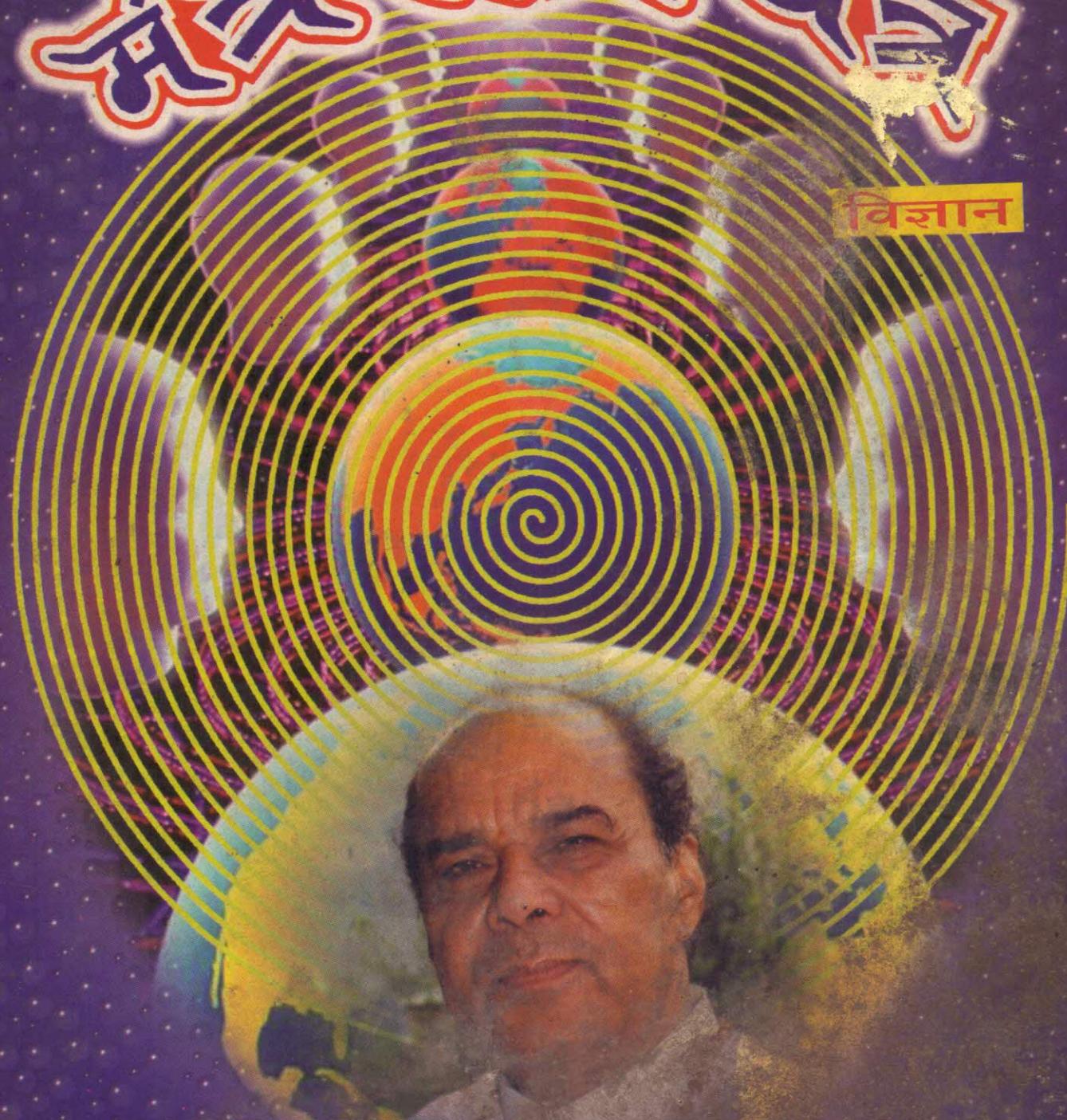
शिव चक्र ब्रह्माण्ड विशीषांक

मई-जून 2005

मूल्य : 18/-

शिव-तंत्र-स्तर

विज्ञान



रुद्धि आपके जीवन में
रखेश्वर श्रावण मास

लक्ष्मी वर-दरव्द माल्य
अनंग साधना - शोतिकृता पूर्णता





COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



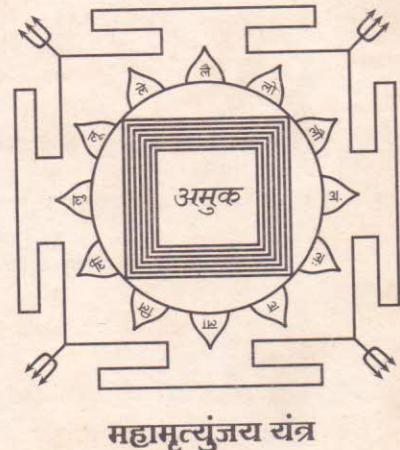
By

Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server]

महामृत्युंजय यंत्र

- ★ मृत्यु का तात्पर्य केवल जीवन की समाप्ति ही नहीं है, मृत्यु का तात्पर्य है रोग, शोक, दुःख कर्ज चिन्ता इत्यादि।
- ★ कलियुग में शीघ्र फलदायी मंत्र एवं यंत्र में महामृत्युंजय यंत्र को चमत्कारिक प्रभाव युक्त माना है।
- ★ बीमारी छोटी हो या बड़ी, परिवार के किसी भी सदस्य को महामृत्युंजय यंत्र अपना प्रभाव शीघ्र देता है।
- ★ महामृत्युंजय का तात्पर्य भगवान महादेव हैं जो तत्त्वेश्वर है अतः किसी भी प्रकार का तंत्र प्रयोग इस यंत्र को स्थापित करने मात्र से शांत हो जाता है।
- ★ भय मुक्त, चिन्ता मुक्त जीवन के लिए महामृत्युंजय यंत्र वरदान है।
- ★ यदि आपकी भगवान शिव में आस्था है तो इसे धारण कर स्वयं अनुभव करें।



महामृत्युंजय यंत्र

कई बार ऐसी स्थितियां जीवन में आ जाती हैं, जब प्राणों पर संकट बन आता है - ये कारण कोई भी हो सकता है, किसी घड़यंत्र अथवा साजिश का शिकार होना, किसी भयंकर रोग से ग्रसित होना आदि। भगवान शिव को संहारक देवता माना गया है और मृत्यु पर भी विजय प्राप्त करने के कारण मृत्युंजय कहा गया है। अपने साधक के प्राणों पर आए संकट से भगवान महामृत्युंजय अवश्य ही रक्षा करते हैं, यदि प्रामाणिक रूप से उनकी साधना सम्पन्न कर ली जाती है इस यंत्र प्रयोग द्वारा समस्त प्रकार के भय - राज्य भय, शत्रु भय, रोग भय आदि सभी शून्य हो जाते हैं।

साधना विधान

इस यंत्र को किसी सोमवार के दिन पीले कागज पर लाल स्याही से अथवा कपड़े पर अंकित करें। यंत्र में जिस स्थान पर अमुक शब्द आया है, वहां अपना नाम लिखें। यदि यह प्रयोग आप किसी अन्य के लिए कर रहे हों, तो उसका नाम लिखें। यंत्र के चारों कोनों पर त्रिशूल अंकित है, वह प्रतीक है इस बात का कि चारों दिशाओं से भगवान शिव साधक की रक्षा कर रहे हैं। यंत्र के चारों कोनों पर काले तिल की एक-एक ढेरी बनाएं। प्रत्येक ढेरी पर एक-एक 'पंचमुखी रुद्राक्ष' स्थापित करें। ये चार रुद्राक्ष भगवान शिव की चार प्रमुख शक्तियां हैं। इसके पश्चात् 'महामृत्युंजय माला' से निम्न मंत्र की 5 मालाएं सम्पन्न करें -

महामृत्युंजय मंत्र

// ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् //

इस मंत्र का 11 दिन तक जप करें, फिर चारों रुद्राक्षों को एक काले धागे में पिरोकर धारण कर लें। एक माह धारण करने के बाद यंत्र, रुद्राक्ष को जल में विसर्जित करें।

साधना सामग्री = 240/-

सम्पर्क :-

मंत्र-यंत्र-तंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

फोन : 0291-2432209, 2433623, फैक्स : 0291-2432010

आनो भ्रदा: क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और भारतीय गृह विद्याओं से समन्वित मार्सिक पत्रिका

श्रीकृष्णप्रकाश

॥ॐ पदम् तत्वाय नाकायणाय गुकम्भ्यो नमः ॥



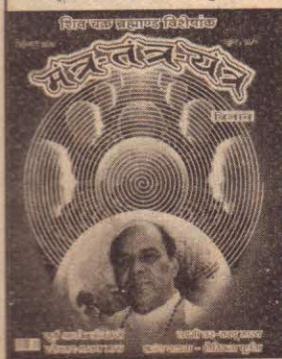
सद्गुरुदेव
सदगुरु प्रवचन 5

स्तम्भ

गुरुवाणी	44
शिष्य धर्म	46
नक्षत्रों की वाणी	60
नक्षत्रों की वाणी	62
में समय हूँ	64
में समय हूँ	65
वाराहमिहिर	66
वाराहमिहिर	67
इस मास दिल्ली में	80
इस मास दिल्ली में	82
एक दृष्टि में	86

वर्ष 25 अंक 04-05

मई-जून 2005 पृष्ठ 88



साधना

सूर्य संक्रान्ति साधना	23
ब्रह्मास्त्र साधना	30
श्रावण सोमवार साधना	37
बटुक भैरव साधना	51
मृतात्मा आवाहन साधना	52
कामदेव अनंग साधना	68
लक्ष्मी वर-वरद माल्य	71
शत्रु स्तम्भन साधना	78

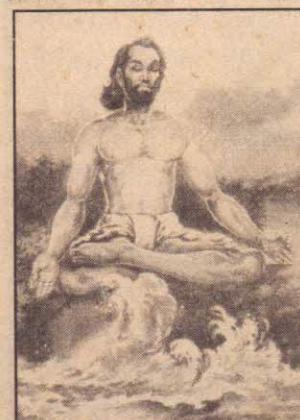


पूजन

गुरु पूर्णिमा पूजन 47

चिशेष

सूर्य नमस्कार	27
सत्यं शिवम् सुन्दरं	33
साधना में सफलता क्यों नहीं मिलती	55
आज्ञा चक्र जागरण	75



:: सम्पर्क ::

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन: 011-27182248, टेली फैक्स: 011-27196700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001 (राज.) फोन: 0291-2432209, टेली फैक्स: 0291-2432010

WWW address - <http://www.siddhashram.org> E-mail add. - mtyv@siddhashram.org

प्रकाशक एवं स्वामिन्व
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
द्वारा
सुदर्शन प्रिन्टर्स
487/505, पीरागढ़ी,
रोहतक रोड, नई दिल्ली-87
से मुद्रित तथा
मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान हाईकोर्ट
कॉलोनी जोधपुर से प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति: 18/-
वार्षिक: 195/-



नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय, तो उसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमककड़ साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद मैं असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 195/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

☆ प्रार्थना ☆

वन्देऽहं सद्यजातं मदन्मर्यं पश्चिममेव वन्दे,
वन्दे तं वामदेवं त्रिन्यन्युक् उत्तरं चापि वन्दे।
वन्दे ईशान्मूर्धं स्फटिसंब्रिभं तत्पुरोर्धं च वन्दे;
वन्दे घोरमधोरं निखिलपरिग्रंतं शंकरं तं च वन्दे॥
भगवान शंकर के पश्चिमाभिमुख, कामदेव को भस्मसात् करने वाले सद्योताज स्वरूप की मैं वन्दना करता हूँ, उत्तराभिमुख तीन नेत्रों वाले वामदेव नामक अवतार को भी मेरा नमन समर्पित है ऊर्ध्वमुख वाले ईशान स्वरूप का एवं स्फटिक के सदृश दिव्यतम रूप वाले तत्पुरुष का भी मैं नमन करता हूँ, सर्वत्र स्थित रहने वाले, घोरतम कार्यों से युक्त अघोर स्वरूप भगवान शंकर को पुनः-पुनः भावभूर्ण हृदय से प्रणाम करता हूँ।

☆ श्रद्धा - लिंगि की कुंजी ☆

एक बार एक ऋषि समुद्र के किनारे खड़े उगते सूरज की भव्यता देख रहे थे। वे एक पेड़ के नीचे शांत वातावरण में खड़े थे। समुद्र की ओर से ठंडी, ताजगी भरी हवा चल रही थी और उसके साथ वृक्षों के ऊपरी भाग हल्के-हल्के झूम रहे थे, बहुत दूर नीले पर्वतों पर बादल छाये हुए थे।

वहां उनके पास जिज्ञासापूर्ण दृष्टि लेकर एक शिष्य आया। उसकी ओर देखते हुए ऋषि ने पूछा, “वत्स, तुम्हें क्या बात विचलित कर रही है?”

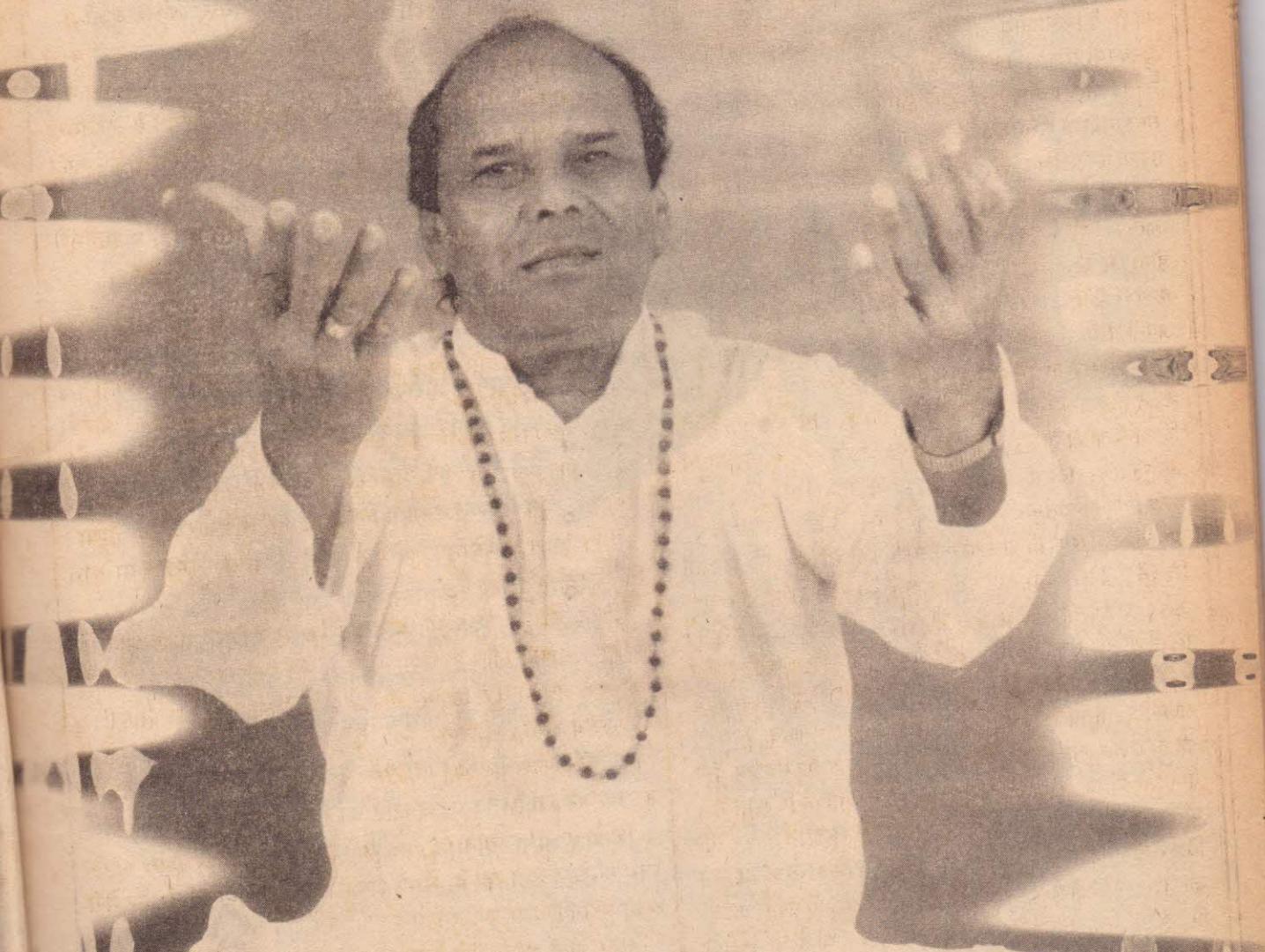
शिष्य बोला, “गुरु जी, बात यह कि आप जिस प्रकार भूमि पर चलते हैं, उसी प्रकार सरलता से पानी की सतह पर चल सकते हैं? किंतु हम जब पानी में जाते हैं तो छटपटाते हैं और ढूबने लगते हैं।”

गुरुदेव बोले, “जिसके दिल में श्रद्धा है और जिसकी आंखों में निष्ठा का प्रकाश है - वह मछियारे की नाव की भाँति आराम से पानी पर चल सकता है।”

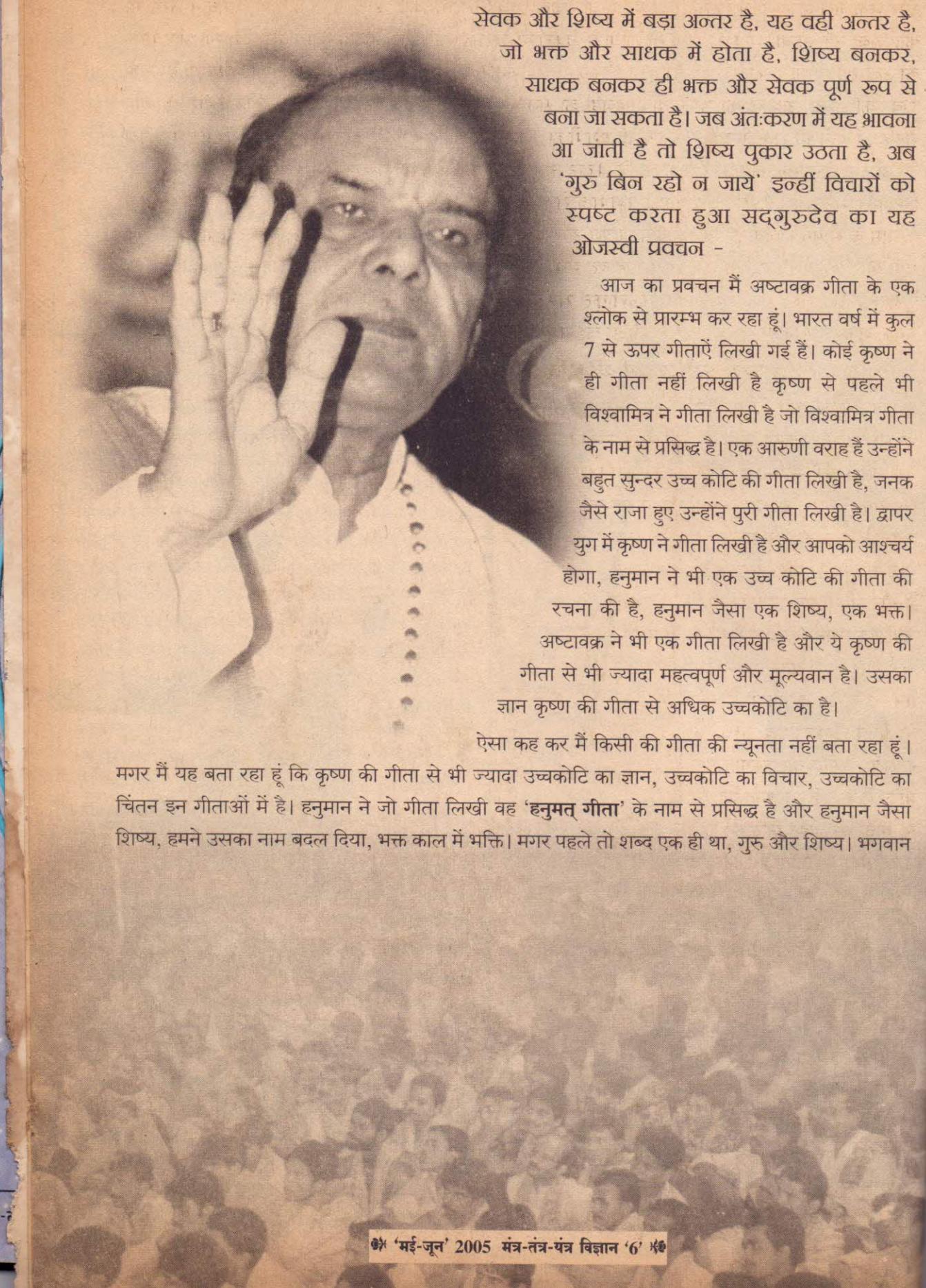
ऋषि बोले, “तब मेरे साथ आओ और हम मिल कर पानी पर चलते हैं।” शिष्य उनके पीछे-पीछे चल पड़ा। दोनों गुरु-शिष्य पानी पर चलने लगे। अचानक एक विशाल लहर उठी। ऋषि तो उस लहर पर चले, किंतु शिष्य ढूबने लगा। ऋषि ने पुकारा, “वत्स, तुम्हें क्या हुआ है?”

उत्तर देते हुए शिष्य की आवाज में भय था, “गुरुदेव, जब मैंने उस विशाल लहर को अपनी ओर आते देखा तो लगा वह मुझे निगल जायेगा। मेरे दिल में डर पैदा हुआ और मैं ढूबने लगा। मेरे प्रिय गुरुदेव, मुझे बचा लीजिए, नहीं तो मैं ढूब जाऊंगा।”

और ऋषि बोले, “अफसोस! मेरे बच्चे, तुम ने लहरों को तो देखा और उनसे डर गए, किंतु तुमने लहरों के स्वामी को नहीं देखा जो सदा तुम्हारी सहायता के लिए तत्पर है।”



शुभ विवाहो वाराण्य



सेवक और शिष्य में बड़ा अन्तर है, यह वही अन्तर है,
जो भक्त और साधक में होता है, शिष्य बनकर,
साधक बनकर ही भक्त और सेवक पूर्ण रूप से
बना जा सकता है। जब अंतःकरण में यह भावना
आ जाती है तो शिष्य पुकार उठता है, अब
'गुरु बिन रहो न जाये' इन्हीं विचारों को
स्पष्ट करता हुआ सदगुरुदेव का यह
ओजस्वी प्रवचन -

आज का प्रवचन मैं अष्टावक्र गीता के एक
श्लोक से प्रारम्भ कर रहा हूं। भारत वर्ष में कुल
7 से ऊपर गीताएँ लिखी गई हैं। कोई कृष्ण ने
ही गीता नहीं लिखी है कृष्ण से पहले भी
विश्वामित्र ने गीता लिखी है जो विश्वामित्र गीता
के नाम से प्रसिद्ध है। एक आरुणी वराह हैं उन्होंने
बहुत सुन्दर उच्च कोटि की गीता लिखी है, जनक
जैसे राजा हुए उन्होंने पुरी गीता लिखी है। द्वापर
युग में कृष्ण ने गीता लिखी है और आपको आश्चर्य
होगा, हनुमान ने भी एक उच्च कोटि की गीता की
रचना की है, हनुमान जैसा एक शिष्य, एक भक्त।
अष्टावक्र ने भी एक गीता लिखी है और ये कृष्ण की
गीता से भी ज्यादा महत्वपूर्ण और मूल्यवान है। उसका
ज्ञान कृष्ण की गीता से अधिक उच्चकोटि का है।

ऐसा कह कर मैं किसी की गीता की न्यूनता नहीं बता रहा हूं।
मगर मैं यह बता रहा हूं कि कृष्ण की गीता से भी ज्यादा उच्चकोटि का ज्ञान, उच्चकोटि का विचार, उच्चकोटि का
चिंतन इन गीताओं में है। हनुमान ने जो गीता लिखी वह 'हनुमत् गीता' के नाम से प्रसिद्ध है और हनुमान जैसा
शिष्य, हमने उसका नाम बदल दिया, भक्त काल में भक्ति। मगर पहले तो शब्द एक ही था, गुरु और शिष्य। भगवान्

और भक्त जैसे शब्द तो थे ही नहीं। क्रृग्वेद में या यजुर्वेद में भक्ति जैसा कोई शब्द आया ही नहीं, भगवान जैसा भी कोई शब्द नहीं आया। ब्रह्म का शब्द तो आया है, देवताओं का शब्द आया है। भगवान शब्द का उच्चारण और भक्ति का उच्चारण, ये भक्ति काल में ही पैदा हुआ और ये भक्त केवल आज से चार सौ साल पहले की ही स्थितियाँ हैं। जहां बाबर का समय, अकबर का समय या शाहजहां का समय था। तब ये शब्द भक्त पैदा हुए हैं। चाहे कबीर हो, चाहे सूर हो, जितने भी सब लोग हैं, सब एक ही युग में हुए। केवल चार सौ साल के इतिहास में ये भक्ति और भक्त पैदा हुए और उन्होंने एक नई पद्धति निकाली कि केवल नाम मात्र से भी भगवान की प्राप्ति हो सकती है और उनका यह सिद्धान्त फैल गया। इसलिए की उनको नाम मात्र से भगवान की प्राप्ति नहीं हो पाई और वे एक काल्पनिक भगवान के नाम के सामने झुकते रहे कि भगवान आयेंगे और हमारे दुःख दूर कर देंगे। जब अकबर का अत्याचार बहुत बढ़ गया और औरंगजेब का भी जब अत्याचार बढ़ गया, तब तुलसी ने देखा कि हिन्दू जाति बहुत अधिक दुःखी है, पीड़ित है तो उन्होंने एक ग्रंथ लिखा 'तुलसीकृत रामचरित मानस', उन्होंने राम की बड़ी स्तुति की, बड़ा वीर है, धनुष बाण, तीर लेकर, युद्ध प्रिय है, शत्रुओं का संहार करने वाला है।

'जब जब होय धर्म की हानि, बाढ़े अथम असुर महाअभिमानी'

जब-जब भी धर्म की हानि होगी और जब यह असुर बढ़ जायेंगे। तब-तब भगवान रूप को धारण करेंगे और असुरों का नाश करेंगे और इस प्रकार से उन्होंने एक नायक दिया, हिन्दूओं को।

रक्षा

उस नायक की कल्पना के सहारे व्यक्ति अपने धर्म की

कर सके। मगर ऐसा कह कर के भी, मैं यह नहीं

कहता हूं कि भक्त होना गलत है। हजारों-लाखों

भक्त आदमी हैं। मंदिर में जाते हैं, हाथ जोड़ते

हैं और अपनी मनोकामनाएं मांगते हैं। मगर

जहां तक पूर्णता की बात है वह भक्ति मार्ग

से सम्भव नहीं। भक्ति केवल कीर्तन और

मन को संतोष दे सकती है कुछ क्षणों

के लिये। स्थायित्व भाव नहीं दे

सकती। क्योंकि वह अस्थाई भाव है।

मंदिर में जाते हैं तब भाव पैदा होता

है, मंदिर से बाहर निकलते हैं तो

भाव समाप्त हो जाता है और यदि

जो चौंबीस घंटे भक्त बन कर रहते

भी हैं वे भी अपने आप में उनकी

श्रेष्ठ विधा होगी। मगर मेरी राय

में वह अपने आप में गिड़गिड़ाकर

और घुटने टेक कर और एक

काल्पनिक भगवान के सहारे जीवन

यापन करने की कला में लिप्त है।

अष्टावक्र ने अपनी गीता में इसी सिद्धान्त

को दोहराया। यद्यपि उस समय कोई भक्ति

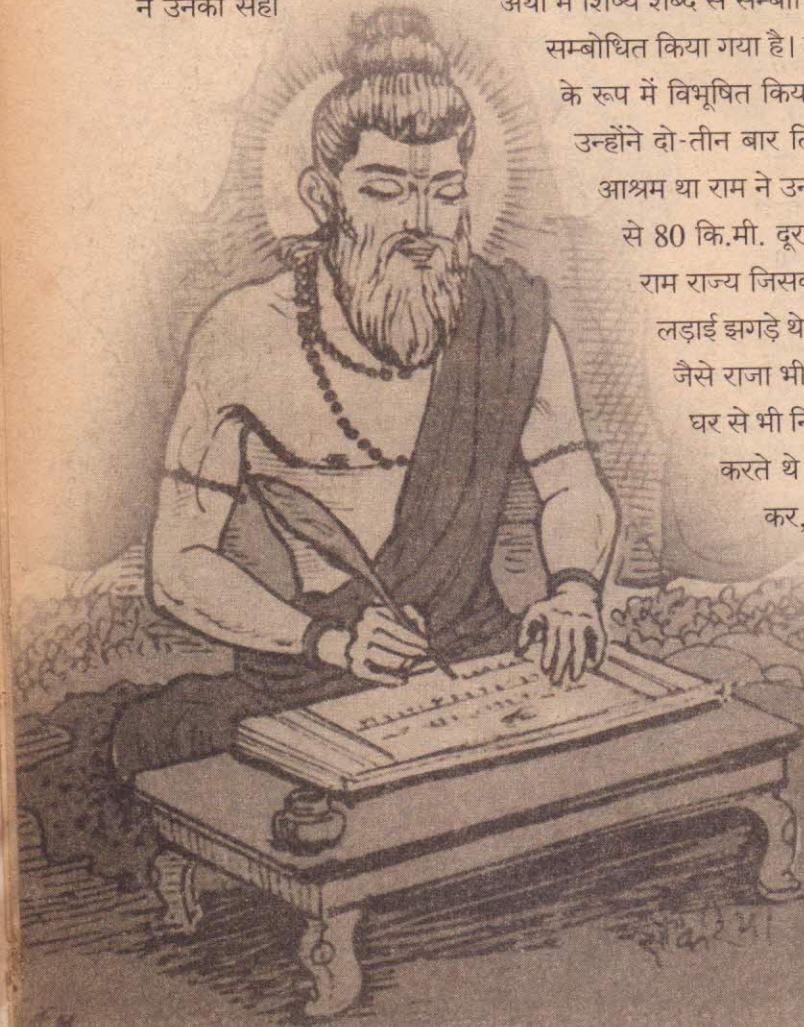
जैसी चीज थी ही नहीं।



हनुमान के जीवन का एक प्रसंग है कि राम की सेवा में वो चौबीस घंटे तत्पर रहते थे। वे कोई भक्त नहीं थे अपने आप में उच्चकोटि के ज्ञानी थे और विद्वान् थे। यह उनकी गीता से स्पष्ट होता है कि उनकी गीता में कितने उच्चकोटि के विचार और चिंतन हैं। कितना उच्चकोटि का ज्ञान उसमें लिखा हुआ है। एक बार उन्होंने देखा कि भगवान् राम चार-पाँच दिनों से बहुत उदास हैं, चिन्तित हैं, तनाव में हैं, मुस्कुरा नहीं रहे। उन्होंने एक दो बार कारण भी पूछा कि ऐसा क्या कारण है कि आप इतना अधिक चिन्तित हैं, क्या कार्य है आप मुझे बताइये? मैं अकेला ही आपकी कृपा से समर्थ हूँ कि मैं आपके तनाव को कम कर सकता हूँ यदि मैं आपका सेवक हूँ। ये भक्त शब्द जो आया है ये तुलसी ने लिखा है, अपने रामरचित मानस में ही कि 'मैं आपका भक्त हूँ', वाल्मीकि ने कभी भी अपने रामायण में हनुमान को भक्त शब्द से सम्बोधित नहीं किया और वाल्मीकि राम के समय में ऋषि थे। जहां सीता वापिस रावण के यहां से आई थी तब वाल्मीकि आश्रम में रही। वाल्मीकि ने जो कुछ लिखा है सत्य लिखा है। क्योंकि आंखों से देखा हुआ लिखा है। उनके समय की घटना है। तुलसी ने उससे कई हजार वर्ष बाद लिखा है। और उस समय तक कम से कम दो सौ रामायण लिखी जा चुकी थीं। कुम्भ रामायण अलग है, तेलंग रामायण अलग है, वाल्मीकि रामायण अलग है। इस प्रकार से दौ सौ रामायण लिखी जा चुकी थी। दक्षिण में जायें तो एक सौ एक रामायण है। अलग-अलग ऋषियों द्वारा अलग-अलग रामायण लिखी गई है। उनका सार और तथ्य लेकर के उन्होंने एक ग्रंथ लिखा जिसको रामचरित् मानस कहा गया। इसलिये उन्होंने अपने ग्रंथ में हनुमान को भक्त कहा है। मगर वाल्मीकि ने उनको सही

अर्थों में शिष्य शब्द से सम्बोधित किया है और भगवान् राम को गुरु के रूप में सम्बोधित किया गया है। जहां भी वाल्मीकि ने कहा है या तो उनको सम्प्राट के रूप में विभूषित किया है कि वह एक राजा है और पथभ्रष्ट राजा है, उन्होंने दो-तीन बार लिखा है और इसीलिये अयोध्या के पास उनका आश्रम था राम ने उनका आश्रम उजाइ दिया, वाल्मीकि का और वहां से 80 कि.मी. दूर उन्होंने अपने आश्रम का पुनर्निर्माण किया और राम राज्य जिसकी तुम कल्पना कर रहे हो, राम राज्य में भी ऐसे लड़ाई झगड़े थे। सामान्तशाही थी, कई पत्नियां रखते थे, दशरथ जैसे राजा भी रखते थे। उन पत्नियों के मोह में आकर बेटों को घर से भी निकाल दिया जाता था। मंथरा जैसी को मुंह लगाया करते थे, कुटिलता होती थी। एक भाई को वनवास भेज कर, दूसरे भाई को राजगद्वी पर बैठाने के षड्यंत्र होते थे। ये सब आपके राम राज्य में भी होते थे। आज भी होता है।

उस हनुमान ने जब राम को पूछा कि आप चार दिन से मुस्कुरा नहीं रहे हैं। मैं क्या करूँ क्या शिष्य हूँ मैं, कैसा शिष्य हूँ मैं? यदि मैं आपके जीवन के तनाव, दुःख को दूर नहीं कर



सकता और जब-जब भी आपके लिये दुःख पड़ा है, तब-तब आपके लिये मैं सर्वप्रथम सहायक हुआ हूं। मैं बढ़प्पन नहीं कर रहा हूं। जब लक्ष्मण जी मुर्छित हुए तो मैं औषधि लेने गया और सुमेरु पर्वत उठा लाया। जब राम को सीता की सुध नहीं हो रही थी, तब मैं समुद्र लांघ करके सीता की चूड़ामणि लेकर के आपके पास आया। तब मुझे आपने कहा कि जब तक सीता की सुध नहीं आयेगी, तब तक मैं अपने प्राण नहीं रख पाऊंगा। तब मैंने आपको उनकी सुध लाकर दी कि वो यहां है और जब आपको और लक्ष्मण को यह रावण पाताल लेकर गया तो पाताल में जाकर के आपको छुड़ा कर ले आया। यह सब कार्य मैंने विश्वास भाव से किया। मेरा कोई स्वार्थ नहीं था। केवल यही था कि आप मेरे गुरु हैं, स्वामी हैं, आपने भी मुझे इतना ही प्रेम दिया है, स्नेह दिया है। जैसे एक स्वामी अपने सेवक को या गुरु अपने शिष्य को देता है। अब आप चार दिन से उदास क्यों हैं। जब राजगद्दी मिल गई है, आप राज गद्दी पर बैठे हैं। तब राम कुछ बोले नहीं। उनको यह तनाव था कि समाज मेरी पत्नी को लेकर के क्यों अनेक प्रकार के लांछन लगा रहा है। यह रावण के यहां रही थी, क्या होना चाहिए? मैं क्या करूं?

यदि कोई कहे कि तुम्हारी पत्नी गलत है और इसी के आधार पर आश्रम में ले जाकर फैक दें। ये पौरुषता नहीं थी।

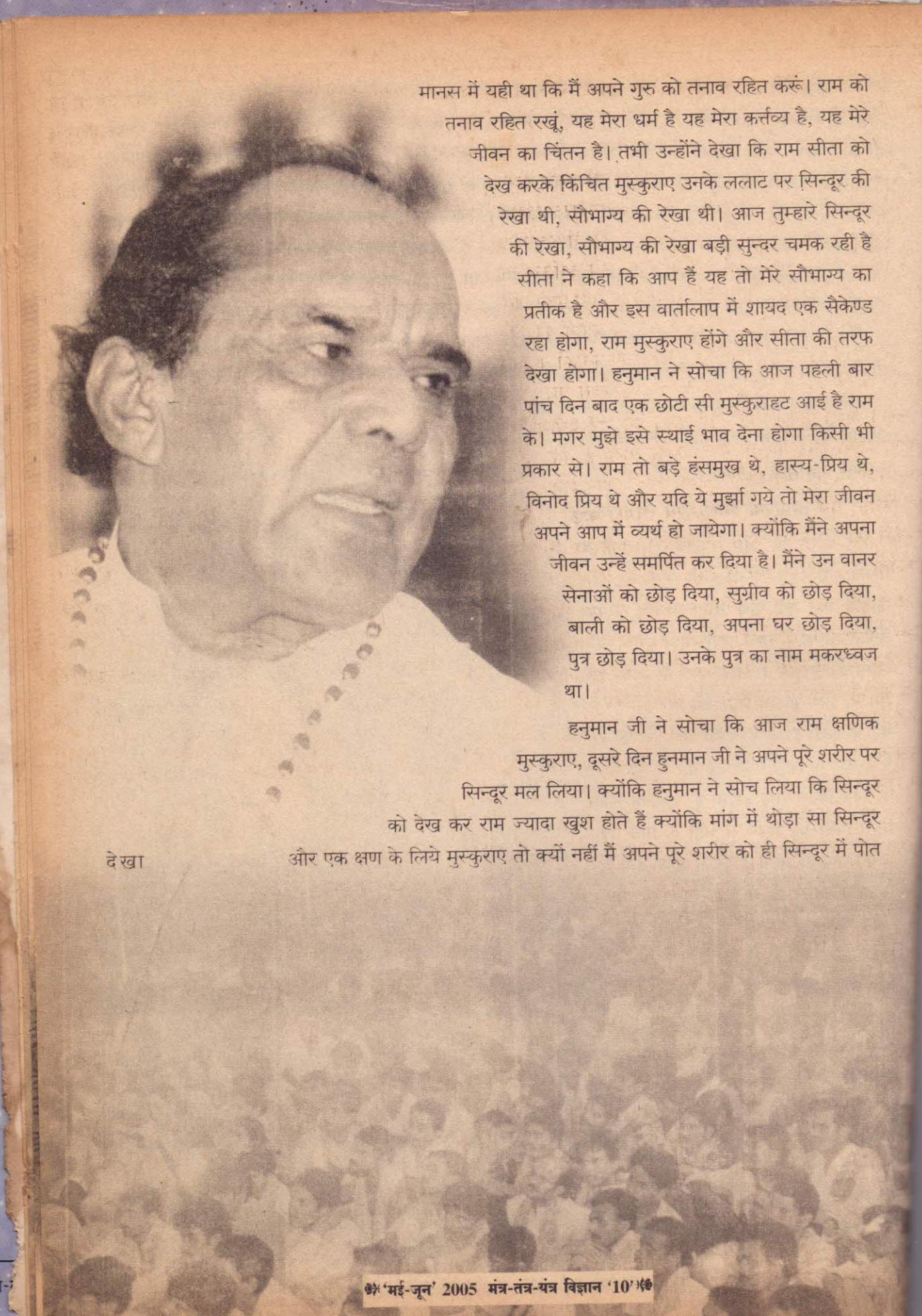
और वाल्मीकि ने सत्य कहा है -

अपौरुषं किल राम त्वं गच्छसि।

तुम कायर हो, तुम नपुंसक हो, अपौरुष हो, तुम मैं पौरुष नहीं है। इसीलिये तुमने सीता को, और तुम खुद भी जाकर मिल नहीं पाये और चुपचाप लक्ष्मण के द्वारा यह बहका कर के, मैं तुम्हें अयोध्या में घुमाने ले जा रहा हूं और सीता को आश्रम के आस-पास ले जाकर छोड़ दिया।
मैंने तो उसे आश्रम में लाकर रख लिया। मेरी तो बेटी के तुल्य है। मगर तुम्हारे जीवन में यह कलंक धुल नहीं पायेगा। ऐसा कह कर के भी मैं राम के लिये विनय भाव रखता हूं। क्योंकि अपने माता-पिता या अपने से बड़ों के प्रति एक विनय भाव ही अपने जीवन में शोभा देता है मैं तो इतिहास की बात कर रहा हूं। यह मंथन चल रहा था राम के मानस में और इसीलिये तनाव में थे कि मैं क्या करूं? क्या नहीं करूं? और तनाव था कुछ चिंता थी और कोई घटना रही होगी उनके मानस में हनुमान ने चार-पांच बार पूछा। मगर उन्होंने कोई जवाब दिया नहीं और उसके

वाल्मीकि के





मानस में यहीं था कि मैं अपने गुरु को तनाव रहित करूँ। राम को तनाव रहित रखूँ, यह मेरा धर्म है यह मेरा कर्तव्य है, यह मेरे जीवन का चिंतन है। तभी उन्होंने देखा कि राम सीता को देख करके किंचित मुस्कुराए उनके ललाट पर सिन्दूर की रेखा थी, सौभाग्य की रेखा थी। आज तुम्हारे सिन्दूर की रेखा, सौभाग्य की रेखा बड़ी सुन्दर चमक रही है सीता ने कहा कि आप हैं यह तो मेरे सौभाग्य का प्रतीक है और इस वार्तालाप में शायद एक सैकेण्ड रहा होगा, राम मुस्कुराए होंगे और सीता की तरफ देखा होगा। हनुमान ने सोचा कि आज पहली बार पांच दिन बाद एक छोटी सी मुस्कुराहट आई है राम के। मगर मुझे इसे स्थाई भाव देना होगा किसी भी प्रकार से। राम तो बड़े हंसमुख थे, हास्य-प्रिय थे, विनोद प्रिय थे और यदि ये मुझ्मा गये तो मेरा जीवन अपने आप में व्यर्थ हो जायेगा। क्योंकि मैंने अपना जीवन उन्हें समर्पित कर दिया है। मैंने उन वानर सेनाओं को छोड़ दिया, सुग्रीव को छोड़ दिया, बाली को छोड़ दिया, अपना घर छोड़ दिया, पुत्र छोड़ दिया। उनके पुत्र का नाम मकरध्वज था।

हनुमान जी ने सोचा कि आज राम क्षणिक मुस्कुराए, दूसरे दिन हनुमान जी ने अपने पूरे शरीर पर सिन्दूर मल लिया। क्योंकि हनुमान ने सोच लिया कि सिन्दूर को देख कर राम ज्यादा खुश होते हैं क्योंकि मांग में थोड़ा सा सिन्दूर और एक क्षण के लिये मुस्कुराए तो क्यों नहीं मैं अपने पूरे शरीर को ही सिन्दूर में पोत

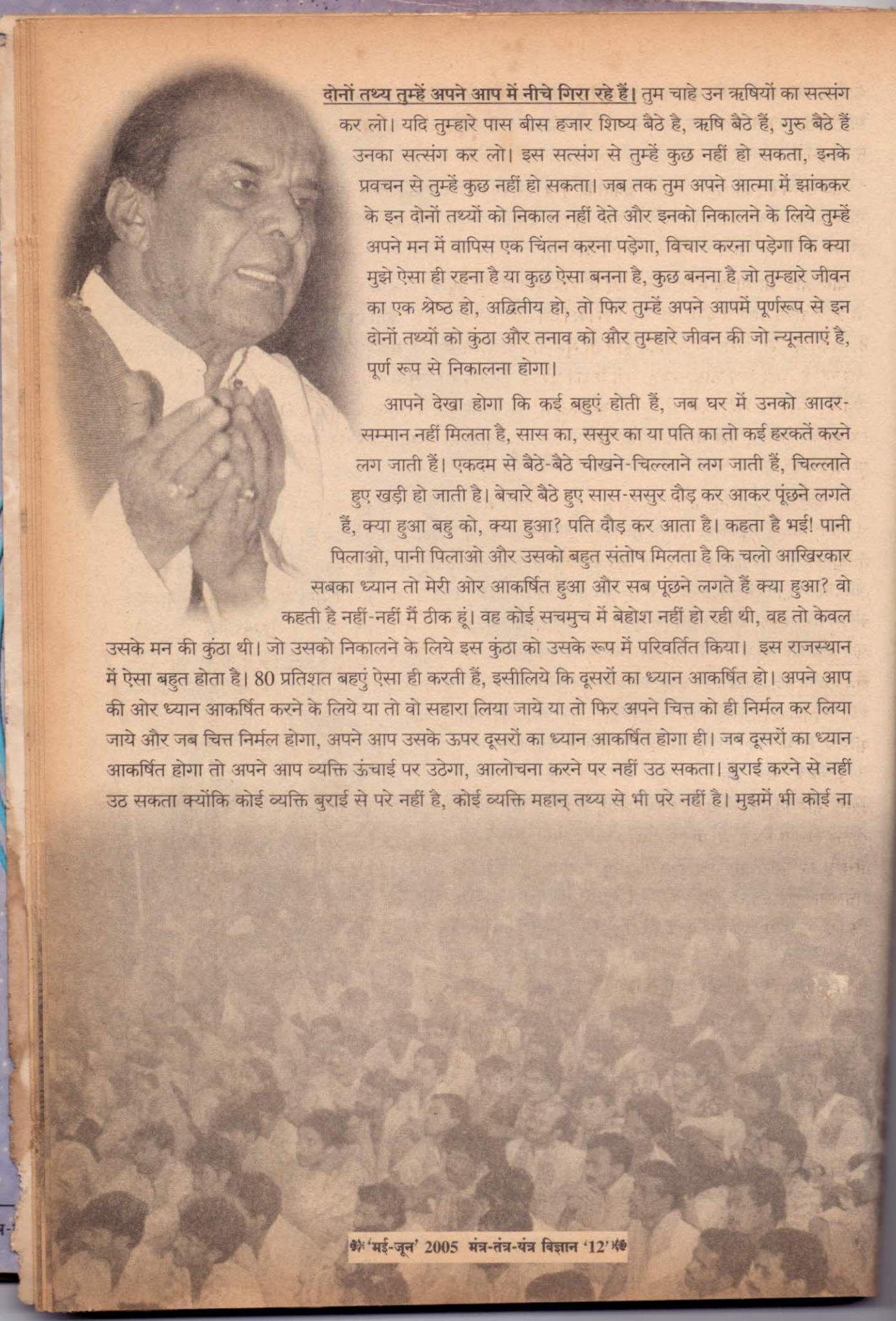
देखा

दूं और सिन्दूर से शरीर को पोत कर राम के आगे आकर खड़े हो गये और राम जोर-जोर से खिलखिलाकर हंस पड़े, कहा कि तुने आज यह क्या किया? उसने कहा - कि महाराज आप जिस चीज से खुश होते हैं उसी चीज को मैं करूं, जिस ढंग से भी आप खुश हो, सिन्दूर पोतना मेरे लिये कोई बड़ी बात नहीं। आप सिन्दूर देख कर खुश हुए इसीलिये मैं अब पूरे शरीर पर सिन्दूर लगाकर ही आपके सामने खड़ा रहूँगा। उस दिन के बाद हनुमान को सिन्दूर लगाना शुरू किया। उसके पहले हनुमान जी को सिन्दूर लगाना नहीं शुरू किया गया था। आज हम आप सिन्दूर लगाते हैं, मगर वह उनकी क्रिया थी। उनके मानस में सिर्फ यही था कि जो मेरा स्वामी है, गुरु है वह प्रसन्न हो। चाहे उसके लिये मुझे कुछ भी, कैसा भी रूप बनाना पड़े, कैसा भी कार्य करना पड़े। इन सारे प्रसंगों को लेकर के, करीब-करीब इस प्रकार की भावनाओं को लेकर के मकरध्वज ने गीता लिखी और गीता में यह श्लोक लिखा -

जीवनं सदैवं महित्वं प्रणत्वां पूर्णभ्वान्,
पूर्णमदैवं तुल्यं पशुत्वं चैवं नरादध्वं सहिष्णौ
गुरुं पूर्णमदैवं तुल्यं।

अष्टावक्र ने कहा कि - जनक तुम योद्धा राजा तो हो, मगर गये बीते राजा हो। इतने दम-खम के साथ बोलना, वह बोल सकता था जिसके हृदय में आत्मज्ञान होता था ताकत होती थी। इसीलिये गये बीते हो तुम कि तुममें वह चेतना नहीं आ पाई, वह उच्कोटि का ज्ञान नहीं आ पाया और इसीलिये तुम्हारे जीवन में वितृष्णा रही, तुम्हारे पुत्र हुआ नहीं और पुत्र हुआ नहीं इसीलिये वितृष्णा से तुम अपने आप में कुंठित हो गये और वह कुंठा तुम्हारे, कभी कभी तुम्हारे अंदर हिलोरे पैदा होती है और किसी को पीड़ित करके तुम बहुत खुश होते हो। जब कोई तुम्हारे शब्दों के धाव से, बातों से पीड़ित होता है तो तुम्हारे मन में प्रसन्नता होती है कि मैंने इसको पीड़ा दी। वह पीड़ा तुम्हारी खुद की है। तुम्हारे जीवन में कमी थी, एक न्यूनता थी और उस न्यूनता को दूर करने के लिये दूसरा सहारा लिया गया। उसने कहा - इसीलिये जनक तुम महान् नहीं कहला सकते। इसीलिये भी तुम महान् नहीं कहला सकते कि तुम राजा हो। तुम तब महान् कहलाओंगे जब तुम सही अर्थों में शिष्य बन सकोगे। तुम सही अर्थों में इस बात को समझ सकोगे कि मेरे जीवन का उद्देश्य शिष्य बनना है, महान् बनना है, उच्कोटि का बनना है। तुम्हें अपनी पूरी आत्मा को, पूरे चित्त को, पूरे मन को अपने आप में चैंज करना पड़ेगा। धोती पहनने से, कुर्ता पहनने से चैंज नहीं हो सकता, अन्दर से जब तक तुम चैंज नहीं होगे और तुम अन्दर से इसीलिये चैंज नहीं हो रहे हो क्योंकि तुम्हारे अन्दर एक गर्व है, तुम्हारे अन्दर कूंठा है। ये





दोनों तथ्य तुम्हें अपने आप में नीचे गिरा रहे हैं। तुम चाहे उन क्रषियों का सत्संग कर लो। यदि तुम्हारे पास बीस हजार शिष्य बैठे हैं, क्रषि बैठे हैं, गुरु बैठे हैं उनका सत्संग कर लो। इस सत्संग से तुम्हें कुछ नहीं हो सकता, इनके प्रवचन से तुम्हें कुछ नहीं हो सकता। जब तक तुम अपने आत्मा में झांककर के इन दोनों तथ्यों को निकाल नहीं देते और इनको निकालने के लिये तुम्हें अपने मन में वापिस एक चिंतन करना पड़ेगा, विचार करना पड़ेगा कि क्या मुझे ऐसा ही रहना है या कुछ ऐसा बनना है, कुछ बनना है जो तुम्हारे जीवन का एक श्रेष्ठ हो, अद्वितीय हो, तो फिर तुम्हें अपने आपमें पूर्णरूप से इन दोनों तथ्यों को कुंठा और तनाव को और तुम्हारे जीवन की जो न्यूनताएं हैं, पूर्ण रूप से निकालना होगा।

आपने देखा होगा कि कई बहुएं होती हैं, जब घर में उनको आदर-सम्मान नहीं मिलता है, सास का, ससुर का या पति का तो कई हरकतें करने लग जाती हैं। एकदम से बैठे-बैठे चीखने-चिल्लाने लग जाती हैं, चिल्लाते हुए खड़ी हो जाती है। बेचारे बैठे हुए सास-ससुर दौड़ कर आकर पूँछने लगते हैं, क्या हुआ बहु को, क्या हुआ? पति दौड़ कर आता है। कहता है भई! पानी पिलाओ, पानी पिलाओ और उसको बहुत संतोष मिलता है कि चलो आखिरकार सबका ध्यान तो मेरी ओर आकर्षित हुआ और सब पूँछने लगते हैं क्या हुआ? वो कहती है नहीं-नहीं मैं ठीक हूं। वह कोई सचमुच में बेहोश नहीं हो रही थी, वह तो केवल उसके मन की कुंठा थी। जो उसको निकालने के लिये इस कुंठा को उसके रूप में परिवर्तित किया। इस राजस्थान में ऐसा बहुत होता है। 80 प्रतिशत बहुएं ऐसा ही करती हैं, इसीलिये कि दूसरों का ध्यान आकर्षित हो। अपने आप की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिये या तो वो सहारा लिया जाये या तो फिर अपने चित्त को ही निर्मल कर लिया जाये और जब चित्त निर्मल होगा, अपने आप उसके ऊपर दूसरों का ध्यान आकर्षित होगा ही। जब दूसरों का ध्यान आकर्षित होगा तो अपने आप व्यक्ति ऊँचाई पर उठेगा, आलोचना करने पर नहीं उठ सकता। बुराई करने से नहीं उठ सकता क्योंकि कोई व्यक्ति बुराई से परे नहीं है, कोई व्यक्ति महान् तथ्य से भी परे नहीं है। मुझमें भी कोई ना

कोई दो-चार कमियां हो सकती हैं, राम में भी हो सकती हैं, कृष्ण में भी हो सकती हैं। देखना यह है कि बैलेंस क्या है? 50-50 का बैलेंस है या 80-20 का बैलेंस है। 80 प्रतिशत धूर्ता है, चालाकी है और बीस प्रतिशत बिल्कुल मन साफ है, वह बदमाश है।

यदि उसमें 60 प्रतिशत चोरी की प्रवृत्ति है, पुष्प चुराकर के जेब में रख दिया, मिठाई चुराकर खा ली या कोई और चीज बाहर जा कर या नमकीन खा लिया तो हम चोर हैं। उसके लिये कोई ठप्पा नहीं लगा हुआ कि तुम चोर हो। उसका मन अपने आप में यह कहेगा कि चोर है।

यदि आप आत्मा के कश में ढूबे हुए हैं, सोनकश में ढूबे हुए हैं। गुरु के ध्यान में हनुमान की तरह ढूबे हुए हैं तो आप अपने आप में परम शिष्य हैं। इसके लिये कोई तराजू नहीं है, कोई मापदंड नहीं है। आप कितने समर्पित हैं, अपने मन से, शरीर से समर्पित होते ही गुरु तो समझ जायेगा कि यह शरीर से समर्पित हो रहा है। गुरु-गुरु कह रहा है, मुझे हाथ जोड़ रहा है, मुझे केवल प्रणाम कर रहा है। उस प्रणाम से वे गुरु खुश हो सकते हैं जो गुरु नहीं हैं। मगर जो सही अर्थों में गुरु है, वह देखेगा, वह उसके मन में चिंतन करेगा कि ठीक है, यह अपने आप में नाटक कर रहा है, मुझे भी नाटक करना है - कि आशीर्वाद और तुम ठीक रहो। मगर वह जुड़ने की क्रिया नहीं हो पायेगी।

यह कह रहा है अष्टाब्रक कि 'जनक तुम गुरु से जुड़ नहीं सकते, क्योंकि तुम्हारे जीवन में गुरु है ही नहीं। तुम्हारे जीवन में तनखाह देने वाले साधु-संन्यासी, ऋषि हैं। जो तनखाह लेकर जीवन यापन करते हैं वह ब्राह्मण हैं और जो तनखाह लेकर के काम करता है वह नौकर कहलाता है। वो शिष्य नहीं कहला सकता।' वह कैसे शिष्य कहलायेगा, एक नौकर को तुम उनको पैसा दे दो, तनखाह दे दो, रोटियां दे दो वे तुम्हारे गुण-गान करेंगे। तुम्हारी बुराई कैसे करेंगे, जो तुम्हारी बुराई करेंगे तुम उसको हटा दोगे और दूसरे लोग, तुम्हारी बुराई करने से घबरायेंगे। गुरु धारण करो और जो अपने आप में तुम्हारी कुंठा है, जो अहम है, उस कुंठा को और अहम को तुम समाप्त कर दो और जिस दिन तुम ऐसा कर सकोंगे, उस दिन तुम सही अर्थों में शिष्य बन सकोंगे। क्योंकि गुरु और शिष्य में केवल दो विकार होते हैं तीसरा तो कोई विकार होता ही नहीं। वह विकार चाहे उनके परिवार से आया है, उनके समाज से आया है, चाहे घर

से आया है, चाहे बाहर से आया है। वह विकार आया और विकार से वह आदमी अधम बना रहेगा। दो-सौ साल भी, पांच सौ साल भी, पांच हजार साल भी जब तक यह नहीं पिघलेगा और यह यूं पिघलता भी नहीं। एक क्षण के लिये पिघलता है, दूसरे क्षण में वापिस वैसे के वैसे हो जाता है। जब तक वह पूर्ण रूप से स्थाई भाव नहीं पिघलेगा, अपने आप में पूर्ण रूप से आप समर्पित नहीं हो सकते। यदि मैं अपने आप में समर्पित शिष्य नहीं बन सकता तो फिर मुझे शिष्य कहलाने का हक ही नहीं है। फिर मैं शिष्य नहीं बन सकता।

इसलिये अष्टावक्र कह रहे हैं कि - जीवन का हेतु
 ऊचा उठना है ऊचे उठ रहा हूँ कि नीचे गिर रहा हूँ? और
 अगर जहां हैं वहीं खड़े हैं तो आप एक सामन्य पुरुष हैं।
 जैसे सड़क पर चलते हुए लोग, जैसे एक परिवार के
 पढ़ोस के लोग। यदि आप नीचे गिर रहे हैं तो आप
 अधम हैं और इनकी कोई गिनती नहीं होती। यदि आप
 मैं नीचे से उठने की क्रिया है, निरन्तर अपने आप
 मैं पिघलाने की क्रिया है। यह देखने की
 क्रिया है कि कल से आप कितना
 मधुरता के साथ ओत-प्रोत हैं
 कि मैं कितने तहे दिल से
 अपने गुरु भाईयों के साथ,
 गुरुजी के साथ जुड़ा हुआ
 हूँ। इस प्रकार से जुड़ा
 हुआ हूँ। कितना मेरे
 अन्दर छल रहा है,
 कितना मेरे अन्दर
 कपट रहा है, कितना
 झूठ बोलना, मैं अभी
 झूठ भी बोल सकता
 हूँ तुम्हारे सामने मैं
 कर सकता हूँ ऐसा
 और तुम्हें पता भी नहीं
 चले की मैंने बटन
 दबाया की नहीं दबाया।
 मगर मैं सोचता हूँ कि मैंने
 छल किया। मैं कह सकता हूँ
 कि आखिरकार मैं यह नहीं कर
 सकता, ज्यादा देर तक मैं प्रवचन नहीं
 कर सकता, यह मेरा सत्य है और यह असत्य
 मुझे नीचे की ओर ही अग्रसर करेगा। यदि असत्य बोलूँगा
 तो वो कभी मुझे सत्त्वरित नहीं बना सकता। कभी मैं
 सीना तान के खड़ा नहीं हो सकता और ना ही मेरे चेहरे
 पर मुस्कान आ सकती है। कभी मैं हास्य नहीं कर सकता।
 कभी जीवन में बड़प्पन नहीं आ सकता मुझे गर्व नहीं हो
 सकता। अपने आपको समझना, जनक ये तुम्हारा धर्म
 है, तुम्हारा कर्तव्य है। तुम समझ सकते हो कि तुम कहां

पर हो। तुम समझ सकते हो कि बड़प्पन से कहां पर हो,
 किस प्रकार का बड़प्पन है?, क्या है तुम्हारे पास? ये
 राजपाट तो रावण के पास तुमसे ज्यादा ऊचा था और
 तुम अपने ही राजपाट की प्रसंशा कर रहे हो। तुम्हारे
 पास कुछ रानियां हैं, कृष्ण के पास तो सोलह हजार
 रानियां थीं और तुम इस सब पर गर्व कर रहे हों। तुम से
 ज्यादा हीरे मोतियों से रावण ने सोने की लंका बना
 दी थी ईट, पथर तक सोने के बना दिये
 थे, मकान के मकान सोने के बना दिये,
 पूरी लंका सोने की बना दी एक
 घर के नहीं। तुम किस जगह
 खड़े हो, है क्या तुम्हारे
 पास? और ये जो तुम्हारा
 शरीर है वह उन दोनों तत्वों
 से भरा हुआ है। तुम मुझ
 से भी अधम हो, तुम
 अधम से भी अधम हो
 उस सिंहासन पर बैठने
 के तुम अधिकारी नहीं
 हो, गये बीते हो, क्लीब
 हो तुम और एक बहुत
 बड़ा झटका लगा जनक
 को। उसने पहली बार
 देखा कि एक तेजस्वी
 आखें जो दो टूक शब्दों में
 मुझे कह रही हैं, जो बीस हजार
 पंडित मैंने बैठा रखे हैं उन्होंने कहने
 की हिम्मत नहीं की, उसने कहा कि -
 मैं तुम्हारे टुकड़ों पर नहीं पल रहा हूँ, मैं
 तुम्हारा इस तरह से गुरु भी नहीं बनना चाह रहा हूँ।
 मैं तो सभा में सिंफ इसलिये आया हूँ कि तुम बहुत गये
 बीते आदमी हो ये बताने के लिये आया हूँ। तुम्हारी
 आखें खोलने के लिये आया हूँ, ये बताने आया हूँ कि
 तुम चमार हो, तुम मेरी चमड़ी को देख कर अपने आप में
 हंस रहे थे, मुस्कुरा रहे थे क्योंकि मैं आठ जगह से टेढ़ा
 हूँ। यह मेरी चमड़ी टेढ़ी है मैं टेढ़ा नहीं हूँ, मेरा ज्ञान टेढ़ा
 नहीं है। तुम्हें मेरे ज्ञान से गुरुत्व प्राप्त करना है और जब

तक तुम्हारे मानस में यह अहम्, यह छल और यह कुंठा
यह तीन तत्व ऐसे हैं तो शिष्य को नीचे गिरा सकते हैं। वह समझता
है कि मैं होशियार हूँ, दूर से इसे पता नहीं चलता। तुम
पांच रुपये चुराओं अगर नहीं मालूम पड़ेगा दूसरों को
मगर यह तुम नहीं समझ रहे हो कि मैं इससे कितना
नीचे गिर गया हूँ। तुम नहीं समझ पा रहे हो, इस समय
नहीं समझ पा रहे हो। उतने ही तुम गये बीते रहे जितना
एक नाली का कीड़ा रहा, ऐसी दुर्गंधि में रहे जिस दुर्गंधि में
लोग रहते हैं और जो लोग दुर्गंधि में रहना सीख जाते हैं,
जो चोरी, छल, झूठ और कुंठों में रहना सीख जाते हैं
उन्हें उसमें आने के लिये बहुत जोर लगाना पड़ता है।
अपने आप के मन को मंथन

करना पड़ता है, तोड़ना

पड़ता है अपने आप
को और वह तब

दूटे गा वह

अहम् अन्दर

का वह छल,

वह कुंठा

दूटे गी तब

वापस उसे

जोड़ पाओगे।

वह दूटे गी नहीं

क्योंकि वह दूटे गी

इसलिये नहीं, क्योंकि वह

कई जन्मों से तुम्हारे साथ जुड़ी हुई

है।

बम्बई में एक सेठ थे उनको कोई मछुवारन पसन्द आ
गई। वह घुमने निकले थे, वह मछुवारन बहुत सुन्दर थी
और मछलियां बेच रही थी और आप वहां मछलियों के
बाजार से निकलेंगे तो नाक पर एक रुमाल रख कर
निकलेंगे क्योंकि मरी हुई मछलियों की दुर्गंधि आती है।
आप सीधे तरीके से उस गली के पार नहीं निकल सकते।
वह मछुवारन मछलियों को पकड़ती हैं, टोकरी में डालती
है और बेच कर आ जाती है होटलों में जाकर के। सेठ
जी ने उसको दो हजार में खरीद लिया और घर ले आये।

घर लाकर उसको स्नान करवाया और महलों में उसे
रख दिया। उसकी एक बहन थी साल भर बाद उसकी
बहन को याद आया कि उसकी एक बहन थी। वह मछुवारन
वह सेठ जी के घर में है। जूह पर आज उसे मिल कर आ
जाऊं। एक साल से गई नहीं थी। वह भी मछुवारन थी,
उसने अपनी टोकरी मछलियों से भरी हुई होटल में बेची
अब खाली टोकरी लेकर चल दी। अब इस खाली टोकरी
को कहां फेंके। बहन आई और बहुत आराम से मिली,
शाम का समय था। छ:-सात बजे थे। उसकी बहन ने
कहा अब शाम को तुम कहां घाटकोपर जाओगी, रात को
यहां सो जाओं सुबह चली जाना और खाना आज साथ
में ही खा लेते हैं। एक साल भर बाद तो तुम मिली हो।

कुछ समय बातें भी करेंगे फिर
सो जायेंगे। बाहर छोटा सा

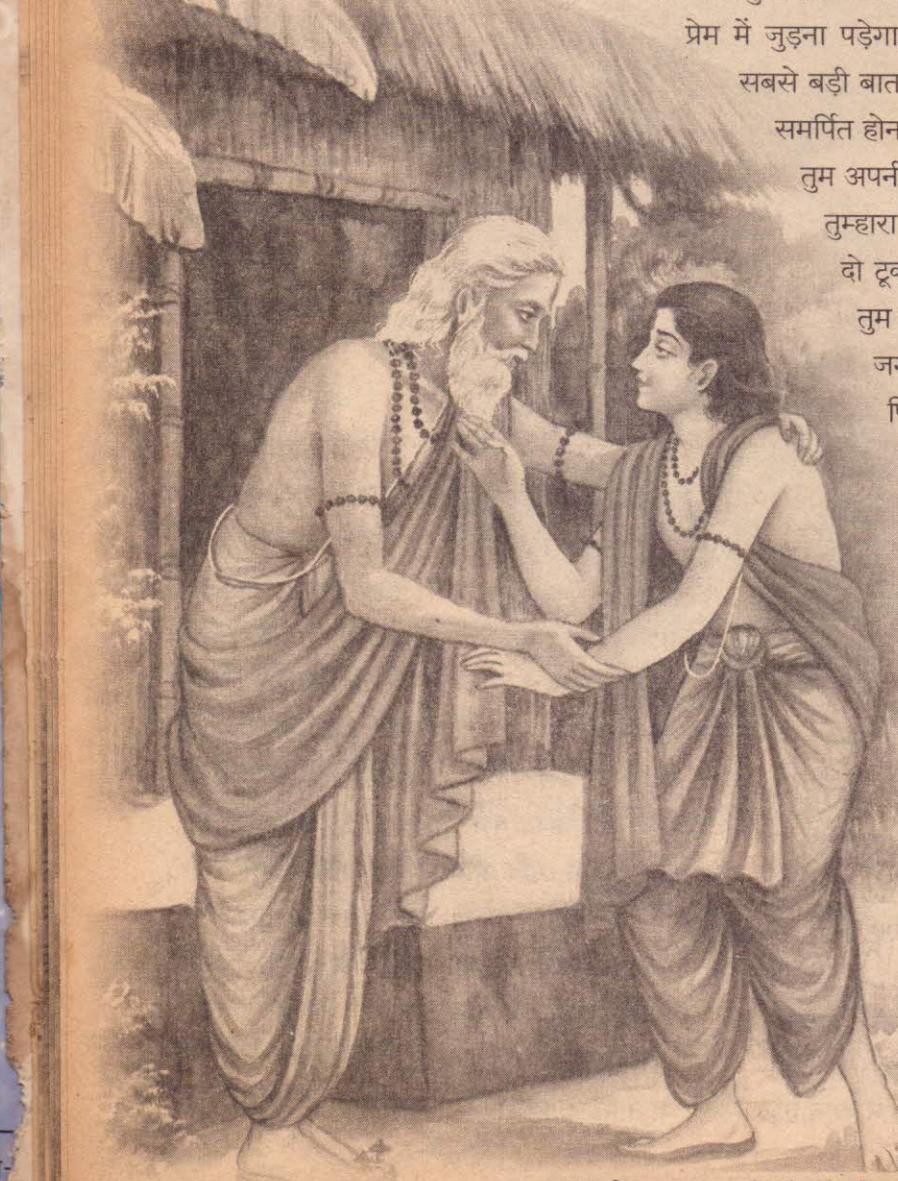
एक बगीचा लगा हुआ
था, बगीचे में रोज
सेठ और सेठानी
पलंग लगाते थे
और सो जाते
थे। बाहर की
शुद्ध हवा में,
वहां तीन पलंग
लगा दिये। एक
खुद के लिये, एक पति
के लिये और एक बहन
के लिये। पास में पंखे लगा दिये,

सो गये। दस बजे सोये, साढ़े दस - ज्यारह बजे
नींद आ गई। सेठ-सेठानी को भी नींद आ गई। मगर
उस मछुवारन को बहुत तड़प हुई, बहुत बैचेनी हुई,
झधर से उधर। इस करवट से इधर डोलें उधर डोले,
नींद आवे नहीं। बारह बज गये - साढ़े बाहर बज गये,
एक भी बज गया, नींद आवे ही नहीं पास में सुन्दर से
गुलाब के फूल खिले हुए थे। उस गुलाब से दुर्गंधि आ
रही थी ये क्यों लगा रखे हैं घर में पौधे। भगवान जाने
इन पौधों में इनको क्या मजा आता है। नींद ही नहीं आ
रही है, इन फूलों, पौधों की दुर्गंधि में। उसे अपनी टोकरी
की याद आई। टोकरी को ला कर सिर पर ओढ़ी और

टोकरी को औढ़ते ही फट से नींद आ गई। एक सेकण्ड में नींद आ गई और नींद आते ही खराटि भरने लगी। सुबह उठे तो देखा कि यह टोकरी ओढ़े हुए सोई है, आराम से मस्ती के साथ। उसने कहा कि तुम ये टोकरी ओढ़ कर क्यों सो रही हो? उसने कहा तुने दुर्गंध भरे पेड़, पौधे लगा दिये इस दुर्गंध में मुझे नींद कहां आती है। ये सब काहे के लिये लगा रखे हैं तूने? तुम अपनी जगह सही हो तुम्हारे अन्दर यह दुर्गंध है यह ओढ़ी हुई टोकरी है तब तक तुम बहुत आराम से यह नींद ले सकते हो। यह टोकरी निकालते ही दुर्गंध आने लगती है तुम्हें, क्योंकि गुलाब के फूलों की सुगन्ध देखी ही नहीं है तुमने और जब यह कुंठा जब यह तुम्हारा यह तनाव, अहम् और तुम्हारा यह छल, छल को पकड़ने के लिये कोई तरकीब नहीं हैं, झूठ को पकड़ने के लिये कोई मशीन बनी नहीं है। तुम्हारे कुंठाओं को पकड़ने के लिये कोई मशीन बनी नहीं है। कुंठाओं का मतलब है, तुम्हारी जो कुछ न्यूनताएं रहती हैं वह अपने आप में आदमी को डायवर्ट कर देती हैं, जिद्दी बना देती हैं, निर्लज्ज बना देती हैं। अमेरिकन औरतें जो होती हैं उनके पुत्र नहीं होते हैं, बच्चे नहीं होते। वह बहुत झण्डे की तरह होती है, बोलती है तो सीना फाड़ कर बोलती है एकदम से अपने ऊपर के कपड़े हटा देती है। क्या कर लेगी दुनियां? ये ले कपड़े हटा दिये। वह आकर्षित करना चाहती है कि तुम लोग मेरा क्या कर लोगो। यह कुंठा है उनके मानस में ऐसी सैकड़ों स्त्रियों रहती हैं, पुरुष होते हैं।

अगर जनक तुम्हें ऊंचा उठना है तो इन तीनों तत्वों से तुम्हें हटना होगा।

प्रेम में जुड़ना पड़ेगा, एक दूसरे से समर्पित होना पड़ेगा और सबसे बड़ी बात यह सब छोड़कर के तुम्हें गुरु के चरणों में समर्पित होना पड़ेगा। यदि तुम समर्पित हो सकते हो तब तुम अपनी जगह ठीक हो। मैं अपनी जगह ठीक हूं। मैं तुम्हारा गुरु बनने के लिये नहीं आया हूं, मैं तो तुम्हें दो टूक कहने आया हूं। यह क्षण है इस समय में तुम समझ जाओगे। नहीं समझोगे तो तुम अपनी जगह, मैं अपनी जगह। मैं अपनी कुटिया में फिर से चला जाऊंगा। मैं तुम्हारी रोटियां खाता नहीं हूं, मैं तुम्हारे भरोसे जिन्दा नहीं हूं। मुझे तुम्हारे राज्य की भी जखरत नहीं हैं। तुम्हारा राज्य, जनक राजा अपने पास रखो मैं किसी और राज्य में जाकर रह जाऊंगा और जनक उसी समय वहां से उठा और पहली बार उसके मन से वह कुंठा, छल और वह झूठ तीनों एक दम से पिघले और पिछलते ही पूरा चेहरा और दाढ़ी आसूओं से भीग गई और सेनापति व मंत्री और वह बीस हजार ब्राह्मण और भरी सभा के सामने वह साष्टांग चरणों में झुक करके हिचकियां लेने लगा। अष्टाव्रक ने उठाया और कहा कि - आज पहली बार तुम्हें मैं मनुष्य देख रहा हूं। पहली बार देख रहा हूं कि



एक तुम सही रास्ते पर दो-चार कदम चले। अब इस पगड़ंडी को
 तुम पकड़े रखोगे तो निश्चित ही पीढ़ियां तुम्हें याद रखेंगी और
 नहीं पकड़ पाओगे तो उसी तरह मिट जाओगे जैसे समय
 और काल लोगों को मिटा देता है। तुम्हारे जीवन का
 प्रत्येक क्षण, यही क्षण था इस क्षण में अगर तुम नहीं
 पिछलते तो तुम पिछलते ही नहीं। अपने आप को
 नहीं बदलते तो नहीं बदल सकते। तुम्हारा अहम
 रहता कि मैं राजा हूं सीना तान कर बैठा हूं, एक
 छोटे से आदमी के सामने मैं क्यों झुकूं। तो तुम
 बिल्कुल मिट जाते। क्योंकि तुम्हारा अहम तुम्हें
 समाप्त कर देता। तुम्हारे चेहरे पर झुरियां पड़
 जातीं और अपने आप में बीमार, असत्य,
 असहाय, अपाहिज होकर के तुम मृत्यु को
 प्राप्त हो जाते। जनक नहीं कहलाते, विदेह नहीं
 कहलाते, ऋषि जनक नहीं कहलाते, एक राजा
 जरूर कहलाते और ऐसे राजा तुम्हारे से पहले
 पचास हजार हो चुके हैं। यह कोई खास बात
 नहीं और तुम्हारे बाद पचास हजार हो जायेग।
 इतिहास उन्हें मधुरता के साथ नहीं याद करेगा और
 उसके बाद उसने कहा आज से मैं तुम्हें जनक नहीं कहता हूं
 विदेह कहता हूं और विदेह बनकर जीवित रहने की क्रिया के
 लिये।

यह उसी चारों पक्कियों को मैं तुम्हारे सामने वापिस बता रहा हूं कि तुम्हारे मन में वह तीनों चीजें हैं मैं नहीं कह सकता कि कब मिटेगी, नहीं मिटे तो मुझे तो कोई अफसोस नहीं। झूठ, छल और दूसरों को मूर्ख बनाने की कला, असत्य बोलने की कला नहीं मिटी तो वह तुम्हारी पूंजी है तुम्हारे पास ही रहे मुझे उसमें कोई आपत्ति नहीं। मिट जाये तो यह मेरा सौभाग्य होगा कि मेरा परिश्रम कुछ सार्थक हो रहा है और मिटने के लिये तो यही क्षण चाहिए। फिर अगला क्षण नहीं आयेगा, मिट जायेगा तो इसी क्षण मिट जायेगा, नहीं मिटेगा तो हजार साल भी नहीं मिटेगा। हो सकता है कि दो घंटे बाद वापिस तुम्हें व्याप्त हो जाये। कसम दीजिये कि तुम्हारे जैसा अधम व्यक्ति कोई और नहीं है, यह मन में ही ठान लीजिये कि मेरा जैसा झूठ, मक्कार कोई और व्यक्ति नहीं है। ऊपर से मैं सफेद कुर्ता, पाजमा पहना हुआ हूं। अन्दर से मक्कार, छल भरा हुआ है, झूठ भरा हुआ है, मूर्ख बनाने की कला भरी हुई है और कोई किसी से मूर्ख नहीं बनता, कोई किसी के छल और झांसे में आता नहीं है। जानबूझ कर आता है वो अलग बात है, तुम जिस गुरु को ही झूठ बनाने की कोशिश करोगे तो आप खुद सोच लो कि तुम किस जगह खड़े हो, अपने आप में कितने अधमता के साथ खड़े हो और वो फिर तुम्हारा प्रणाम करना, झुक करके प्रणाम करना और गुरु पूजा करना अपने आप में बेमानी हो जायेगा। कोई अर्थ नहीं रहेगा और यही अगर अन्दर से उन तीनों तत्वों को निकाल कर के पूर्णता के साथ एक-दूसरे की प्रसन्नता के साथ मिल सकोगे, मुस्कुरा करके, बात कर सकोगे, समर्पित हो सकोगे गुरु के प्रति। उस कार्य को सम्पन्न कर सकोगे जो एक उच्च कोटि का कार्य है और तुम्हारे जीवन की सार्थकता यहीं पर है और यदि ऐसा नहीं है तो अपने आप में बहुत घटिया और बहुत निम्न हो और घटिया शब्द तुम्हें इसलिये नहीं

लगा रहा हूं कि मुझे अच्छा लग रहा है। मगर मैं तुम्हें यह भी नहीं कह रहा हूं कि तुममें छल है, झूठ है, तुममें अहंकार है, मुख्य बनाने की कला है, मुझको भी मूर्ख बनाने की कला तुम्हारे पास है और मैं जानबूझ कर मूर्ख बना रहता हूं। इसलिये नहीं कि मैं मूर्ख बनता हूं, इसलिये तुम्हारे अहम् कि तुष्टि होती है तो होने दीजिये क्योंकि तुम पशु हो और तुम पशु बने रहो मुझे क्या आपसि। मेरा जीवन में ज्यादा कुछ नहीं। मैं तो शायद इस संसार में आज रहूंगा, बीस साल बाद नहीं रहूंगा। मगर तुम्हारे जीवन में यह क्षण वापिस नहीं आ पायेगा। सुबह उठे एक दूसरे से प्रेम से मिले, एक दूसरे के साथ हैलो-हैलो कहे या जय-गुरुदेव कहें, उनके साथ बैठे, उनके साथ भोजन करें, उनके प्रति समर्पित हो अपने मन से विकारों को निकालें। उच्च कोटि के योगी तुम बन सकोगे जो जनक भी नहीं बन पाये, राम भी नहीं बन पाये उससे भी उच्च कोटि के बन सकते हैं। कोई ठेका नहीं है राम का, राम ही बनेंगे, जनक ही बनेंगे। यह तो कोई भी बन सकता है और इस बनने के लिये ही जीवन की सार्थकता है अगर जीवन में सार्थकता बनानी है तो, और यदि मछुवारा ही बना रहना है तब भी आप अच्छे हैं। क्योंकि आप सौ रुपया तो कमा ही लेंगे मछलियां बेच के। तुम को तो गुलाब के पौधे अच्छे लगेंगे नहीं। आपको गुलाब के पौधे अच्छे नहीं लगे, नहीं लगे। मछलियां बेचते रहो, आपकी मर्जी। आप अहम् के साथ खड़े रहो तब भी आपकी इच्छा है और यदि आप यह सब जला कर के चरणों में झुकें तो यह आपका सौभाग्य है और यह मेरा भी सौभाग्य है और मेरा सौभाग्य बना रह सके। आप अपने जीवन में इसी क्षण बदल सकें और स्थाई भाव से बदल सकें तो बदलिये। फिर मैंने कहा झूठ और छल के साथ बदलिये। मक्कारी के साथ बदले और कार्य करने में शिथिलता बरते तो शरीर तो धिसता नहीं और अब यदि मैं आठ घंटे काम करूं तो शरीर तो उतना ही रहेगा और बीस घंटे काम करूं तो भी शरीर उतना ही रहेगा और बीस घंटे से ज्यादा भी करूं तो शरीर उतना ही रहेगा और बीस घंटे नहीं करूं तो भी उतना ही रहेगा और मैं आपको तो काम के लिये कहता भी नहीं हूं और तुम्हारे बिना मेरा जीवन आज से बीस साल पहले भी चल रहा था, उस वक्त तुम थे नहीं। और उस समय मेरे जीवन में किताबें लिखी जा रही थीं और उन किताबों से आज भी मेरी जीविका का उपार्जन चल रहा है। तुम्हारे भरोसे मैं जिन्दा नहीं हूं। मैं जिन्दा हूं अपने आत्मबल के द्वारा मैं किसी भी सङ्क पर खड़े होकर के प्रवचन कर दूंगा तो दो हजार रुपये कमा लूंगा। अगर रुपये ही कमाना मेरे जीवन का इष्ट प्रबल लक्ष्य होगा तो। यह मेरे इष्ट का लक्ष्य प्रारम्भ में ही नहीं था, आज भी नहीं है और उसके बाद भी जीवन में आसक्ति नहीं थी और आज भी नहीं है। इसलिये नहीं कि मुझमें बहुत अहम् बनने की आसक्ति रही है। मुझे अपने जीवन के बारे में ज्ञान है, मैं जानता हूं मैं किस जगह खड़ा हूं। मगर नहीं जान कर आदमी जितना सहज होता है। एक शीशा है अगर आप उसमें अपना मुँह देखेंगे तो आपको बिलकुल सरल साफ दिखाई देगा, अब आप बिलकुल शीशे को अपने नाक के सामने ला कर रख दें। तो आपका अपना चेहरा साफ नहीं दिखाई देगा। शीशा तो वही है एक फुट की दूरी पर रखा था तो आपको सब कुछ साफ-साफ दिखाई दे रहा था। ज्योंहि शीशे को नजदीक लाये



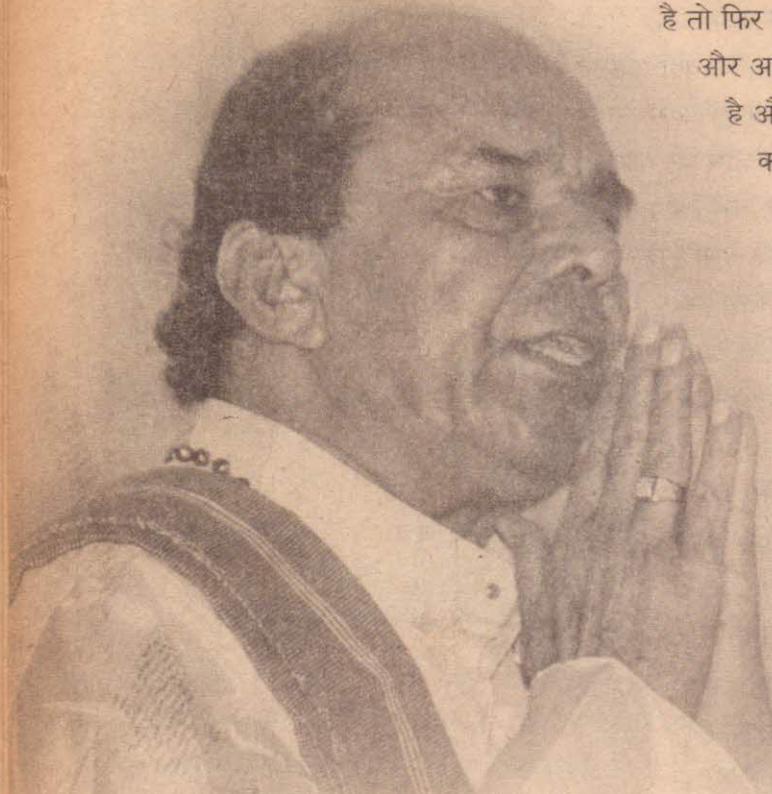
नाक के पास में आपका अपना चेहरा दिखाई देना बंद हो गया।
क्यों हो गया। ज्योंहि आप गुरु के पास चले गये, गुरु के प्रति
आपकी श्रद्धा ही कम हो गई। क्योंकि गेप नहीं रहा, शीशों और
आपके बीच गेप नहीं रहा। गेप नहीं रहा तो आप गुरु को
पहचान नहीं पाये। गेप रहे, दूरी रहे चौबीस घंटे में आधे घंटे
के लिये, अभी तक योगी, सन्न्यासी, ऋषि ऐसे ही मिलते हैं
और साढ़े तेईस घंटे अन्दर बैठे रहते हैं। आधे घण्टे आते हैं
और फिर वापिस अन्दर साढ़े तेईस घण्टे अन्दर बैठे रहते हैं।
फिर वापिस आधे घण्टे हो गया है अभी गुरुजी आ रहे हैं
अब जाकर दर्शन होंगे, भीड़ आती है गुरुदेव की जय हो
और फिर आधे घण्टे मिलते हैं।

ये नागपाल बाबा एक बार आते हैं मर्हीने में और एक
घण्टे के लिये मिलते हैं। ये नागपाल बाबा दिल्ली में मशहूर
हैं और वो ही अगर चौबीस घण्टे मिलते तो शायद इन्हीं
प्रसिद्धि नहीं पाते। मगर उसमें उसका खुद का तो हित है,
मगर शिष्य का हित नहीं है उसमें। शिष्य को वो कुछ नहीं
दे पायेगा। शिष्य को ऊंचाई पर नहीं उठा पायेगा। इसलिये
आप इस बात को ध्यान रखिये। अगर गुरुदेव मुझे तीन बार
मिले, चार बार मिले। मुझे यह ध्यान रखना चाहिये कि उनके
मेरे बीच में तीन फुट की दूरी रहे तो रहनी चाहिये बीच में। मैं कई बार समझाता

और
रहता हूँ। जब

कोई चार बार - छः बार आता रहता है और बताना चाहता है कि आपके लिये कितना काम करने वाला आदमी हूँ। आपका काम तो मुझे दिखाई दे रहा है इसलिये नहीं कि आप मिले नहीं। वह तो एहसास हो जायेगा, वह अपने आप
में दिखाई देने लग जायेगा। आप अपने आप में सुंगथ मय बने और जैसे आप हैं उससे ऊंचाई पर उठें। जब ऊंचाई
पर उठें, ऊंचाई का मतलब है मानसिक रूप से या एक दूसरे से प्रेम की भावनाएँ हो, समर्पण की भावना हो। एक
शिष्य का दूसरे से आत्मीय सम्बन्ध होगा, अगर मेरी जैव में डबल रोटी का टुकड़ा है तो मैं उसे बांट कर खाऊंगा।
उसका काम भी मैं छीन करके कर लूंगा और निरन्तर कार्य करते हुए, एहसास दिला दूंगा कि मुझमें कितनी क्षमता
है। मैं क्या हूँ? और अपनी लिमिट देख लेनी चाहिये कि कितनी लिमिट है मेरी काम करने की। और लिमिटेशन
आंक लेना अपने आप में उस जीवन का प्रारम्भिक बिन्दु है। हम मानें कि हम क्या हैं? कहां तक पहुंच सकते हैं?,
कितना परिश्रम कर सकते हैं?, कितना वर्किंग कर सकते हैं?, क्या कर सकते हैं? और कितना कर सकते हैं? तब
मन में एक संतोष होगा कि आज शाम को मैंने रोटी खाई है हक की खाई है। बईमानी की रोटी नहीं खाई, किसी के
हिस्से की नहीं खाई, गुरु के घर का अन्न खाया है। पाप का अन्न नहीं खाया है। मैंने पूरा परिश्रम किया है, गुरु से
ज्यादा परिश्रम किया है। चाहे मानसिक हो, चाहे शारीरिक हो और उसके बाद ही मैंने भोजन को स्वीकार किया है।

यह जब मन में एक ज्योति, एक पवित्रता, एक सुंगथ बनी रह सकेगी तभी जीवन का निर्माण हो सकेगा और
जीवन के निर्माण का आवश्यक बिन्दु न काम है, न क्रोध है, न लोभ है, न मोह है, न अंहकार है यह तो वृन्जियां हैं
चित्त की। धीरे-धीरे उस मन को मनायेंगे तो अपने आप यह सारी कम हो जायेगी। क्रोध तो पशु करते हैं, लोभ तो
पशु करते हैं, अंहकार तो पशु करते हैं, काम-वासना भी पशु में ही होती है। मनुष्य अपने आप में पूर्ण नियन्त्रित हो



सकता है और होता है। होता है तो फिर जीवन है और वही मनुष्य है तो फिर समर्पण है तो कि अज्ञात में है, ज्ञान है, चेतना है और अपने आपको आंख मिची प्रवृत्ति है। मेरे पास काम है और आपके पास काम नहीं है और आप यह काम कर रहे हैं, यह पूजा रूम है मैं साफ कर सकता हूं ऐसी कोई बात नहीं है। यदि आप करते हो तो मेरा काम हल्का हो जायेगा, मैं दूसरा काम करूंगा। ये जो एक दूसरे में जुड़ने की क्रिया है और जुड़ने की क्रिया के लिये कई बार अधिक कार्य करना पड़ता है, झुकना पड़ता है, लचीला बनना पड़ता है। जब गेंद आप जमीन पर मारोगे तो ऊपर की ओर उठेगी और जितनी जोर से मारोगे उतनी ही ऊंचाई की ओर वह उठेगी और जोर से मारोगे तो आठ फुट से ऊपर भी उठेगी। आप जितने ज्यादा काम में गतिशील होते जाओगे उतने ही ऊंचे उठते जाओगे और जो आपका काम है वह काम पूरे भारत वर्ष को आध्यात्मिक चेतना देने का काम है। वह छोटा काम नहीं है, आप वह काम छोटा समझें, आपको मालूम नहीं आपकी लिखी हुई पुस्तक को कुंकुम

लगाते हैं, पुष्प चढ़ाते हैं, पूजा करते हैं और पवित्र स्थान पर रखते हैं उसको। लोग रोज उसको आंखों पर लगाते हैं। आपके लिये ये कागज के टुकड़े हैं उनके लिये तो ईश्वर है। लोग इस किताब को देखते हैं और देख कर अपने आप में चेतना पैदा करते हैं। लोग इन सभी कैसेटों को सुनते हैं, उनकी मनोवृत्तियों में परिवर्तन आता है। लोग शिविरों में आते हैं, लोगों की संख्या बढ़ी है, लोग जुड़ रहे हैं। केवल एक झलक देखने के लिए तरसते हैं, यहां पर आने के बाद भी सौ रुपये देने के बाद भी वो ये चाहते हैं, वो मिनट मिलें, यह सब क्या है। यह आपके द्वारा फैलाई गई एक चेतना है, एक रोशनी है, यह यहां से नागालैंड तक गई है, यह यहां से कश्मीर तक भी गई है। यह आपका छोटा सा कार्य नहीं है, आपने उसको छोटा सा कार्य समझा है, आपकी कैसेट ही कोई छोटी कैसेट नहीं है, आपका कागज का टुकड़ा कम्पोज हुआ है वह छोटी सी बात नहीं है। आपने हिसाब लिखा वह छोटी सी बात नहीं है। आपने पत्र का जवाब दिया वह छोटी बात नहीं है। यह पूरे भारतवर्ष को समेट कर चलने की क्रिया है और आप कितना बड़ा कार्य कर रहे हैं। कभी अपने-आप में जानना चाहिये, कि मैं क्या कर रहा हूं? क्या घर की एक झाड़ निकाल रहा हूं, क्या घर का काम कर रहा हूं, कि बीज बो रहा हूं जमीन में, कि बच्चे खाना खाये इतना काम कर रहा हूं या पूरे भारत वर्ष के लिये या केवल परिवार के लिये या केवल खुद के लिये यह सब कुछ आप आंक सकते हैं और ऐसा सौभाग्य बड़े तकदीर से या पुनर्जन्म के पुण्य से ही प्राप्त होता है। अन्यथा ऐसा प्रेम, ऐसा अटैचमेंट, ऐसा योग मेरे साथ, सम्बन्ध नहीं बन सकता, सम्भव नहीं है। ये हो ही नहीं सकता, जुड़ ही नहीं सकता। मेरे साथ जुड़ी हुई चीज अत्यधिक कठिन परिस्थिति में चलना पड़ेगा। तलवार पर चलना पड़ेगा। तब आप मेरे साथ जुड़ पाओगे। सीधे सरल भाषा में आप मेरे साथ नहीं जुड़ सकोंगे, सम्भव नहीं है। क्योंकि मैं उसी जगह पर खड़ा हूं जहां पर रास्ता

सीधा तलवार पर होकर ही आता है। यहां पैर लहूलहूहान होते हैं पर एक आनन्द की उपलब्धि है। अगर आपके हृदय से आनन्द का उद्वेग हो रहा है तो और यह उद्वेग आपके हृदय से हो क्योंकि वहां आनन्द, प्रेम और वह सम्बन्ध ये तीन वस्तु वर्णी हैं जिसके माध्यम से व्यक्ति छलांग लगा लेता है और अपने आप में अपने चेहरे पर एक आभा मंडल बन सकता है। आपको मालूम पड़े नहीं पड़े, पर आप जब दूसरों से बात करोगे, दूसरा एक क्षण में कन्वेश होगा। आप किसी को भी और बड़े से बड़े बिजनेस मैन के सामने खड़े रहोगे वो एकदम से आपके सामने सिर झुका कर चला जाता है। ये क्या है आपके चेहरे की तेजस्विता है क्योंकि आपके चेहरे को देखते ही वो आधा तो बिल्कुल ही निरुत्साह हो जाता है मान लेता है बात। आप अपने आप को जांचिये आप कहां खड़े हैं? और इससे और ऊंचाई पर आपको खड़ा होना है, उठना है और ऊंचाई पर उठने के लिये आपका कार्य अपने आप में इतना अधिक हो कि आप एहसास कर सकें कि मैं इतना भी अधिक कार्य करके दिखा सकता हूं, एक क्षण भी मेरा बेकार नहीं गया।

और शाम को सोते समय जब मालूम पड़ा, बेकार गया तो एक मन में ज्ञानि होनी चाहिये कि आपने एक क्षण गंवा दिया जो मैं दे सकता था। जब तक ऐसा नहीं होगा तब तक आप ऐसे ही पशु तुल्य जीवन में, चाहे आप यहां बैठे, चाहे मंदिर में बैठे, चाहे पूजा के दर में, चाहे भगवे कपड़े पहन कर साधक बन जाये वैसे ही रहेंगे। जहां वासना है, जहां छल है, जहां झूठ है, जहां कपट, जहां असत्य है और यदि आपके जीवन में इन सब स्थितियों से हटकर चित्त प्रवृत्तियों पर अंकुश लगकर मन में श्रद्धा, प्रेम, समर्पण का भाव उदय हो सके, कर्मशीलता का भाव उदय हो सके, तो जानिये आपका जीवन उर्ध्वर्गति में जा रहा है। आपकी हर स्थिति में मैं आपके साथ हूं और आपके जीवन के अंधकार को मिटाकर प्रकाशवान् बनाने के लिए तत्पर हूं, आइए आगे बढ़कर हाथ बढ़ाइए आपका।

- सदगुरुदेव स्वामी निखिलेश्वरानन्द परमहंस।

वार्षिक सदस्यता

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इससे प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर आप पार्देंगे अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

श्रीष्टानुषित छब्बी शुल्क घट्ट

यदि यह कहा जाए कि आज के आधुनिक नगरों में मनुष्य जो जीवन नी कहा है, उसमें भय और डब पूरी तरह को प्रभावी है, तो कोई गलत नहीं होगा। जीवन जितना गतिशील नहीं हुआ है, उसको भी कहीं अधिक जीवन अनुकूलित हो गया है। किस कामय क्या घट जाए कुछ कहा नहीं जा सकता। भावी ट्रैफिक गली बाइकों पर जाते यात्री हों, काकड़ों की बड़ी-बड़ी मक्कियों पर कार्य करने वाले कर्मचारी हों, बिजली का कार्य करने वाले भिक्ती हों, जबी का जीवन बिल्कुल अनुकूलित का हो गया है।

घब को बाहर भाया व्यक्ति जब तक घब वापस नहीं जा जाता, तब तक घब में जबी को चिनता बनी रहती है। इस यंत्र के प्रभाव को आपको इस चिनता का कमाल भिल भकता है, अकाल मृत्यु के योग को नियंत्रित किया जा सकता है, अनुकूलित को लगते जीवन की दैवी ऊर्जा का कर्वच दिया जा सकता है। यह यंत्र छोटे-बड़े, कठी-पुक्ष कभी के लिए कमान कर पर्ने लाभकारी है।

किसी रविवार को प्रातः 5.25 से 6.25 के मध्य इस यंत्र को अपने शरीर के प्रत्येक अंग से

‘उं लं क्षीं लं उं’ का उच्चारण करते हुए स्पर्श कराएं। फिर काले धागे में यंत्र डालकर गले में धारण करें।

एक माह बाद जल में विसर्जित करें।

पत्रिका की एक वर्षीय सदस्यता ग्रहण करने पर उपरोक्त यंत्र आप प्राप्त कर सकते हैं। अपनी मनोनुकूल इस यंत्र का नाम पोस्टकार्ड संख्या 4 पर लिखें दें। वी.पी.पी. द्वारा सामग्री आपको सुरक्षित भेज दी जाएगी तथा वी.पी. छूटने पर वर्ष पर्यन्त पत्रिका नियमित रूप से भेजी जाएगी।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी भी प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड नं. 4 स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।

Fill up and send post card no. 4 to us at :

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 195/- डाक खर्च अतिरिक्त - 45/- Annual Subscription 195/- + 45/- postage

स्टम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर 342001, (राजस्थान)

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg. High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India

फोन (Phone) -0291-2432209, 2433623 टेलीफौक्स (Telefax) - 0291-2432010



सूर्य परिवर्तन का क्या प्रभाव है?

क्या होता है जब सूर्य एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करता है?

इन्हीं ही वृषभान्तर

सूर्य लंगूलाचिता

पृथ्वी पर स्थित मनुष्य का सबसे अधिक सम्बन्ध सूर्य से है, पृथ्वी और सूर्य का सम्बन्ध, सूर्य और मनुष्य का सम्बन्ध, सूर्य और राशि का सम्बन्ध, इन्हीं गम्भीरतम् विषयों की विवेचना से युक्त प्रस्तुत है यह लेख...

भारतीय मनुष्यों ने पृथ्वी को माता धरणी, धरा, भूमि मृत्यु की स्थिति है, अर्थात् जहां सूर्य है वहां जीवन है और जहां इत्यादि नामों से सम्बोधित किया है और सूर्य को ग्रहणी, अंधकार है वहां मृत्यु है। दैनिक जीवन में शारीरिक क्रिया चक्र आदित्य, पिता इत्यादि नामों से सम्बोधित किया है। सूर्य और इस प्रकार से बना होता है कि सूर्योदय के साथ ही व्यक्ति के पृथ्वी का सम्बन्ध वैसा ही है जैसा एक बालक का अपने माता भीतर शक्तियां जाग्रत् होने लगती हैं और वह क्रियाशील हो और पिता से सम्बन्ध होता है। खगोलीय दृष्टि से भी सूर्य का जाता है। जैसे-जैसे सूर्य आकशमंडल में आगे बढ़ता है वैसे-प्रभाव हर समय पृथ्वी पर दृष्टिगोचर होता है। सूर्य के प्रकाश वैसे उसकी क्रियाशक्ति बढ़ती है और जैसे-जैसे वह अस्त के माध्यम से और धरती की उर्वरता से वृक्ष वनस्पति ही नहीं होने लगता है वैसे-वैसे उसकी क्रियाशक्ति मन्द होने लगती प्राणी भी जगत में चलायमान होते हैं। संतुलित व्यक्तित्व वही है। संभवतः इसीलिए दिन में शयन करना निषिद्ध माना गया कहा जा सकता है जिसके जीवन में सूर्य तत्व, पृथ्वी तत्व का है क्योंकि दिवस तो क्रियाशीलता का बोधक है। इस सामंजस्य सही रूप में हो। वेदोक्त गायत्री मंत्र 'ॐ भूर्भुवः क्रियाशीलता काल में भी निष्क्रिय होना अपनी दैहिक, वाचिक स्वः भर्गोदेवस्य श्रीमहि धियो योनः प्रयोदयात्' में और मानसिक शक्तियों को मन्द करना है।

यही प्रार्थना की गई है कि हे सूर्य देव! आप हमारे जीवन के अंधकार को दूर कर हमारा जीवन प्रकाशित करें।

सूर्य के बिना पृथ्वी पर जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। सूर्य कुछ काल के लिए रात्रि में अपनी किरणें पृथ्वी के एक विशेष भू भाग पर प्रकाशित नहीं करता है तो उस रात्रिकाल के समय मनुष्य आलस्य, निद्रा से युक्त हो जाता है तो उस ओर निद्रा का तात्पर्य है शरीर की शक्तियों का सुम हो जाना। शास्त्रकारों ने तो यहां तक कहा है कि निद्रा भी एक प्रकार से

योग्य पुरुष का लक्षण यही होता है कि वह सूर्योदय के साथ उठे और उसकी गति के अनुसार ही क्रियाशील हो जाए।

क्या कारण है कि सूर्योदय के साथ क्रिया हुआ कार्य सफल होता है? सूर्योदय के समय उसके कार्य करने की क्षमता अधिक रहती है, वह क्षमता सायंकाल होने के साथ-साथ क्षीण होने लगती है। जितना कार्य मनुष्य सूर्योदय से सूर्यस्त तक कर सकता है उतना कार्य सायंकाल या सूर्यस्त से पूरी रात्रि कार्य कर भी सूर्योदय तक नहीं कर सकता है।

इसका मूल कारण सूर्य और मनुष्य देह में स्थित सभी चक्रों का सीधा सम्बन्ध है और मनुष्य देह में ही सभी राशियां, ग्रह, नक्षत्र, तारामंडल स्थित हैं। जो ब्रह्माण्ड बाहर स्थित हैं वही ब्रह्माण्ड मनुष्य के भीतर भी स्थित है, सूर्य ही वह प्रधान ग्रह है जो इस बाह्य ब्रह्माण्ड और आंतरिक ब्रह्माण्ड में संतुलन बनाये रखता है। यदि कोई व्यक्ति दस दिन तक बंद अंधेरे कमरे में पड़ा रहे तो वह बीमार, पीला और आभाहीन हो जाता है। सूर्य चिकित्सा का सिद्धान्त भी इसी ज्ञान पर आधारित है कि हर स्थिति में मनुष्य को सूर्य की आवश्यकता रहती ही है।

ज्योतिष विज्ञान के अनुसार बारह राशियां हैं और प्रत्येक राशि की एक निश्चित स्थिति है। जन्म के समय जिस नक्षत्र में व्यक्ति का जन्म होता है उस राशि के अनुसार उसका नामकरण किया जाता है। यहां यह जानना आवश्यक है कि प्रत्येक राशि की स्थिति क्या है और प्रत्येक राशि में कौन-कौन से नक्षत्र स्थित हैं।

सम्पूर्ण आकाश मंडल को 360 अंशों में बाटा गया है जो कि 12 राशियों में विभक्त हैं। इस प्रकार 30 अंशों की एक राशि बनती है और प्रत्येक राशि का शरीर के विशेष अंगों पर प्रभाव पड़ता है। साथ ही प्रत्येक राशि के अन्तर्गत सवा दो नक्षत्र आते हैं। नक्षत्र, राशि और सूर्य का सम्बन्ध व्यक्ति के जीवन पर सर्वाधिक प्रभाव डालता है।

1. मेष - चू, चो, ला, ली, लू, ले, लो, आ
Aries (अश्विनी 4 भरणी 1 कृतिका 1)

यह विषम राशि कहलाती है इसका स्वामी मंगल है। इस पर सूर्य 30 दिन, 55 घंटा और 33 पल रहता है।

2. वृष - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वो
Taurus (कृतिका 3 राहिणी 4 मृगशिरा 2)

यह समराशि कहलाती है और इसका स्वामी शुक्र है। इस पर सूर्य 31 दिन 24 घंटा और 56 पल तक रहता है।

3. मिथुन - का, की, कु, घ, ड, छ, के, को, ह
Gemini (मृगशिरा 2 आद्रा 4 पुनर्वसु 3)

यह विषम राशि कहलाती है और इसका स्वामी बुध है। इस पर सूर्य 31 दिन, 37 घंटा और 32 पल रहता है।

4. कर्क - ही, हु, हे, हो, डा, डी, दू, डे, डो
Cancer (पुनर्वसु 1 पुष्य 4 आश्वेषा 4)

यह समराशि है। इसका स्वामी चन्द्र है तथा यह संजक है। इस पर सूर्य 31 दिन, 22 घंटा और 35 पल रहता है।

5. सिंह - मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे
Leo (मध्य 4 पूर्वाफाल्गुनी 4 उत्तराफाल्गुनी 1)

यह विषम राशि कहलाती है और इसका स्वामी सूर्य है। इस पर सूर्य 31 दिन 2 घंटा और 52 पल रहता है।

6. कन्या - टो, प्र, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो
Virgo (उत्तराफाल्गुनी 3 हस्त 4 चित्रा 2)

यह समराशि कहलाती है। इसका स्वामी बुध है। इस पर सूर्य 30 दिन, 29 घंटा और 4 पल रहता है।

7. तुला - रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते
Libra (चित्रा 2 स्वाति 4 विशाखा 3)

यह विषम राशि है और स्वामी शुक्र है। इस पर सूर्य 29 दिन, 27 घंटा तथा 25 पल रहता है।

8. वृश्चिक - तो ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू
Scorpio (विशाखा 1 अनुराधा 4 ज्येष्ठा 4)

यह समराशि है तथा इसका स्वामी मंगल है। इस पर सूर्य 29 दिन, 27 घंटा और 29 पल तक रहता है।

9. धनु - ये, यो, भ, भी, भू, ध, फ, ढ, भे
Sagittarius (मूल 4 पूर्वापाद 4 उत्तरापाद 1)

यह विषम राशि है तथा इसका स्वामी गुरु है। इस पर सूर्य 29 दिन 15 घंटा और 4 पल रहता है।

10. मकर - भो, जा, जी, र्खी, र्खू, र्खे, र्खो, न, नी
Capricorn (उत्तरापाद 3 श्रवण 4 धनिष्ठा 2)

यह समराशि है तथा इसका स्वामी शनि है। इस पर सूर्य 29 दिन, 24 घंटा तक रहता है।

11. कुम्भ - गु, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, द
Aquarius (धनिष्ठा 2 शतभिषा 4 पूर्वाभाद्रपद 3)

यह विषम राशि है तथा इसका स्वामी शनि है। इस पर सूर्य 29 दिन, 46 घंटा और 43 पल रहता है।

12. मीन - दी, दू, थ, झ, ज, दे, दो, चा, ची
Pisces (पूर्वा भाद्रपद 1 उत्तराभाद्र 4 रेवती 4)

यह समराशि है और इसका स्वामी गुरु है। इस पर सूर्य 30 दिन, 33 घंटा और 31 पल रहता है।

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि पृथ्वी जब सूर्य की प्रदक्षिणा करती है तो उसके साथ- साथ इन 12 राशियों और नक्षत्रों की क्या स्थिति रहती है। ग्रहों में प्रत्येक राशि का एक स्वामी ग्रह माना गया है जो कि निम्न विवरण से स्पष्ट है।

राशि-स्वामी:- मेष-मंगल, वृष-शुक्र, मिथुन-बुध, कर्क-चन्द्र, सिंह-सूर्य, कन्या-बुध, तुला-शुक्र, वृश्चिक-मंगल, धनु-

बृहस्पति, मकर-शनि, कुम्भ-शनि, मीन-बृहस्पति।

मूलतः सूर्य मेष राशि का स्वामी होते हुए भी पाश्चात्य सिद्धान्त के अनुसार पृथ्वी की परिक्रमा के कारण एक राशि पर एक महीने रहता है और 12 महीनों बाद पुनः उसी राशि पर आ जाता है। यही कारण है कि हर वर्ष मकर संक्रान्ति 14 जनवरी को ही आती है अर्थात् 14 जनवरी के दिन सूर्य धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश करता है। इस दिन तीर्थों पर स्थान करने तथा विशेष यात्रा करने का शुभ मुहूर्त माना जाता है।

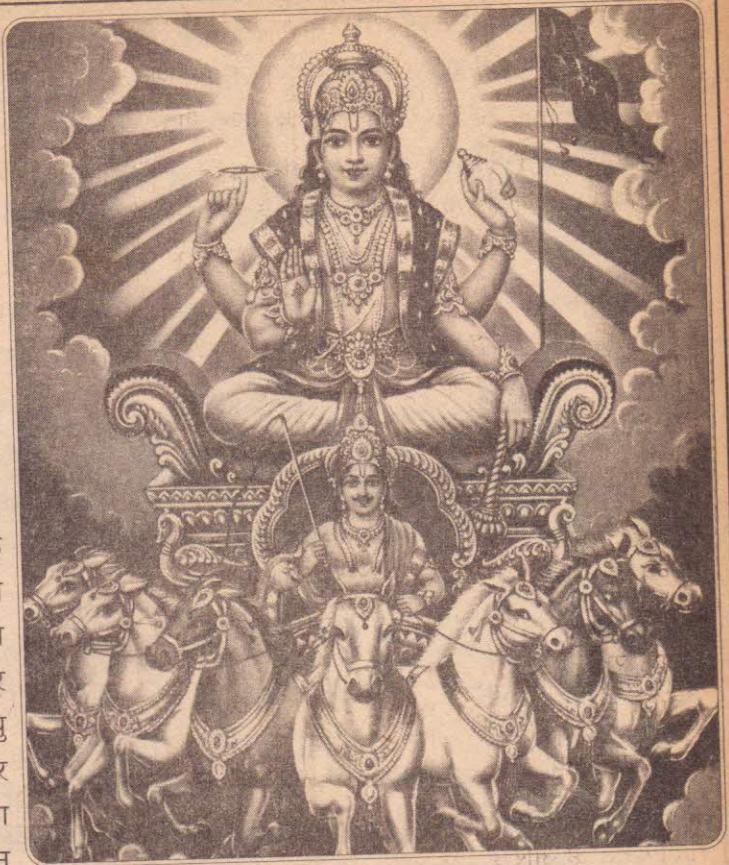
जीवन में भी संक्रान्ति

जीवन का प्रत्येक दिन अपने आप में अलग होता है, परिवर्तनशील जीवन ही मनुष्य को जीने की इच्छा शक्ति निरन्तर प्रदान करता रहता है। जीवन में 60-70 साल में भी बार-बार परिवर्तन, संक्रमण अर्थात् संक्रान्ति आती ही रहती है। मनुष्य के जीवन में जन्म, बचपन, किशोर अवस्था, युवा अवस्था, प्रौढ़ावस्था, वृद्धावस्था और मृत्यु से सभी संक्रमण काल ही तो हैं। बालपन से किशोर अवस्था में प्रवेश करना तथा किशोर अवस्था से युवावस्था में प्रवेश करना अत्यन्त दुष्कर होता है। चिंतायुक्त जीवन प्रारम्भ होने पर अपने आप को एडजेस्ट करने में बहुत अधिक परेशानी होती ही है।

ठीक इसी प्रकार वर्ष में क्रतु परिवर्तन होने पर शरीर में अजीब सी हलचल होती है, गर्भ से वर्षा क्रतु के बीच का संक्रमण काल शरीर में नई प्रकार की व्याधि ला सकता है। और जब वर्षा क्रतु से शीत क्रतु प्रारम्भ होती है तो उस बीच की क्रतु में भी शारीरिक और मानसिक परिवर्तन होते हैं।

आकाश मंडल में स्थित ग्रह और उन ग्रहों से भी सर्वाधिक प्रभावशाली ग्रह सूर्य जब एक राशि से दूसरी राशि में परिवर्तन करता है तो विशेष स्थिति बनती है। चाहे आपकी राशि कोई भी हो प्रत्येक राशि ऊपर दिये गए विवरण के अनुसार शरीर के उस भाग पर प्रभाव डालती ही है। इसके अतिरिक्त आपकी स्वयं की जो राशि है उस राशि के स्वामी का सूर्य के साथ सम्बन्ध भी संक्रान्ति के समय परिवर्तन होता ही है। इसीलिए व्यक्ति के जीवन में 12 महीने एक समान नहीं रहते हैं, जैसे ही सूर्य का संक्रमण काल आता है, कुछ अच्छा, कुछ बुरा कुछ अलग प्रकार का घटित होता ही है। धीर, वीर पुरुष समय की गति के अनुसार कार्य करता है तथा विपरीत समय में अपने आप को और अधिक सजग एवं सावधान कर लेता है।

प्रत्येक माह सूर्य का संक्रमण काल 14-15 तारीख के होता है।



आसपास होता है, उन दिनों में कुछ अलग प्रकार की स्थितियां बनती हैं। इसके लिए तीन बातें जाननी आवश्यक हैं।

1. सूर्य किस राशि में प्रवेश कर रहा है -
2. उस राशि का स्वामी कौन है -
3. आपकी स्वयं की राशि क्या है और उसका स्वामी कौन है -

इन स्थितियों पर विचार कर यदि सूर्य को अपने अनुकूल बना लिया जाए तो अन्य ग्रहों का प्रभाव हानिकारक नहीं रहता है क्योंकि सूर्य ही सबसे अधिक तेजस्वी ग्रह है। यदि सूर्य अनुकूल है तो अन्य सारे ग्रह अपने आप अनुकूल हो जाते हैं। सूर्य व्यक्तित्व का स्वामी है, इसके द्वारा ही व्यक्तित्व का निर्माण होता है। मनुष्य में पराक्रम, तेजस्विता, स्वभाव, कार्य करने की क्षमता इत्यादि का निर्धारण सूर्य से ही होता है। केवल सूर्य को ही क्यों विशेष अनुकूल किया जाए? क्योंकि यदि आपके घर में एक दो हजार वाट का बल्ब जल रहा है और उसके पास साठ वाट का बल्ब जल रहा है तो केवल दो हजार वाट वाले बल्ब की ही रोशनी विखाई देगी, छोटा बल्ब तो उसके प्रकाश में दब ही जाएगा। यदि सूर्य है तो पराक्रम सामाजिक प्रभाव है। सूर्य पुष्ट व्यक्ति सूर्य के समान ही तेजस्वी

इस वर्ष आने वाले समय में सूर्य की संक्रान्ति कौन सी दिनांक को पड़ेगी यह स्पष्ट किया जा रहा है।

वृष संक्रान्ति	- 15 मई 2005
मिथुन संक्रान्ति	- 15 जून 2005
कर्क संक्रान्ति	- 17 जुलाई 2005
सिंह संक्रान्ति	- 17 अगस्त 2005
कन्या संक्रान्ति	- 17 सितम्बर 2005
तुला संक्रान्ति	- 18 अक्टूबर 2005
वृश्चिक संक्रान्ति	- 17 नवम्बर 2005
धनु संक्रान्ति	- 16 दिसम्बर 2005
मकर संक्रान्ति	- 14 जनवरी 2006
कम्भ संक्रान्ति	- 13 फरवरी 2006
मीन संक्रान्ति	- 15 मार्च 2006

ऊपर दी गई तिथियों से पृथ्वी और सूर्य की परिक्रमा भ्रमण का सम्बन्ध होता है। इनमें से कई तारिखों में एक दिन पहले सायं काल के पश्चात् रात्रि में भी संक्रान्ति परिवर्तन हो रहा है, पर साधक के लिए सूर्योदय से ही संक्रान्ति से सम्बन्धित साधना करना उचित है।

उदाहरण स्वरूप दिनांक 15 जून 2005 को मिथुन संक्रान्ति आ रही है अर्थात् 15 जून 2005 को सूर्य मिथुन राशि में प्रवेश करेगा। मिथुन राशि का स्वामी बुध है। अब साधक संक्रान्ति को क्या करें? उसके लिए बड़ी ही विभ्रम की स्थिति आ जाती है, उसके लिए आवश्यक है कि वह संक्रान्ति काल के दौरान एक विशेष साधना सम्पन्न करे अर्थात् 15 जून को मिथुन, उसके स्वामी बुध, अपने राशि के स्वामी तथा सूर्य की सम्बन्धित एक विशेष साधना सम्पन्न करें। जो उसके लिए पूरे मर्हीने को अनुकूल कर सके।

राशि सायुज्य सूर्य संक्रान्ति साधना विधान

यह साधना किसी भी संक्रान्ति पर सकते हैं। संक्रान्ति के प्रारम्भ में सूर्य संक्रान्ति साधना करने से पूरे माह अनुकूलता प्राप्त होती है। अतः साधक को ऊपर दिये गये प्रत्येक माह की संक्रान्ति को ध्यान में रखते हुए अपनी राशि के अनुसार अवश्य ही संक्रान्ति साधना सम्पन्न करनी चाहिये।

इस साधना हेतु 'आदित्य संक्रान्ति यंत्र', 'तेजस गुटिका' एवं 'सफेद हकीकी माला' आवश्यक है साधना काल सूर्योदय के समय ही रहेगा।

बु	शु	चं
गु	र	मं
के	श	रर

प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में उठकर स्नान कर शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण कर अपने सामने एक चौकी पर श्वेत वस्त्र बिछाकर उस पर चावलों से नवग्रह चक्र बनाकर प्रत्येक खाने में उस ग्रह के प्रतीक स्वरूप एक-एक सुपारी स्थापित करें, सूर्य के खाने में सूर्य यंत्र, तेजस गुटिका स्थापित करें। दोनों हाथ जोड़कर सूर्य का ध्यान करें -

पदमासनः पदमकरो द्विबाहुः पदमधुतिः सप्त तुङ्गवाहनः दिवाकरो लोकगुरुः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः ।

विनियोग -

ॐ आकृष्णेति मंत्रस्य हिरण्यस्तूपाङ्गिरस ऋषिस्त्रिष्टुष्ठन्दः सूर्यप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

अब अपने हाथ में जल लेकर विशेष संकल्प करें, गुरु पूजन सम्पन्न कर सूर्य सोधना हेतु मंत्र जप प्रारम्भ कर सबसे पहले सूर्यबीज मंत्र 11 बार करे उसके पश्चात् एक माला सूर्य गायत्री मंत्र और एक माला तांत्रोक्त सूर्य मंत्र सम्पन्न करें-

सूर्य सबीज मंत्र

ॐ हां ह्रीं ह्रौं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयद्वृत्तमत्यञ्च। हिरण्यर्येन सविता रथेन्ना देवोर्याति भुवनानि पश्यन् ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः ह्रौं ह्रीं ह्रां ॐ सूर्याय नमः ॥

सूर्य गायत्री मंत्र

॥ ॐ आदित्याय विदमहे दिवाकराय धीमहि तद्वः सूर्य प्रचोदयात् ॥

तांत्रोक्त सूर्य मंत्र

॥ ॐ हां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः ॥

इस प्रकार इस मंत्र जप के पश्चात् एक तांबे के लोटे में जल लेकर यंत्र के साथ स्थापित तेजस गुटिका को उस जल में डाल दें और सूर्य की ओर मुंह कर सूर्य का दर्शन करते हुए वह जल को अर्घ्य सूर्य देव को अर्पित करें जल अर्पण करते समय लोटे के ऊपर इस प्रकार से हाथ रखें कि केवल जल ही अर्पण हो तेजस गुटिका लोटे के भीतर ही रहे अन्त में प्रार्थना करें -

ग्रहणामादिरादित्यो लोकतक्षणकारकः ।

विषमस्थानसम्भूतां पीडांदहतु मे रविः ॥

हे सूर्योदय! आप आदित्य देव है विजय देव है मेरे जीवन की पीड़ा समाप्त करें। यह तीन दिवसीय साधना है तीन दिन पश्चात् यंत्र और गुटिका अपने परिवार के सभी सदस्यों के सिर पर स्पर्श कराकर पीपल के वृक्ष में अर्पित कर दें।

साधना सामग्री - 290/-

सूर्याराजमात्रेण आरोग्यं मूलमुत्तमम्
सूर्य की आशाधना से ही आरोग्य की प्राप्ति होती है।

नवस्फूर्ति, नवदेतना, नवजीवन प्राप्ति के लिए



प्राचीन काल से हमारे मनीषी ऋषियों ने विश्वव्यापी प्राण ऊर्जा को स्वयं में समाहित करने के लिए सूर्य नमस्कार पद्धति का सहज निरूपण किया, जिसके अभ्यास से सूर्य वन्दना को व्यवहारिक रूप देकर शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक जगत के उन आयामों को प्राप्त किया जा सके, जो मानव जीवन की पवित्रता, दिव्यता, श्रेष्ठता, और पूर्णता के लिए आवश्यक हैं। आप स्वयं अनुभव करें, कि यह आपके लिए कितना उपयोगी है और आरम्भ कर दें इसका अभ्यास... नवस्फूर्ति नवदेतना की प्राप्ति के लिए...

सूर्य नमस्कार का शाब्दिक अर्थ है सूर्य की उपासना करना। यह सूर्य से सीधे व सरल रूप से प्राण ऊर्जा प्राप्त करने की प्रामाणिक विद्या है, जिसके अभ्यास से मानवीय प्रकृति का कोई भी क्षेत्र अचूता नहीं रह जाता। यह एक ऐसी यौगिक प्रक्रिया है, जो सभी प्रमुख आसनों, प्राणायाम और ध्यान के लाभ स्वयं में संजोये हुए है, जिसके वरदान स्वरूप जहां एक ओर भौतिक शरीर स्वस्थ होता है, सूक्ष्म शरीर के कमल चक्रों का प्रस्फुटन होने लगता है तथा पूरा शरीर एक विशेष सांचे में ढल जाता है, वहाँ दूसरी ओर कुण्डलिनी जागरण की प्रक्रिया भी आरम्भ हो जाती है। इस प्रकार सूर्य नमस्कार खोई हुई शक्ति वापस लाकर नवस्फूर्ति, नवजीवन प्रदान करता है और शरीर के सभी संस्थानों पर इसका चमत्कारिक प्रभाव स्पष्ट दृष्टिशोधर होता है।

सूर्य नमस्कार के आधारभूत तत्व

सूर्य नमस्कार के तीन आधारभूत तत्व हैं, जिनमें - पहला है शरीर विन्यास, जो बारह महीनों के सांकेतिक चिन्हों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

दूसरा है शारीरिक गति के साथ सम्पन्न की जाने वाली श्वास प्रक्रिया है।

तीसरा है प्रत्येक विशिष्ट शरीर विन्यास के साथ मानसिक

मंत्रोच्चारण करते हुए एकाग्रता एवं जागरुकता। सूर्य नमस्कार के लिए आवश्यक निर्देश

सर्वप्रथम साधक को सूर्य नमस्कार के अभ्यास के अन्तर्गत आने वाले शारीरिक विन्यास का ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए तथा उस स्थिति में श्वास का योग किस प्रकार करना है, यह मानस में स्पष्ट होना चाहिए, प्रारम्भ में यह क्रिया कठिन मालूम हो सकती है, परन्तु अभ्यास के उपरान्त प्रत्येक शारीरिक स्थिति के अनुरूप श्वास क्रिया प्राकृतिक रूप से सम्पन्न होने लगती है। श्वास क्रिया का मूल सिद्धान्त यह है, कि जब आप पीछे की ओर मुड़ते हैं, तो फेफड़े फैल जाते हैं, ऐसी स्थिति में पूरक क्रिया द्वारा सांस अन्दर भरी जाती है। इसके विपरीत जब सामने की ओर झुकते हैं, तो फेफड़ों का संकुचन होता है, जिसके फलस्वरूप सांस बाहर निकलती है। केवल छठी स्थिति में बाय्कूम्भक लगाया जाता है अर्थात् क्रिया के बाद सांस को बाहर रोका जाता है। ये सारी स्थितियां सामर्थ्यानुसार सम्पन्न की जाती हैं।

सूर्य नमस्कार की बारह स्थितियों अर्थात् बारह आसनों पर श्वास क्रिया सहित दक्षता प्राप्त हो जाने पर उनके साथ सूर्य के बारह मंत्रों को संयुक्त करना चाहिए, मंत्रों का जप प्रत्येक आसन के साथ मानसिक रूप से हो। इसके बाद अभ्यास की

अंतिम सीढ़ी पर पहुंच कर प्रत्येक अभ्यासी को विशिष्ट एकाग्रता बिन्दु का ज्ञान आवश्यक है। सूर्य नमस्कार अभ्यास के उपरान्त शिथिलीकरण क्रिया या शवासन अनिवार्य है, जो कि इस प्रक्रिया का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग है, क्योंकि इससे शरीर का तनाव दूर होकर नई शक्ति प्राप्त होती है, मन पूर्णतायुक्त, तनावरहित एवं शान्त हो जाता है।

उपयुक्त समय एवं स्थान

सूर्योदय के समय वातावरण में अपूर्व शांति रहती है, यह समय सूर्य नमस्कार के लिए उत्तम माना गया है। शरीर के अन्दर जीवन तत्व के निर्माण में अल्ट्रावायलेट किरणों का विशेष महत्व है। नित्य क्रियाओं के उपरान्त खुली हवा में अभ्यास करना उत्तम होता है। किन्हीं विशेष परिस्थितियों में सन्ध्याकाल में रात्रि में भोजन के पूर्व भी अभ्यास किया जा सकता है।

आवृत्ति संख्या

प्रारम्भिक अभ्यासी के लिए तीन आवृत्तियां पर्याप्त हैं, बहुत अधिक थकावट महसूस होने पर अभ्यास रोक देना चाहिए। अभ्यास की गति धीमी रखनी चाहिए, धीरे-धीरे आवृत्तियों की संख्या बढ़ाकर बारह की जा सकती है, उच्च अभ्यासी इच्छानुसार 24 से 52 आवृत्तियों तक अभ्यास कर सकता है, अभ्यास की आवृत्ति संख्या धीरे-धीरे बढ़ाते रहना चाहिए।

सूर्य नमस्कार प्रक्रिया

1. प्रणामासन

सूर्य की ओर मुंह करके खड़े हो जाइये, दोनों पैर मिले हों, हाथों को जोड़कर प्रार्थना की स्थिति में छाती के सामने रखिये। कुछ क्षणों के लिए आंखों को बन्द कीजिये, मानसिक स्थिरता एवं शांति का अनुभव करते हुए शरीर एवं मन को पूर्णतः शिथिल कीजिये। धीरे-धीरे सांस बाहर निकालते हुए फेफड़ों की समस्त वायु बाहर निकाल कर रेचन कीजिए। 'ॐ मित्राय नमः' मंत्र से अपने सर्वश्रेष्ठ मित्र सूर्य के प्रति जागरुक होइए, अनाहत चक्र पर ध्यान केन्द्रित कीजिये। बीज मंत्र - 'ॐ हाँ।'

2. हस्तउत्तानसन

प्रत्येक गतिविधि के प्रति जागरुकता रखते हुए दोनों हाथों को ऊपर उठाइये और पीछे झुकिये, हाथ एवं पीठ इस स्थिति में तने हुए रहें, सिर भी पीछे झुका हुआ हो, हथेलियां ऊपर की ओर खुली हों। हाथों को ऊपर उठाते हुए सांस फेफड़ों में भरिये अर्थात् लम्बा पूरक करिए। 'ॐ रवये नमः' मंत्र से अपने शरीर को प्रकाश पुंज की ओर प्रसारित करते हुए

विशुद्ध चक्र पर ध्यान केन्द्रित करिये। बीज मंत्र - 'ॐ हाँ।'

3. पादहस्तासन

दोनों हाथों के नीचे ले जाते हुए कमर प्रदेश से सामने की ओर झुकिये - पैर और हाथ एकदम तने हुए रहें, हथेलियों को सीधे जमीन पर टिकाने का प्रयत्न कीजिये, सिर को अन्दर की ओर झुकाते हुए नासिका से घुटनों को छूने का प्रयास कीजिये। नियमित अभ्यास से यह आसन शरीर में लचीलापन ला देता है एवं अभ्यास सरल हो जाता है। सामने की ओर झुकते समय सांस पूरी तरह बाहर निकालनी चाहिए, पेट जितना हो सके भीतर की ओर दबाना चाहिए और 'ॐ सूर्याय नमः' मंत्र से क्रियाशील सूर्य भगवान का ध्यान स्वाधिष्ठान चक्र में करना चाहिए। बीज मंत्र - 'ॐ हूँ।'

4. अश्वसंचालनासन

चौथी स्थिति में दाहिने पैर को पीछे पूर्ण रूप से फैलाइये। बायां पैर एवं दोनों हाथों की स्थिति पूर्ववत रहे, दाहिने पैर का टखना एवं घुटना भूमि को स्पर्श करें। सिर को ऊपर उठा कर मेरुदण्ड को मोड़ते हुए अर्धवृत्ताकार अवस्था में लाने का प्रयास करें। दोनों तने हुए हाथों पर शरीर का पूरा भार रहे, इस अवस्था में मुंह ऊपर उठा कर गर्दन और पीठ की अवस्था धोड़ की नाल के समान बनायें। सिर को ऊपर उठाकर 'ॐ भरन्वरे नमः' मंत्र द्वारा अखिल ब्रह्माण्ड के गुण हमें सदा क्रियाशील रहने की शक्ति दें - ऐसी प्रार्थना करते हुए आज्ञा चक्र में ध्यान केन्द्रित करें। बीज मंत्र - 'ॐ हैं।'

5. पर्वतासन

हाथों एवं दाहिने पैर की पूर्व स्थिति में रखते हुए पांचवी स्थिति में सिर को झुकाएं तथा बायें पैर को पीछे सीधा लेकर दाहिने पैर के बाजू में रखें, दोनों पैरों की स्थिति समान रहे। नितम्ब प्रदेश को ऊपर उठायें, सिर को दोनों हाथों के बीच नीचे रखें, शरीर की अवस्था लम्बवत हो जाएगी, नाभि की ओर दृष्टि रखें, दोनों एडियों को जमीन पर स्थिर रखने का प्रयास करें और पेट को अन्दर दबाते हुए सारी वायु तीव्र गति से निकाल दें। अपनी शारीरिक एवं मानसिक प्रगति के लिए सूर्य भगवान से 'ॐ खगाय नमः' कहकर विशुद्ध चक्र में ध्यान केन्द्रित करें। बीज मंत्र - 'ॐ हैं।'

6. अष्टांगासन

हाथों एवं पैरों को पूर्व अवस्था में रखते हुए दोनों घुटनों को भूमि पर टिकाइये, हाथों के सहारे छाती एवं ठोड़ी को नीचे कीजिये, नितम्ब व पेट का भाग पृथ्वी से ऊपर उठा रहेगा। इस स्थिति में सांस नहीं ली जाती, वरन् बाहर ही सांस को

सामर्थ्यनुसार रोक कर रखा जाता है। 'ॐ पूष्णे नमः' मंत्र से अपने को समस्त शक्ति के स्रोत सूर्य भगवान के चरणों में पूर्णतः समर्पित करें, ध्यान मणिपुर चक्र पर केन्द्रित करें। बीज मंत्र - 'ॐ हौं'।

7. भुजंगासन

हाथों पैरों को उसी स्थिति में रखते हुए सिर को ऊपर की ओर उठाते हुए हाथों को सीधा कीजिये, धड़ वाले भाग को ऊपर उठाकर सिर एवं कमर को पीछे की ओर मोड़ते हुए अर्धवृत्ताकार स्थिति बनाइये। सिर को ऊपर उठाते समय पूरी सांस अन्दर ले कर दीर्घ पूरक करें, 'ॐ हिरण्यगर्भाय नमः' मंत्र से बीज शक्ति रूपी सूर्य को नमन करते हुए स्वाधिष्ठान चक्र पर ध्यान केन्द्रित करना है। बीज मंत्र - 'ॐ हौं'।

8. पर्वतासन

सिर को नीचे झुकाइये तथा नितम्ब प्रदेश को ऊपर उठाते हुए स्थिति पांच में आ जाइये, इस स्थिति में सांस बाहर निकालते हुए रेचक किया जाता है, 'ॐ मरीचवे नमः' मंत्र से ब्रह्म मुहूर्त के देवता को प्रणाम करते हुए मृगतृष्णा की समाप्ति की प्रार्थना कर ध्यान विशुद्ध चक्र पर केन्द्रित करें। बीज मंत्र - 'ॐ हौं'।

9. अश्वसंचालनासन

बायें पैर को सामने वापस ले आयें, उसे दोनों हाथों के मध्य रखते हुए नितम्ब प्रदेश को नीचे लाएं, सिर व रीढ़ की हड्डी को पीछे मोड़ते हुए स्थिति चार की भाँति अर्धवृत्ताकार बनायें, दृष्टि आकाश की ओर हो। ऐसा करते समय सांस अन्दर की ओर भरते हुए पूरक करें। 'ॐ उरादित्याय नमः' मंत्र से महाशक्ति को प्रणाम करते हुए आज्ञा चक्र का ध्यान केन्द्रित करें। बीज मंत्र - 'ॐ हौं'।

10. पादहस्तासन

सिर को नीचे कीजिये, दाहिने पैर को सामने लाइये, नितम्ब वाले भाग को उठाते हुए पैरों को सीधा कीजिये, स्थिति तीन की तरह नासिका से धूटनों का स्पर्श करें तथा वायु को बाहर निकालते हुए रेचक करें। 'ॐ सर्वित्रे नमः' मंत्र से सूर्य के मातृरूप को कल्याणकारी भाव से विनती करते हुए स्वाधिष्ठान चक्र पर ध्यान केन्द्रित करें। बीज मंत्र - 'ॐ हौं'।

11. हस्तउत्तानासन

इस स्थिति में धड़ को ऊपर उठायें, हाथों को ऊपर उठाते हुए पीछे की ओर झुकते हुए दूसरी स्थिति में आ जाएं; धड़ को ऊपर उठाते समय सांस अन्दर की ओर लेते हुए पूरक



करें, 'ॐ अरकर्य नमः' मंत्र से शक्ति प्रणेता सूर्य को नमस्कार करते हुए ध्यान केन्द्रित करें। बीज मंत्र - 'ॐ हौं'।

12. प्रणामासन

प्रथम स्थिति की भाँति शरीर को सीधा रखते हुए दोनों हाथों को जोड़कर हृदय के सामने प्रार्थना मुद्रा में नेत्र बन्द करें और सांस बाहर छोड़ते हुए रेचक कर सामान्य अवस्था में आयें। 'ॐ भास्कराय नमः' मंत्र से सूर्य नारायण को प्रणाम करते हुए अनाहत चक्र पर ध्यान केन्द्रित करें। बीज मंत्र - 'ॐ हौं'।

शवासन: शिथिलीकरण क्रिया

सूर्य नमस्कार के बाद शवासन में यौगिक विधि से चेतना पूर्ण शिथिलीकरण करके सम्पूर्ण शरीर को सजगता के साथ प्राणों के ग्रहण योग्य बनाया जाता है। इससे साधक तनाव रहित होकर नवस्फूर्ति अनुभव करता है। इस क्रिया के लिए कम्बल पर सीधे लेटकर पूरा शरीर ढीला छोड़ दें, नेत्र बंद कर लें, शरीर में कोई हलचल न हो। अपनी चेतना को पैरों के पंजों से लेकर क्रमशः सिर तक ले जाकर पूर्ण शिथिलता की भावना देकर तनाव रहित स्थिति का अनुभव करें। शवासन सूर्य नमस्कार विधि का जीवन में नियमित अभ्यास कर सहस्रार जागरण करते हुए मंगलमय बनें और शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त करें।

आप साधक हैं,

शिष्य हैं,

आप शक्ति के उपासक हैं

८०

डरने की क्या आवश्यकता है?

जब आप

शिव, गुरु, शक्ति को सिद्ध कर सकते हैं

ବାଲ୍ଯାଦେଶ ସାହିତ୍ୟ

जिसके प्रभाव से सारी बिपरीत स्थितियां अनुकूल होने लगती हैं

शास्त्र प्रमाण है, जब-जब ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया गया, उसका परिणाम तत्क्षण प्राप्त हुआ। सारे शस्त्र अपने लक्ष्य से हट सकते हैं, पर यह सम्भव ही नहीं कि 'ब्रह्मास्त्र प्रयोग' किया जाए और वह निष्पत्ति साबित हो। ब्रह्मास्त्र प्रयोग एक अचूक प्रयोग है... पर आवश्यकता है उसका सही कार्यों में उपयोग हो, रथ के लिए और समाज हित के लिए...

प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं, जिसका कोई शत्रु न हो। मानव जीवन में पग-पग पर शत्रु पैदा होते हैं और जिनके बीच खड़े रहकर अपनी मंजिल की ओर बढ़ना, साधारण मानव के लिए कठिन ही नहीं, दुष्कर भी होता है, क्योंकि कब, कौन सा शत्रु उस पर प्रहार कर दे, यह कुछ कहा नहीं जा सकता, इसीलिए वह दुविधा ग्रस्त होने के कारण अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में असमर्थ रहता है, और इन्हीं सब कारणों से उसे अपने जीवन में दुःख तकलीफ, परेशानी, पीड़ा सहन करनी पड़ती है, अतः वह अपने जीवन में हताश एवं निराश सा हो जाता है।

इस वैमनस्यता से भरे युग में आज हर कोई शक्तिशाली बनने का प्रयास करता है। पौराणिक काल से लेकर अब तक यहीं होता आया है, कि जो सामान्यतः साधारण, कमजोर, अस्वस्थ, निर्बल प्राणी होते हैं, उन पर हर कोई प्रहार करने की कोशिश करता है, और किया भी है, पुराने जमाने में वह वर्ग, जो अपने-आप में शक्तिशाली होने के कारण उस समय उच्च वर्ग माना जाता था - जन सामान्य पर अत्याचार कर, उन पर अपना अधिपत्य स्थापित कर उन्हें अपना गुलाम बना लिया करता था।

हर समय, हर देश में, हर युग में ऐसा ही होता आया है,

कमजोर व असहाय व्यक्तियों को अपनी शक्ति के द्वारा बहुत अधिक दबाया गया है, उन्हें अपना गुलाम बनाया गया है, और ऐसा ही आज भी हो रहा है, जो कमजोर होते हैं, उन पर शत्रु हावी हो जाते हैं और विभिन्न प्रकार की बाधाएं उत्पन्न करने लगते हैं, जिससे जीवन का प्रत्येक पल दुःख तथा तनाव में ही बीतता है, क्योंकि मानव-मन हमेशा इस बात के लिए आशांकित रहता है, कि कहीं कोई शत्रु उस पर प्रहार न कर दें।

यदि मानव इसी प्रकार का भय ग्रस्त जीवन जीयेगा, तो वह जीवन में कभी भी उत्तरति की ओर अग्रसर नहीं हो सकेगा, उसके मन में यह प्रश्न उठते ही हैं, कि कहीं कोई उसके विरुद्ध उत्तरति के मार्ग में बाधाएं उत्पन्न करने का पद्धयंत्र तो नहीं रच रहा? उसे हर क्षण यह आशंका धेरे रहती है, कि कहीं कोई शत्रु उस पर प्रहार न कर दें, उसे किसी मुकदमे में फंसा न दे, कहीं वह घर में अशांति उत्पन्न करने की कोशिश न कर रहा हो या व्यापार में हानि न पहुंचा रहा हो अथवा कोई तुम्हारे मान-सम्मान को ठेस पहुंचाने, तुम्हें नीचा दिखाने की कोशिश न कर रहा हो?

ऐसे क्षणों में मानव मस्तिष्क के अधिक विचारशील हो जाने के कारण, उसके मन में विभिन्न प्रकार की चिन्ताएं व्यापक होती हैं।

रहता है, यह निर्णय न ले पाने के कारण, ही शत्रुओं को कैसे परास्त किया जाए, उसका जीवन निराशाजनक एवं संकट ग्रस्त हो जाता है, और यही उसकी त्वरित मृत्यु का कारण भी बनता है।

शत्रु भी कई प्रकार के होते हैं, जो जीवन के विभिन्न पक्षों में भिन्न-भिन्न रूप धारण कर मानव के सामने खड़े हो जाते हैं, केवल वही मनुष्य उन शत्रुओं से मुक्ति पा सकते हैं, जिनमें उन्हें परास्त करने की क्षमता होती है, किन्तु कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं, जो उन परेशानियों व बाधाओं में उलझते ही चले जाते हैं, व उनसे जितना निकलने का प्रयत्न करते हैं, इसका कारण है उनकी निर्बलता, कायरता और शक्तिहीनता।

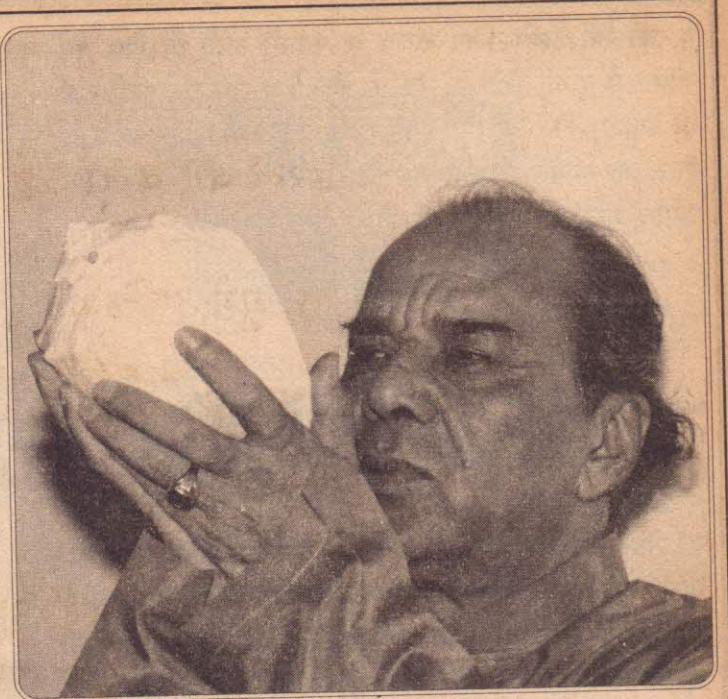
‘ब्रह्मास्त्र प्रयोग’ के द्वारा ऐसे व्यक्ति अपनी निर्बलता, कायरता व शक्तिहीनता को कम कर सकते हैं, और ऐसा करने में कोई बुराई नहीं है, शक्तिहीन को शक्तिशाली बनाना कोई बुराई नहीं है, यह तो उन्हें आंतरिक शक्ति प्रदान करने वाला एक तीक्ष्ण अस्त्र है, जिससे वह अपनी परेशानियों पर विजय प्राप्त कर सके और अपने जीवन में शांति व सुख प्राप्त कर सके।

जिन व्यक्तियों के पास ताकत नहीं है, बल नहीं है, कोई शक्तिशाली गुट भी नहीं है, जिसके द्वारा वे उन शत्रुओं से अपना बचाव कर सकें, उनके लिए यह प्रयोग एक ‘ब्रह्मास्त्र’ को प्राप्त करना ही है, जो उसके जीवन के समस्त शत्रुओं का विनाश करने में एवं उसे एक सुखमय जीवन देने में पूर्ण सक्षम है।

मानव के सबसे बड़े शत्रु तो उसकी देह के साथ ही अवगुणों के रूप में उससे चिपके रहते हैं, काम, क्रोध, लोभ, मोह ये सभी शत्रु रूप में उसे हर पल परेशानियां, तनाव, चिन्ता तथा अभावयुक्त जीवन ही प्रदान करते हैं, क्योंकि मानव के सबसे बड़े शत्रु तो यही होते हैं, जो उस पर हर क्षण प्रहार करते ही रहते हैं, जिससे मानव जीवन दुःखदायक व बोझिल हो जाता है, ये शत्रु कभी रोग के रूप में आड़े आते हैं, तो कभी आर्थिक संकट के रूप में पग-पग पर इन उलझनों और बाधाओं का आगमन तो होता ही रहता है, इन उलझनों एवं बाधाओं को दूर करके ही एक श्रेष्ठ मानव जीवन प्राप्त किया जा सकता है।

किन्तु यह तब सम्भव है, जब वह अपने जीवन के समस्त शत्रुओं से छुटकारा पा ले, क्योंकि इनसे मुक्त हुए बिना वह सुखी, प्रेममय व आनन्द युक्त जीवन व्यतीत नहीं कर सकता।

इन बाधाओं, कष्टों, परेशानियों से छुटकारा पाया जा सकता है, यदि वह इस विशिष्ट ‘ब्रह्मास्त्र प्रयोग’ को एक बार अपने



जीवन में सिद्ध कर ले, क्योंकि ‘ब्रह्मास्त्र प्रयोग’ एक गोपनीय प्रयोग है, जिसे पौराणिक काल में संकट के समय प्रयोग किया जाता था, जो अत्यन्त ही तीक्ष्ण और शीघ्र फलदायक सिद्ध होता था, जिसका प्रहार कभी खाली नहीं जाता था, जिसका प्रभाव अचूक होता था और आज भी अचूक है। इसका प्रयोग कर शत्रुओं पर विजय निश्चित रूप से प्राप्त होती है।

यह प्रयोग तो उच्चकोटि के योगियों, मुनियों आदि को ही जात है, क्योंकि यह अत्यंत ही गोपनीय है। आज के युग में इस प्रकार की विद्या का ज्ञान बहुत ही कम लोगों को जात है, और सर्वसाधारण के लिए तो दुर्लभ ही है।

जो इस विद्या के जानकार थे, उन्होंने इसे गुप्त ही रखा, किन्तु आज के इस भौतिक युग में जबकि सभी भौतिकता के पीछे पागलों की तरह दौड़ रहे हैं, दुःखी, पीड़ित व चिन्ताग्रस्त जीवन जी रहे हैं, उनके लिए यह प्रयोग सर्वश्रेष्ठ कहा जा सकता है, क्योंकि यही एकमात्र जीवन के समस्त शत्रुओं का विनाश कर, अभाव मुक्त जीवन को प्रदान करने का अचूक उपाय है, जिससे वह साधक पूर्ण ऐश्वर्य युक्त, सुखमय, समृद्धि पूर्ण, सम्पन्नता युक्त और तनाव मुक्त जीवन प्राप्त कर सकने में समर्थ हो सके, और शत्रुओं को पराजित कर ईंट का जवाब पत्थर से दे सके, इतना शक्तिवान, सामर्थ्यवान, बलशाली वह इस प्रयोग के द्वारा ही बन सकता है।

इस प्रयोग को सम्पन्न कर वायुमण्डल में व्याप विशेष प्रकार की ‘प्राण-शक्ति’ उसे स्वतः ही प्राप्त होने लग जाती है।

है, जो कि उसके लिए कवच के समान होती है, फिर वह बार जल से धो लें।

जीवन में दुःखी नहीं हो सकता, फिर शनु उस पर हावी नहीं हो सकते, फिर बाधाएं व उलझनें उनको नहीं धेर सकती, फिर वह जीवन में कभी पराजित नहीं हो सकता, क्योंकि इसका मूल आधार ब्रह्म की दिव्य शक्ति है।

सामग्री - ब्रह्मास्त्र यंत्र, परशु खड्ग माल्य।

दिवस - मंगलवार

समय - रात्रि में 10 बजे से साधना प्रारम्भ करें।

साधना विधान

हाथ मुंह धोकर, धुले वस्त्र धारण कर, ऊपर से गुरुनामी दुपट्टा डाल लें और सामान्य गुरु-पूजन करें, फिर एक बाजोट पर गहरे नीले रंग का वस्त्र बिछाकर, उस पर रक्त चन्दन से त्रिशूल बनकर 'ब्रह्मास्त्र यंत्र' को स्थापित कर दें, उस यंत्र का कुंकुम, अक्षत से पूजन करें, फिर धूप और दीप जला कर यंत्र के ठीक सामने रखें, दीपक सरसों या तिल के तेल होना चाहिए, इसके पश्चात् हाथ में जल लेकर संकल्प लें, कि मैं अमुक (अपना नाम लें) साधक, अमुक (शनु का नाम लें) शनु के विनाशहेतु इस प्रयोग को सम्पन्न कर रहा हूं, ऐसा कह कर उस जल को जमीन पर छोड़ दें, और हाथ को एक

इसके पश्चात् सर्वप्रथम गुरु मंत्र की 1 माला मंत्र जप करें, फिर 'परशु खड्ग माला' से निम्न मंत्र की 8 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

**॥ ॐ हुं हुं हुंकार स्त्रपिण्यै ब्रह्मास्त्र ब्रह्मण्ड
भेदय फट ॥**

मंत्र जप की समाप्ति के पश्चात् गुरु आरती सम्पन्न करें और यंत्र एवं माला को उस बाजोट पर बिछे कपड़े में लपेट कर नदी या कुंए में विसर्जित कर दें।

शक्तिवान बनना कोई बुराई नहीं है, अपितु जीवन का सौन्दर्य है। शक्तिवान का तात्पर्य शारीरिक क्षमता से नहीं, शारीरिक मापदण्ड से नहीं, शक्तिवान का तात्पर्य, जो वह चाहे उसे प्राप्त करे... पूरी क्षमता के साथ... तेजस्विता के साथ... रोते गिरिगिराते हुए नहीं...

...और यह सम्भव है, वह साधना द्वारा शक्ति प्राप्त कर शक्तिवान बने, क्षमतावान बने और आने वाली आपदाएं, चाहे वह सामाजिक हो, पारिवारिक हो या राजनीतिक... जीवन की छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी किसी भी समस्या का

नियंत्रण किया जा सकता है।

साधना सामग्री - 260/-

श्री दिव्य कृष्णां शारदीनाम्

जब तक मनुष्य की आकंक्षाएं पूरी नहीं होगी तब तक वह मुक्त नहीं होगा, इसलिए इच्छाओं का दमन करना नहीं अपितु उन्हें यत्न पूर्वक पूर्ण करना पुरुषार्थ है। जीवन में धन हो, वैभव हो, ऐश्वर्य हो, आज्ञाकारी पुत्र हों, सुमधुर लक्षणा पत्नी हो, नौकर हो, विपुल सम्पदा हो, यहीं तो जीवन है और भौतिक दृष्टि से यहीं पूर्णता है। यह मानव की पहली आवश्यकता है, भौतिक पूर्णता के बाद ही आध्यात्मिक पूर्णता की बात सोचनी चाहिए।

इस साधना को किसी भी शुक्रवार को प्रारम्भ किया जा सकता है, इसमें किसी भी प्रकार के वस्त्र धारण कर सकते हैं। समय का भी कोई बन्धन नहीं है, प्रातः अथवा सायं कभी भी इस प्रयोग को कर सकते हैं। इसके लिए 'भौतिक सिद्धि यंत्र', '4 काम बीज' एवं 'श्री फल' पहले से प्राप्त कर लें।

किसी पात्र में अक्षत का आसन देकर भौतिक सिद्धि यंत्र को स्थापित कर दें। यंत्र का कुंकुम, अक्षत एवं सुगन्धित इत्र से पूजन करें। इसके बाद यंत्र के पूर्व, उत्तर, पश्चिम व दक्षिण दिशाओं में एक-एक काम बीज अक्षत की एक-एक ढेरी बनाकर उस पर स्थापित करें। श्री फल को यंत्र के ऊपर स्थापित करें। इसके बाद निम्न मंत्र का 24 मिनट तक जप करें -

भौतिक सुख एवं भौतिक पूर्णता प्राप्ति मंत्र

॥ ॐ ह्रीं श्रीं एं प्रर्णं ह्रीं सर्व सौभाग्यं स्तिद्वचे ॐ नमः ॥

इस प्रकार मात्र 7 दिनों तक करें। बाद में समस्त सामग्री को जल में प्रवाहित कर दें।

इस साधनों से व्यक्ति का भौतिक जीवन सुदृढ़ हो जाएं, उसकी भौतिक कामनाएं, इच्छाएं पूरी तरह तृप्त हो जाएं, उसके बाद अन्य किसी साधना या आध्यात्मिक चिन्तन में उत्तरना चाहिए, तब उसे सफलता आसनी से मिल जाती है।

साधना सामग्री - 300/-



शिवं शिवं शुद्धं

‘सदाशिव’ का अर्थ है - नित्य मंगलमय।
नित्य मंगलमय अर्थात् त्रिकाल मंगलमय।
शंकर का अर्थ है - कल्याण करने वाला।
भगवान शिव की तरह अपने उपासकों का मंगल करने वाला
कोई अन्य देव नहीं है, क्योंकि शिव का काम ही दूसरों का
कल्याण करना है।

श्री शिव अनादि हैं, अनन्त हैं, निरुण स्वरूप होते हुए भी सभी गुणों से युक्त हैं, शिव का आदि, मध्य और अन्त नहीं होते हुए भी सृष्टि का लय करने वाले हैं तथा भक्तों के कष्ट निवारण के लिए प्रत्येक मन्वन्तर में इनका प्रादुर्भाव होता है। शिव परब्रह्म होते हुए भी ब्रह्म की त्रिविधा शक्तियों में (सृष्टि या स्थिति तथा प्रलय या उत्पत्ति और पालन या संहार में से) प्रलय कारक या संहार कारक जैसी महान् शक्ति विशेष के धारक है, किन्तु फिर भी उत्पत्ति व पालन करते हुए भक्तों के प्रतिपालक व परम दयालु भी हैं।

भगवान शिव के हजारों - करोड़ों नाम हैं। उनमें से भी अधिक प्रसिद्धि को जो नाम प्राप्त हुए हैं, वे हैं - भगवान आशुतोष, शिव, रुद्र, औघढानी, महारुद्र, नीलकंठ, शितिकंठ, पुरुष, परमपुरुष, सुवर्चा, कपर्दी, कराल, कापाली, हर्पद, वरद, ऋष्म्बकेश्वर, त्रिपुरारी, शंकर, क्षेम, क्रष्णिकेश, स्थाणु, हरिनेत्र, अव्यक्त, मुण्ड, कुच्छ, उत्तरण, सुतीर्थ, देवाधिदेव, बाहुशाली, दंडी, तप्सा, अक्रूरकर्मा, सहस्रशिरा, सहस्रचरण, भुवनेश्वर, स्वधा, स्वरूप, बहुरूप, गिरीष, चीरवासा, यति, प्रशान्त, उमापति, गिरिजापति, कामदहनहर, पिनाकधारी, महादेव, महायोगी, अविनाशी, कर त्रिशूलधारी,

चतुर्मुख, भास्कर, उच्छिष्ठी, सुकक्त्र, रहस, मीदवान, ऋयंम्बक, बिल्वदंडधर, सिद्ध, महान्, धन्वी, भव, वर, सोमवक्त्र, चक्षुष्य, हिरण्यबाहु, उग्र, लोलिहान, गोष्ठ, सिद्धमंत्र, वृष्णि, पशुपति, भूतपति, मातृभक्त, सेनानी आदि सहस्र लक्ष व कोटि नामों से भक्तजन भगवान शिव का स्मरण करते आये हैं।

शिव अतुलनीय और असाधारण देवता हैं महादेव का व्यक्तित्व असीमित हैं। शुद्ध चेतना का ही नाम शिव है तथा सर्वोच्च सत्ता को ही शंकर कहा गया है। विशुद्ध प्रश्ना का दूसरा नाम ही शिव है, जो एक होते हुए भी त्रिमूर्ति (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) हैं।

ईश्वर शिव ही नित्य, स्थायी, सत्ता व सर्वव्यापी है तथा शिव स्वयं शक्तिमय हैं, अतः शिव शक्ति के द्वारा ही कार्य करते हैं, वहीं शक्ति शिव रूपी विशुद्ध चेतना जड़ तथा प्रकृति के बीच का एक माध्यम हैं, जिनको उमा, ईश्वरी, पार्वती आदि नामों से पुकारा जाता है। शक्ति महादेव की अनुरूप सहस्रशिरा, कर्ता, विकास कर्ता व संहार कर्ता आदि सम्पूर्ण नियमों की

कार्य प्रणाली उसी सत्ता के आधार पर अनुप्राणित है। जब वरदायक, दीमवर्ण, शुभानन, अमोघ, अनहा, प्रिय, चंद्रानन, मन शिव सत्ता से सत्तावान हो जाता है, तो प्रकृति के सम्पूर्ण धर्मात्मा, पवित्र, चन्द्रमौलि, चन्द्रशेखर, अभयदाता, दानी, नियम उसके सहयोगी बनकर कार्य करते हैं। भक्त का योग

क्षेम स्वयं महादेव ही वहन करते हैं तथा उस जीवधारी का जीवन उस समष्टि प्रकृति से पोषित होता चला जाता है।

शिवलिंग की पूजा का महत्व

अन्य देवताओं की मूर्तियों की तो पूजा होती है, किन्तु शिवलिंग की पूजा का अधिक महत्व है। भगवान शिव ब्रह्माण्ड स्वरूप हैं, अतः दार्शनिकों की उक्ति में 'यः पिण्डे स ब्रह्माण्डे' सही चरितार्थ होती है। अतः साधन-सीमित व ज्ञान-सीमित शक्तिधारी मानव ब्रह्माण्ड स्वरूप की तो पूजार्चना नहीं कर सकता, किन्तु लिंग स्वरूप पिण्ड की पूजार्चना एक ही दिन में अनेक बार भी करना चाहे, तो कर सकता है। शिवलिंग उनकी सृजनात्मक शक्ति का द्योतक है। यद्यपि शंकर निर्गुण व निराकार हैं, तथापि लिंग स्वरूप सृजन का स्रोत होते हुए भी सम्पूर्ण चराचर, चल व अचल पदार्थों के अंत और नाश का परिचायक भी है। लिंग रूपी आकाश की वेदी पृथ्वी ही शिवलिंग में अव्यक्त, अदृश्य, सृजन शक्ति का भी अन्तर्भाव है तथा यही आध्यात्मिकता का भी स्वरूप है।

शिव की परोपकारिता

पौराणिक आख्यानों के अनुसार भगवान शिव ने समुद्र मंथन से उत्पन्न महाविष का पान देव तथा दानवों की प्रार्थना से किया तथा विष से उन सभी की रक्षा की व नीलकण्ठ कहलाये। आज भी उस विष का नीला निशान शिव की मूर्तियों व चित्रों पर दिखाई देता है। शिव की परोपकारिता, दीनदयालुता, औघढ़दानी स्वरूप आदि की जनश्रुतियां प्रसिद्ध हैं, इसीलिए संसार में सर्वाधिक शिव मंदिरों की भरमार है एवं भारत के

आत्मा त्वं णिरितजा मर्ति: सहचरा: प्राणः शरीरं गृहं, पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ।

संचारः पदयोः प्रवक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरौ; यद्यत्कर्म करोमि तत्तदस्त्रिलं शम्भो तवाराधनम् ॥

आत्म साक्षात्कार पूर्ण साधक की घेतना क्या होती है? - तुम आत्ममय हो, बुद्धि पार्वती है, प्राण सहयोगी है, शरीर मंदिर है, संसार की विषय भोग पूजा के साधन है, नींद ही उसके लिये समाधि है, इधर-उधर भ्रमण परिक्रमा है, जो भी वाणी विलास है वहीं स्तुति है, हे! प्रभु जो-जो कर्म करूँ वहीं आपकी आराधना है।



अतिरिक्त अन्य देशों में भी शिव पूजे जाते हैं।

परदुःख कातरता

भक्ति करने से अन्य देवता इतने शीघ्र प्रसन्न नहीं होते, जितने शीघ्र भगवान शंकर प्रसन्न होते हैं, इसीलिए उन्हें भोले-भंडारी कहा जाता है।

भगवान शिव की भगवान राम व कृष्ण ने भी पूजा की है तथा वरदान प्राप्त किये हैं, अतः समय-समय पर प्रार्थनाओं से प्रसन्न होकर भगवान शिव मानव का ही नहीं देवताओं तथा दानवों का भी उपकार करते रहते हैं।

सुद्राभिषेक, सहस्राभिषेक, सहस्रघटाभिषेक का महत्व

भगवान नीलकण्ठ को विषपान की तीव्रता कभी विचलित नहीं करें, इसीलिए शास्त्रों ने शिव के अभिषेक का महत्व बतलाया है। साधारण अभिषेक, नित्य जलधाराभिषेक, अहर्निषाभिषेक, सहस्रघटाभिषेक, दुर्घाभिषेक, घृताभिषेक, पंचामृत स्नान आदि विविध रूपों में अनेक प्रकारों से शिव का अभिषेक किया जाता है, जिससे आराधक के समस्त मनोरथ पूर्ण होते हैं।

अतः शिव ही सत्य हैं, शिव ही सुन्दर हैं व शिव ही कल्याणकारी हैं।

(1)

दिनांक : मई—जून 2005
 कृपया मुझे साधना के लिए निम्न सामग्री मिजवा
 दें, वी.पी.पी. आने पर मैं उसे छुड़ा दूँगा।

मेरा नाम :

ग्राम: पोस्ट :

जिला: राज्य :

सामग्री का नाम

दिनांक : मई—जून 2005

पूज्य गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी द्वारा रचित निम्न अनमोल कृतियाँ वी.पी.पी. से भेजने
 की कृपा करें। वी.पी.पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धनराशि दे कर छुड़ा लूँगा पुस्तकों के नाम —

(2)

मेरा नाम / पता :

नोट : 500/- से अधिक मूल्य का साहित्य एक साथ मंगाने पर 20% छूट प्रदान की जायेगी।

प्रिय सम्पादक जी, (पृष्ठ संख्या 79 पर प्रकाशित) दिनांक : मई—जून 2005

मुझे उपहार स्वरूप 'भूतनेश्वरी यांत्र' 390/- (300/- न्यौछावर तथा डाक व्यय 90/-)
 की वी.पी.पी. से भेजने की कृपा करें। वी.पी.पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धनराशि दे कर छुड़ा लूँगा।
 वी.पी.पी. छूटने पर मुझे 20 पत्रिकाएं निःशुल्क भेजी जायेंगी।

मेरा नाम :

पूरा पता :

(3)

श्रावण मास शिवकल्प

रायेश्वर भगवान् शिव की सातीना का अद्वितीय पर्व



370

जीवन के सारे पक्षों की साधना पूर्ण होती है।

श्रावण साधना से इस सिद्धि प्राप्त होती है।

श्रावण के चार सोमवार महासिद्धि पर्व है।

जब महादेव की पूजा, साधना और अभिषेक से सिंचित किया जाता है।

शिव ज्ञाना और शिव पूजन के कहक्य एवं आक-आक जमज्जाने की आवश्यकता नहीं हैं, अयोग्यि शिव देवों के देव महादेव हैं जो भक्तों को अभ्यर्थ बकवान प्रदान अवते हैं। भगवान शिव एवं अभिषेक जष्ठके उद्धिक प्रिय हैं और जो व्यक्ति भगवान शिव की नियमित ज्ञाना, अभिषेक जम्पज अवता है वह अपने जीवन में अभी भी कक्ष हीन नहीं कह जाता, उसके जीवन में कुछबों एवं भंडाक कहता है। इक्कीलिए भगवान शिव की आवती में भी अंत में यही अहा जाता है कि 'जहाँ शिव कहते वहाँ कुःख नहीं कहता, कुख में शिव कहता'। श्रावण मास जो किंवद्यक मास है, इस महामल्य में आप क्या करें? इसका धर्मन विक्ताक के इक्क लेख में किया जा कहा है। जष्ठ ज्ञाना का जमय आये तो ज्ञाना अवता आवश्यक हो जाता है, और शिव श्रावण ज्ञाना आपके लिये आवश्यक है -

भगवान शिव को रसेश्वर कहा गया हैं, क्योंकि यह जीवन करने में समर्थ होता हुआ जीवन की पूर्णता रूपी समुद्र जिसमें में रस को प्रदान करने वाले हैं, और जिस व्यक्ति के जीवन में भगवान नारायण विराज मान हैं उस पूर्णत्व मोक्ष को प्राप्त करे रस नहीं हैं उस व्यक्ति का जीवन मृत तल्य हैं। प्रतीक रूप में यही तो जीवन की वास्तविक गति है।

भगवान शंकर ने गंगा के तेज प्रवाह को अपनी जटाओं में धारण किया था और उनके शरीर से प्रवाहित होती हुई यह गंगा पूरे भारत वर्ष को जीवन रस से आप्लावित करती हुई निरन्तर प्रवाहित हो रही हैं, सारी नदियां सूख सकती हैं लेकिन गंगा की मूल धारा कभी भी सूख नहीं सकती इसका स्पष्ट तात्पर्य है कि भगवान शिव पर अभिषेक किया हुआ जल पूरे जीवन को आप्लावित करता है, यही गंगा कहीं नर्मदा बन जाती हैं, कहीं ब्रह्मपुत्र, तो कहीं हुगली, क्षिप्रा इस प्रकार विभिन्न धाराओं में बहती हुई समुद्र में विलिन हो जाती हैं, ठीक इसी प्रकार मनुष्य भी अपने जीवन में निरन्तर प्रवाह वान, गतिशील होते हुए अपने जीवन में दूसरों को सुख प्रदान

भगवान शिव को हजारों नामों से वर्णन किया गया है वे त्रिपुरारी हैं, मायाधारी हैं, लीलाधारी हैं, महाकाल हैं, महादेव हैं, महाकालेश्वर हैं, अर्धनारीश्वर हैं, नटेश्वर हैं, भूतेश्वर हैं, नारायण हैं, त्रिनेत्र हैं, तत्त्वेश्वर हैं, अभ्यंकर हैं, भयंकर हैं, शंकर हैं, ब्रह्म और परब्रह्म हैं, प्रलयंकर हैं, गंगाधर हैं, शशिशेखर हैं, और आदि अनादि के देव महादेव हैं, महाशक्ति के स्वामी हैं, और सबसे विशेष बात यह है कि भूत-प्रेत-मनुष्य-देवता सभी भगवान शिव का ही गुणगान करते हैं, और भगवान शिव ही अपने गले में विषधर सर्पों का हार पहने हुए संसार का विष ग्रहण करते हुए भी सदैव मुस्कान मुद्रा में ही रहते हैं।

यदि व्यक्ति भगवान शिव को अपना आदर्श ही मान लें उपस्थित हुआ है, और ऐसे दुर्लभ योग में महत्वपूर्ण और यह निश्चय कर ले कि मैं शिव समान ही अपने जीवन "मनोकामना सिद्धि साधना" सम्पन्न कर उन सभी अभावों, को रसयुक्त रखूँगा, और जीवन यात्रा में चाहे कितने भी परेशानियों और बाधाओं को दूर कर सकते हैं, जो हमारे दुःख रूपी सर्प आये उन दुःखों को धारण करते हुए भी जीवन में बाधाकारक हैं, तथा उन समस्त कार्य का लाभ उठा आनन्द के साथ जीवन यात्रा करूँगा, तो भी मनुष्य का सकते हैं, जिससे कि हमारे जीवन में प्रगति हो सके। जीवन शांत और सर्वसुखों से युक्त महान बन जाता हैं फिर पूरे भारत में हलचल उसे छोटी मोटी पीड़ा-व्याधि नहीं सताती है।

श्रावणमास वरुण देव का कल्प भी कहा गया है, इन्द्र देव के लिए पूरा भारत उतावला है, जगह जगह श्रावण मास के का भी कल्प कहा गया है, जब इन्द्र और वरुण भगवान शिव आने की इन्तजार है, उससे सम्बन्धित तैयारियां चल रही हैं, के आदेश से इस धरती को जल सिंचित करते हैं तो पूरी सैकड़ों स्थानों से इस प्रकार की सूचनाएं निरन्तर प्राप्त हो रही हैं, और सभी साधकों में उत्साह है, इस वर्ष तो श्रावण मास का अनुभव होने लगता है, क्योंकि ऐसे मास श्रावणमास में ही है, इस साधना को करने का निश्चय किया है, और साधकों के प्रकृतिरूपी भूमि और ईश्वर रूपी महादेव का संयोग होता है, अलावा हजारों योगियों और संन्यासियों ने भी विभिन्न नदियों तभी इस संयोग से पृथ्वी पर वृद्धि होती है। इसीलिये शास्त्रों के किनारे विशिष्ट प्रयोग सम्पन्न कर पूर्णता प्राप्त करने का विचार किया है।

भगवान शिव और महागौरी का मास हैं जब यह अपनी लीला का प्रकाश फैलाते हुए धरती पर विचरण करते हैं।

ज्योतिष और शिव साधना

श्रावण महीना भगवान शिव का प्रिय महीना है, उसमें भोलेनाथ भगवान शंकर की साधना करने से वे पल में ही प्रसन्न होते हैं, और जीवन की सारी इच्छाओं को पूर्ण कर देते हैं, उच्कोटि के योगी, यति और साधु, संन्यासी तो साल भर से श्रावण महीने की प्रतिक्षा करते रहते हैं, जिससे कि इन तीसों दिवसों में जीवन की अद्वितीय साधना सम्पन्न कर अपने मन के सारे विचारों की और जीवन की सारी इच्छाओं को पूर्णता दे सके, और समस्त रोगों और पापों से सदा निवृत्त होकर जीवन का पूर्ण आनन्द प्राप्त कर सके।

इस वर्ष श्रावण महीना 22 जुलाई 2005 से 19 अगस्त 2005 तक है, इस बीच महत्वपूर्ण चार सोमवार आयेंगे, जो कि इस प्रकार की साधना के लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण सौभाग्यदायक और अद्वितीय है।

श्रावण मास साधना

किसी विशेष जाति या धर्म से सम्बन्धित यह साधना नहीं है, अपितु यह साधना तो प्रत्येक साधक, संन्यासी और योगी के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है, ऐसे अवसर पर साधना सिद्ध करने से निश्चय ही दुर्भाग्य का नाश होता है, सौभाग्य की प्राप्ति होती है, और जीवन के सारे मनोरथ पूर्ण होते हैं।

वास्तव में ही यह हमारे जीवन का सौभाग्य है कि हमारे जीवन में ही ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से पूर्ण सिद्ध योग किये जा सकते हैं।

केवल हम ही नहीं अपितु इस श्रावण मास में साधना करने के लिए पूरा भारत उतावला है, जगह जगह श्रावण मास के सैकड़ों स्थानों से इस प्रकार की सूचनाएं निरन्तर प्राप्त हो रही हैं, और सभी साधकों में उत्साह है, इस वर्ष तो श्रावण मास में इस साधना को करने का निश्चय किया है, और साधकों के अलावा हजारों योगियों और संन्यासियों ने भी विभिन्न नदियों के किनारे विशिष्ट प्रयोग सम्पन्न कर पूर्णता प्राप्त करने का विचार किया है।

पत्रिका के विशेष अनुरोध पर मैं इस दुर्लभ प्रयोग को स्पष्ट कर रहा हूँ, जो कि श्रावण मास में सम्पन्न किया जायेगा, इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है और ऐसी साधना सम्पन्न कर अपने जीवन के सारे मनोरथ पूर्ण कर सकता है, आगे की पंक्तियों में, इस दुर्लभ और अद्वितीय साधना को पूर्णता के साथ दे रहा हूँ जिससे कि साधक इसका पूरा पूरा लाभ उठा सके।

मनोकामना सिद्धि साधना प्रयोग

जैसा कि मैंने बताया श्रावण महीने में चार महत्वपूर्ण सोमवार आ रहे हैं, और प्रत्येक सोमवार अपने आप में अद्वितीय योगों से सम्पन्न है, ज्योतिष की दृष्टि से ऐसा बहुत ही कम हुआ है, कि श्रावण मास में सभी सोमवार अद्वितीय और दुर्लभ योगों से सम्पन्न हो, इस दृष्टि से तो पूरे सोमवारों का उपयोग करना ही भाग्योदयकारक है।

पहला सोमवार

श्रावण कृष्णपक्ष 5, सोमवार दिनांक 25-7-2005 को नागपंचमी के शुभ अवसर पर पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र से युक्त है जो सात्विक नक्षत्र है। शोभन योग है जिसके स्वामी गुरु है और कौलव करण है जिसके स्वामी सूर्य है। अतः इस दिन शिव साधना के साथ गुरु और सूर्य की साधना भी सम्पन्न होती है। ऐसे योगों से सम्पन्न होने की वजह से यह सोमवार अपने आप में सिद्धिदिवस और सिद्धयोग बन गया है, ऐसे महत्वपूर्ण योग में निम्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रयोग सम्पन्न होते हैं।

1. लक्ष्मी प्राप्ति के लिए और लक्ष्मी की घर में स्थायित्व देने के लिए
2. नौकरी लगने, बेकारी दूर होने व नौकरी में प्रमोशन के लिए
3. व्यापार वृद्धि एवं व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए
4. ऋण समाप्त होने एवं निरन्तर आर्थिक उन्नति के लिये
5. जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण भौतिक सुख सम्पन्नता एवं सफलता के लिए
6. स्वयं का मकान होने व वाहन प्राप्ति के लिये
7. आकस्मिक धन प्राप्ति, भूमि से द्रव्य लाभ, लॉटरी आदि से उत्तम योग के लिये
8. आर्थिक दृष्टि से पूर्ण अनुकूलता और सफलता प्राप्ति के लिये

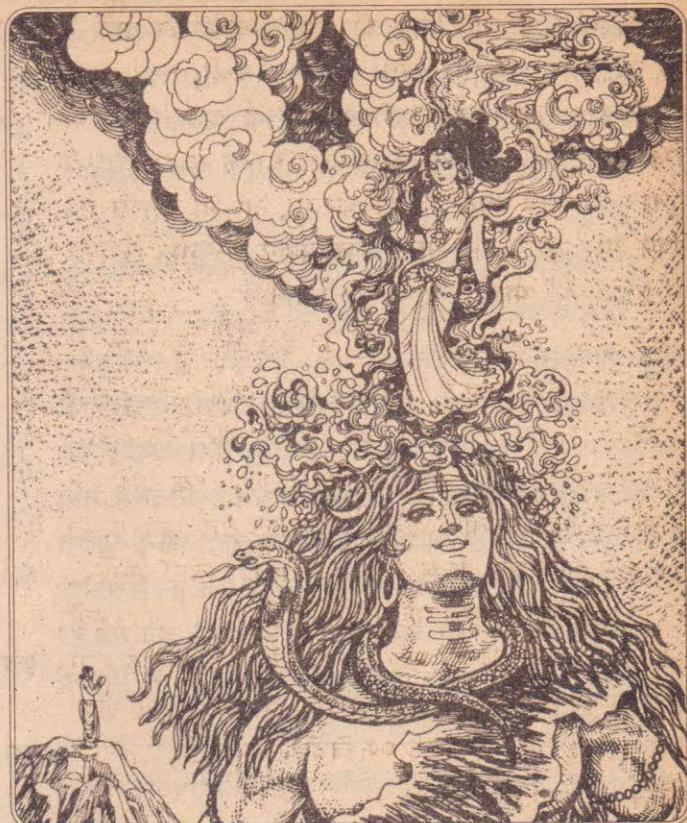
शास्त्रों की दृष्टि से ये दिन इस प्रकार के प्रयोगों के लिए अद्वितीय है अतः साधकों को इसका पूरा लाभ उठाना चाहिए।

दूसरा सोमवार

श्रावण कृष्णपक्ष 12, सोमवार दिनांक 01-08-2005, मृगशिरा नक्षत्र युक्त है, जिसके स्वामी तेजस्वी मंगल है, व्याघ्रात योग है जिसके स्वामी पवन देव वायु है। जो सभी बाधाओं का हरण करने में समर्थ है तथा कौलव करण है जिसके स्वामी सूर्य है और विशेष रूप से प्रातः 8.22 तक कामदा एकादशी है उसके बाद द्वादशी आती है। इस सोमवार को शिव साधना, जो कि अपने आप में महत्वपूर्ण है। ऐसे महत्वपूर्ण योग में निम्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रयोग सम्पन्न किये जा सकते हैं।

1. मनोवांछित पति या पत्नी प्राप्ति के लिए या इच्छित प्रेमी अथवा प्रेमिका को वश में करने के लिये
2. मनोवांछित पुरुष या स्त्री की हमेशा हमेशा के लिये अपने अनुकूल बनाने के लिये
3. पारिवारिक कलह दूर करने व गृहस्थ जीवन में पूर्ण अनुकूलता के लिये
4. घर के पितृ दोष, गृहदोष, तांत्रिक दोष, आदि समाप्त करने के लिये
5. किसी भी प्रकार की साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिये
6. आश्चर्यजनक भाग्योदय प्राप्ति के लिए
7. भगवान शिव की प्रत्यक्ष कर उनके दर्शन करने एवं शिवमय होने के लिए

उपरोक्त कार्यों की सिद्धि के लिए यह सोमवार अपने आप



में अत्यधिक महत्वपूर्ण है और प्रत्यक्ष साधक इस सोमवार का विशिष्ट तरीके से प्रयोग सम्पन्न कर लाभ उठा सकता है।

तीसरा सोमवार

श्रावण शुक्ल पक्ष 3, सोमवार दिनांक 08-08-2005 को पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र है जिसके स्वामी शुक्र है जो जीवन में कामभोग ऐश्वर्य प्रदान करने वाले देव है, शिव योग है जो श्रावणमास से अद्भुत है, गर करण है जिसकी स्वामिनी पृथ्वी है जिसके कारण प्रकृति रूपी पृथ्वी और पुरुष रूपी शिव का मिलन है तथा शुक्र का तीव्र प्रभाव है, इस कारण आज ही हरियाली तीस तथा सुवर्ण गौरी साधना दिवस भी है। इस सोमवार को जो भी प्रयोग किया जाता है, वह अपने आपमें सिद्धिदायक होता है।

निम्न कार्यों के लिए और जीवन में सभी दृष्टियों से सफलता के लिये इस सोमवार का प्रयोग किया जाना चाहिए।

1. अखण्ड सौभाग्य प्राप्ति एवं पति या पत्नी की पूर्ण आयु के लिए
2. सन्तान प्राप्ति एवं पुत्र सन्तान के लिए
3. पौत्र प्राप्ति एवं दीर्घायु के लिए
4. सन्तान की सुरक्षा, उनकी सफलता एवं पुत्र की उन्नति के लिए

5. कन्या के शीघ्र विवाह और उसके योग्य वर प्राप्ति के लिए
6. प्रत्येक प्रकार की मनोकामना पूर्ति के लिए
7. अकाल मृत्यु निवारण तथा घर में पूर्ण सुख शान्ति के लिए
8. आकस्मिक धन प्राप्ति एवं कुबेरवत् समृद्धि के लिए
9. पूर्ण सौन्दर्य एवं यौवन प्राप्ति के लिए

चौथा सोमवार

श्रावण शुक्ल पक्ष 10, सोमवार दिनांक 15-08-2005 की इस दिन ज्येष्ठा नक्षत्र है जिसके स्वामी बुद्धि के प्रदाता बुध है, यह नक्षत्र जो शरीर में व्याकुलता उत्पन्न करता है तथा वैद्युति योग है जिसकी स्वामिनी देव माता ब्रह्मा पत्नि अदिती है और गजकरण है जिसकी स्वामिनी पृथ्वी है और इन स्थितियों से जीवन में उच्चता प्राप्त करने की विशेष स्थिति बन गई है। इस सोमवार को तो प्रयोग करना समस्त बाधाओं को मिटाना है, और जीवन में एक छत्र सफलता पाना है।

निम्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इस सोमवार का प्रयोग किया जा सकता है—

1. शत्रुओं के नाश के लिए
2. शत्रुओं पर हावी होने व शत्रुओं को परास्त करने के लिए
3. मुकदमे में पूर्ण सफलता प्राप्ति के लिये शीघ्रता शीघ्र फैसले के लिये
4. किसी भी प्रकार की राज्यबाधा, राज्य संकट आदि की समाप्ति के लिये
5. भविष्य में किसी भी प्रकार की अड़चन, बाधा, अपमान भय आदि की निवृत्ति के लिए
6. एक्सीडेन्ट एवं अकाल मृत्यु निवारण के लिए
7. छोटे बालकों के स्वास्थ्य एवं आयु के लिए
8. पूर्ण रोग मुक्ति एवं पारिवारिक सुख समृद्धि के लिए
9. बुढ़ापा रोकने एवं अकाल मृत्यु भय को समाप्त करने के लिए

वस्तुतः ये चारों सोमवार भगवान शिव की साधना से सम्बन्धित है, और शिव साधना के द्वारा ही विशेष साधना सम्पन्न कर मनोवाञ्छित उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सकती है, इन चारों सोमवारों को साधना सम्पन्न करने के लिए एक ही प्रकार की साधना सामग्री उपयोग में लाई जाती है।

यह सामग्री अपने आपमें विशिष्टा पूर्ण और शास्त्र मर्यादा के अनुसार मनोकामना सिद्धि के लिए आवश्यक है।

1. अद्वितीय सर्व कामना पूर्ति शिव यंत्र
2. अन्नपूर्णा साफल्य सिद्धि गुटिका
3. पूर्ण सिद्धियुक्त शिव खण्डपर रत्न
4. वरदायक शिव का प्रामाणिक चित्र जो पूर्ण मंत्र सिद्ध एवं प्राण प्रतिष्ठित युक्त हो
5. साफल्य शिव रुद्राक्ष — जो रावणकृत शिव सिद्ध साफल्य मंत्र से आपूर्त हो
6. महत्वपूर्ण रुद्राक्ष माला — जो कि गले में पहनने के लिए उपयोगी हो
7. कल्पवृक्ष लक्ष्मी वरद — समुद्र से प्राप्त कल्पवृक्ष का प्रामाणिक लक्ष्मी वरद हो
8. सर्वकामना सिद्धि हेत्वा — जो विशिष्ट मंत्रों से सिद्ध एवं प्रभावपूर्ण हो
9. सिद्धि प्राप्ति हेतु दुर्लभ पारद गुटिका जो शिवलिंग की तरह हो और सिद्धिदायक हो
10. ऋद्धि सिद्धि युक्त दुर्लभ हकीकी — जो विद्वाँ को नाश कर पूर्ण सफलता देने में सहायक हो
11. महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती— त्रिमहाशक्तियों से सम्बन्धित यंत्र जो समस्त कामनाओं की पूर्ति में सहायक हो।

उपरोक्त चारों सोमवारों को भली प्रकार से साधना करने के लिए यही सामग्री काम में लाई जाती है, नीचे प्रत्येक सोमवार से सम्बन्धित जो प्रयोग दिये हैं, उन सभी को सम्पन्न करने हेतु यह सामग्री नितान्त आवश्यक है।

सर्वकामना सिद्धि पैकेट

श्रावण महिना निकट है और कई पाठकों और साधकों के पत्र प्राप्त हुए हैं, कि वे ऐसी दुर्लभ और प्रामाणिक सामग्री एक ही पैकेट में चाहते हैं, इसलिए हमने आप सभी के अनुरोध की रक्षा करते हुए, उपरोक्त सारी सामग्री एक ही पैकेट में तैयार करवा कर भिजवाने की व्यवस्था की है, इस पैकेट में उपरोक्त ज्यारह वस्तुएं प्रामाणिक रूप से संग्रहीत होंगी जिसे ‘सर्व कामना सिद्धि’ पैकेट कहा जाया है।

चारों सोमवार — साधनाएं एक ही सामग्री से

ऊपर चार सोमवार से सम्बन्धित साधनाएं बताई हैं, जो अलग अलग कार्यों के लिए महत्वपूर्ण हैं पर इन चारों सोमवारों या साधनाओं के लिए अलग अलग पैकेट लेने की आवश्यकता नहीं है। एक ही पैकेट की सामग्री से इन चारों सोमवारों की साधनाएं सम्पन्न की जा सकती है।

साधक चाहे तो चारों सोमवार का प्रयोग कर सकते हैं, और यदि उनके पास समय की न्यूनता हो तो एक या दो सोमवार से सम्बन्धित साधनाएं भी सम्पन्न कर सकते हैं।

मुहूर्त

श्रावण मास अपने आपमें 'सिद्धि मास' माना जाता है, इसलिए इस महीने में समय या मुहूर्त आदि की आवश्यकता नहीं होती। दिन या रात में कभी किसी भी समय साधना प्रारम्भ की जा सकती है और सफलता पाई जा सकती है।

साधना कौन करें?

इस साधना को पुरुष या स्त्री, बालक या बालिका कोई भी कर सकता है, इसके लिये किसी भी प्रकार का कोई प्रतिबन्ध नहीं है।

अन्य सामग्री

उपरोक्त पैकेट के अलावा कुछ और सामग्री की आवश्यकता होती है जिसकी पहले से ही व्यवस्था कर लेनी चाहिए।

आसन कोई भी रंग का हो, जलपात्र, गंगाजल यदि हों तो, चाँदी या स्टील की प्लेट, कुमकुम (रोली), चावल, केशर, पुष्प, बिल्वपत्र, पुष्पमाला, दूध, दही, घी, चीनी, शहद, नारियल, रक्तसूत्र या मोली अथवा कलावा, यजोपवीत, अबीर, गुलाल, अगरबत्ती, कपूर, घह का दीपक, नैवेद्य देतु दूध का प्रसाद, पांचफल, इलायची

इसके अलावा यदि घर में तांबे का पंचपात्र, अर्ध्य पात्र, घण्टी, शंख, अगरबत्ती स्टेन्ड आदि हो तो उसकी व्यवस्था करें।

साधना विधान

सर्व प्रथम स्नान कर शुद्ध सफेद रंग की धोती पहन कर पूर्व की ओर मुँह कर आसन पर बैठ जाय, यदि सम्भव हो तो अपनी पत्नी को भी अपनी दाहिने हाथ की ओर आसन पर बिठा दें, फिर अपनी चोटी को गांठ लगावे, बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से अपने पूरे शरीर पर निम्न प्रोक्षण पढ़ते हुए जल छिड़के जिससे कि शरीर पवित्र हो।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां ज्ञतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्यभ्यन्तरं शुचिः।

फिर सामने जल का कलश चावल की ढेरी बनाकर उस पर रख दे और उसके चारों तरफ कुंकुम या केशर की चार बिन्दियां लगा लें और उसमें निम्न मंत्र पढ़ते हुए जल भरे—

जंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन्स सन्निधि कुरु।

पुष्कराद्यानि तीर्थानि गंगाद्यास्सरितस्तथा ।

आगच्छन्तु पवित्राणि पूजाकाले सदा मम॥

फिर उस जल में से जल लेकर संकल्प करें—

ॐ विष्णुविष्णुर्विष्णु श्री मदभगवतो महापुरुषस्य
विष्णोराङ्गया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीय
पराद्देश्वरेत्वाराह कल्पे वैजवस्वतमन्वन्तरे अष्टा
विशतितमे कलियुजे कलिप्रथमचरणे जम्बुद्वीपे
भारतवर्षे (अपने शहर का नाम लें) नगरे श्रावण मासे
सोमवासरे मम (अपना नाम व कामनाओं या इच्छाओं का
नाम ले) अमुक कामनां सिद्धयर्थ साधना करिष्ये।

इसमें जिन-जिन कार्यों की पूर्ति का विवरण दिया या आपकी
इच्छा हैं, उनका उच्चारण करें या मन में बोल सकते हैं।

गणेश पूजन

फिर सामने स्टील या चाँदी की प्लेट में कुंकुम से स्वस्तिक बनाकर गणपति को स्थापित करें, यदि गणपति नहीं हो तो एक सुपारी रखकर उसे गणपति मानकर उस पर जल चढ़ाकर पौछकर, केशर लगाकर सामने नैवेद्य एवं फल रख दें, ऊपर पुष्प चढ़ावें और फिर हाथ जोड़कर बोलें—

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपित्वो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विद्धनाशो विनायकः ॥

धूमकेतुर्गणाद्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्रावशैतानि नामानि यः पठेत् शृणुयादपि ॥

वक्तुण्डमहाकाय सूर्यकोटिसमप्रभः
निर्विद्धनं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

फिर गणपति को किसी अलग पात्र पर स्थापित कर दें और सामने पात्र में 'सर्व काम्य सिद्धि' पैकेट में से अद्वितीय सर्व काम्य सिद्धि यंत्र को स्थापित करें, इससे पहले ही कामेश्वर शिव के प्रामाणिक चित्र फ्रेम में मढ़वाकर रख देना चाहिए और जल से धोकर पौछ कर केशर लगाकर पुष्पमाला पहना देनी चाहिए।

पात्र में सर्व काम्य सिद्धि यंत्र के साथ-साथ साफल्य प्राप्ति रुद्राक्ष, कल्पवृक्ष वरद, सिद्धि प्राप्ति युक्त कामना सिद्धि हेत्वा, त्रिशक्ति यंत्र तथा ऋद्धि-सिद्धि हकीक भी रख देना चाहिए।

फिर शुद्ध जल में थोड़ा सा कच्चा दूध और गंगाजल मिलाकर 'नमः शिवाय' मन्त्र का उच्चारण करता हुआ इन सब पर जल चढ़ावें, पतली धार से पांच मिनिट तक मिश्रित जल चढ़ाते

रहें। इसके पश्चात् दूध, धृति, धी, शहद, शक्कर का पंचामृत बनाकर उससे भी स्नान करावें, फिर शुद्ध जल से धो ले, फिर इन सभी विग्रहों को बाहर निकाल शुद्ध वस्त्र से पौछ लें और अलग शुद्ध पात्र में स्थापित कर ले। तत्पश्चात् इन सभी विग्रहों पर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए केशर और कुंकुम लगावें।

नमस्तु गन्धदेहाय ह्रदयफलदायिने ।

तुम्यं गन्धं प्रदास्यामि चान्धकासुरभन्जन॥

फिर इन सभी पर धीरे-धीरे पुष्प की पंखुड़ियां डालते हुए निम्न मन्त्र पढ़कर उन्हें सिद्धि युक्त बनावें।

ॐ शिवाय नमः पादौ पूजयामि । **ॐ जगत्पित्रे नमः जंथे पूजयामि ।** **ॐ मृडाय नमः जानुनी पूजयामि ।** **ॐ रुद्राय नमः उरु पूजयामि ।** **ॐ कालान्तकाय नमः कटि पूजयामि ।** **ॐ नारेन्द्र भरणाय नमः नार्भि पूजयामि ।** **ॐ स्तव्याय नमः स्तनौ पूजयामि ।** **ॐ भावनाय नमः भुजान् पूजयामि ।** **ॐ कालकंठाय नमः कंठं पूजयामि ।** **ॐ महेशाय नमः सर्वाण्यंगानि पूजयामि ।**

इसके पश्चात् भगवान् शिव पर और इन सभी यंत्रों पर अबीर, गुलाल और अक्षत चढ़ावे तथा उन्हें पुष्प तथा पुष्पमाला समर्पित करें।

तत्पश्चात् सामने अगरबत्ती व दीपक जलाकर नैवेद्य रखे तथा फल भी समर्पित करें।

**वन्दे देवउमापतिं सुरगुरं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशुन्तांपतिम् ।**
**वन्दे सूर्यशशांकं वन्हिवन्दयनं वन्दे मुकुन्दपियं
वन्दे भर्त्तुजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम् ।**
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ।
यत् पूजितं मयादेव परिपूर्णं तदस्तुमे ॥

इसके बाद किसी भी माला से या सर्वकाम्य सिद्धि पैकेट में जो रुद्राक्षमाला है, उसके द्वारा मन्त्र जप करें, इसमें रुद्राक्ष माला सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, यदि यह उपलब्ध न हो तो स्फटिक माला या मूँगामाला से मन्त्र जप करें, इसमें ज्यारह माला जप इन यंत्रों और विग्रह के सामने करना आवश्यक है।

प्रथम सोमवार को विधि विधान सहित पूजन कर अन्य सोमवार के दिन मन्त्र जप कर सकते हैं।

प्रथम सोमवार को किया जाने वाला मंत्र

**ॐ लक्ष्मी प्रदाय ह्रीं श्रण मोचने श्रीं देहि
देहि शिवाय नमः ।**

दूसरे सोमवार को सम्पन्न किया जाने वाला मंत्र

**ॐ महाशिवाय वरदाय ह्रीं एं काम्य सिद्धि
रुद्राय नमः ।**

तीसरे सोमवार को सम्पन्न किया जाने वाला मंत्र

**ॐ महादेवाय सर्वकार्य सिद्धि देहि देहि
कामेश्वराय नमः ।**

चौथे सोमवार को सम्पन्न किया जाने वाला मंत्र

**ॐ रुद्राय शत्रु संहारय वर्तीं कार्य सिद्धाये
महा देवाय फट ।**

ये सभी मंत्र अद्वितीय और महत्वपूर्ण हैं, यह हम लोगों का सौभाग्य है, कि हमारे जीवन काल में ऐसा महत्वपूर्ण अवसर उपस्थित हुआ है, जिसका हम पूरा-पूरा लाभ उठा सकते हैं।

प्रत्येक सोमवार को मंत्र जप करने के बाद इन सभी यंत्रों को अलग पात्र में रख देना चाहिए और श्रावस मास में नित्य इनके सामने सुबह-शाम अगरबत्ती व दीपक लगा कर ‘**ॐ नमः शिवाय**’ मंत्र की एक माला अवश्य फेरनी चाहिए।

19 अगस्त 2005 को श्रावण पूर्णिमा है, अतः इस दिन इन सिद्धि किये हुए यन्त्रों को या तो पूजा स्थान में लाल वस्त्र बिछा कर स्थापित करें या किसी पवित्र स्थान पर रख देना चाहिए, यदि यह संभव न हो तो समुद्र या नदी में विसर्जित किये जा सकते हैं, पर ज्यादा अच्छा यही होगा कि इन्हें अपने पूजा स्थान में रख दें या घर में किसी पवित्र स्थान पर स्थापित कर दें।

भगवान् शिव तो सर्वाधिक दयालु और तुरन्त वरदान देने वाले महादेव है, अतः इन प्रयोगों एवं साधनाओं का फल तुरन्त प्राप्त होता है और साधक शीघ्र ही मनोवांछित सफलता प्राप्त करने में सफल हो पाता है।

सामग्री उपयोग

यहां से जो पैकेट में सामग्री भेजी जायेगी उनका प्रयोग साधना सम्पन्न करने के बाद इस प्रकार से करना चाहिए—

अद्वितीय सर्व कामना पूर्ति शिव यन्त्र की पूजा स्थान में ही रख देना चाहिए, इसी प्रकार अन्नपूर्णा साफल्य सिद्धि यन्त्र, पूर्ण सिद्धियुक्त शिव खण्डपर यन्त्र तथा सर्व कामना सिद्धि यन्त्र को भी पूजा स्थान में बने रहने दे, तो उचित होगा।

वरदायक शिव के प्रामाणिक चित्र को पहले से ही काच के फ्रेम में मंडवाकर रख देना चाहिए, रुद्राक्ष माला को गले में

धारण करना चाहिए, और साफल्य शिव रुद्राक्ष को शिव मन्दिर में जाकर अपने हाथों से समर्पित कर देना चाहिए।

कल्पवृक्ष लक्ष्मी वरद को समुद्र में या तालाब में विसर्जित कर देना चाहिए तथा पारद गुटिका ऋद्धि सिद्धि युक्त दुर्लभ हकीक को पूजा स्थान में रख देना ज्यादा उचित रहेगा, इसके साथ ही त्रि-शक्तियों से सम्बन्धित यन्त्र को साधक चाहे तो धागा पिरो कर अपने गले में धारण कर सकते हैं, या चाहे तो पूजा स्थान में रख सकते हैं, इस प्रकार इस सारी सामग्री को उपयोग में लाना चाहिए। यदि कोई साधक किसी विशेष कारण से स्वयं यह मन्त्र जप न कर सके, तो अपने घर किसी योग्य पंडित को बुलाकर भी यह प्रयोग एवं मन्त्र जप सम्पन्न करव सकता है।

श्रावण मास साधना सामग्री - 450/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

आप चाहे तो अपने दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बना कर उपहार स्वरूप यह साधना सामग्री पैकेट प्राप्त कर सकते हैं। इस स्थिति में आपको 490/- की टी.पी. से इस साधना सामग्री को भेज देंगे।

अतः विशिष्ट साधना सामग्री तो उपहार स्वरूप ही है साथ ही इसके माध्यम से गुरु कार्य के रूप में आप अपने दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बनाएं तथा कार्ड क्रं 6 पर अपने दोनों मित्रों का पता लिखकर भेजें। कार्ड मिलने पर 490/- की टी.पी.पी. द्वारा आपको इस साधना की मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त सामग्री भेज देंगे तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पत्रिका भेजी जाएगी।

श्रावण मास में किटे जाने वाले कुछ और विशिष्ट प्रयोग

श्रावण कल्प वास प्रयोग

यह प्रयोग 2 जुलाई 2005 से 19 अगस्त 2005 तक सम्पन्न करना चाहिए, इसमें अपने घर में मंत्र सिद्ध नमदिश्वर शिवलिंग स्थापित करें तथा रुद्राक्ष माला से 'नमः शिवाय' पंचाक्षरी मन्त्र का जाप करें, तो श्रावण कल्पवास प्रयोग पूर्ण होता है, इससे साधक पर शिव प्रसन्न होते हैं, और श्रद्धायुक्त प्रयोग करने पर उसे दर्शन लाभ होता है, यह भी अपने आप में महत्वपूर्ण प्रयोग है।

नमदिश्वर शिवलिंग - 150/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

आकस्मिक धन प्राप्ति प्रयोग

इस वर्ष भी श्रावण मास में ज्योतिष की दृष्टि से 'धनदा सिद्धि प्रयोग' आया है, जो तीन दिन का है, यह 7 अगस्त

2005 से 19 अगस्त 2005 तक है, इन तीन दिनों में यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए, मधुक्षवा तृतीया होने से यह महत्वपूर्ण अवसर बन जाता है।

इस के लिए 7 अगस्त 2005 की रात्रि को अपने सामने स्फटिक शिवलिंग स्थापित कर, शिवलिंग के सामने दो मोती शंख स्थापित कर दे, फिर ऊपर बताये हुए तरीके से उसका पूजन सम्पन्न कर रात्रि को 51 माला मंत्र जप करें।

मंत्र

ॐ ह्रीं रत्नजर्भा॑ शिवाय स्वर्ण॑ वर्षा॑ प्रदाय॑
ह्रीं ह्रीं फट्।

मंत्र जप करते समय सामने धी का दीपक लगा रहना चाहिए और एक मोती शंख चावलों से भरा हुआ बायें हाथ में रहना चाहिए तथा दूसरा मोती शंख अपनी दाहिनी जाँघ के नीचे चावलों से भरकर दबा देना चाहिए।

51 माला मन्त्र जप के बाद दोनों मोती शंख को स्फटिक शिवलिंग के सामने रख देने चाहिए।

साधना सामग्री - 300/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

ऋणहर्ता प्रयोग

कितना ही कर्ज हो, या आर्थिक परेशानी हो तो श्रावण मास में निम्न तांत्रिक प्रयोग आश्चर्यजनक रूप से सफलतादायक हैं, यह प्रयोग एक दिन का प्रयोग हैं, और इसे 19 अगस्त 2005 अर्थात् श्रावण पूर्णिमा की रात्रि को सम्पन्न किया जा सकता है। अपने सामने 19 अगस्त 2005 की रात्रि को कल्पवृक्ष स्थापित कर उसकी केसर से पूजा कर कमल गड्ढ की माला से निम्न मंत्र की 51 माला केरे और मंत्र जप के बाद वह कल्पवृक्ष घर की तिजोरी में रख दे तो कुछ ही दिनों में वह समस्त प्रकार कर्ज से मुक्त हो जाता है, यह तांत्रिक प्रयोग हैं और सिद्धिदायक महत्वपूर्ण प्रयोग माना गया है।

मंत्र

ॐ ह्रीं कामाय॑ ह्रीं सिद्धाय॑ ह्रीं ऋणमोर्चने॑
महारुद्राय॑ कुबेर लक्ष्मी॑ प्रदाय॑ ह्रीं ह्रीं फट्।

वस्तुतः यह श्रावण महीना साधकों के लिए तो निश्चय ही सौभाग्य प्रदायक है, साधकों को चाहिए कि वे पूर्ण शिवमय बनकर इस पूरे महीने भगवान शिव से सम्बन्धित साधनाएं सम्पन्न कर अपने जीवन को सभी दृष्टियों से पूर्णत्व प्रदान करें।

साधना सामग्री - 270/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

शुरूवायी

- ☆ मैं तुम्हें इसी जीवन में ब्रह्मात्म तक पहुंचा दूँगा, यह मेरी गारण्टी है, पर गारण्टी तब हो सकती है जब तुम अपने आप को मिटा सको, जब तुम अपने आपको पूर्णता से समाप्त कर सको।
- ☆ जिसमें समुद्र में छलांग लगाने की हिम्मत है, वह मीठी प्राप्त कर सकता है और जो समुद्र के किनारे बैठा रहता है, जो छलांग लगाने की सोचता ही रहता है, लेकिन छलांग लगा नहीं पाता, बार-बार गुरु उकसावे भी, तब भी एक कदम चले और बैठ जाय, बार-बार याद आए कि मेरे पीछे समाज है, पुत्र है, बन्धु हैं, बान्धव हैं, वे क्या साचेंगे? क्या होगा? कैसे होगा? वह व्यक्ति समुद्र में छलांग नहीं लगा सकता।
- ☆ जहां सुख हो, वहां हमेशा सुख ही रहे, ऐसा सम्भव नहीं, जहां दिन तो रात भी आयेगी। सुख के बाद हुःख आएगा ही, परन्तु आनन्द के बाद आनन्द ही आता है। आनन्द और सुख में मूलभूत अन्तर है, आनन्द के बाद मृत्यु नहीं आ सकती, चिन्ता व्याप्त नहीं हो सकती।
- ☆ अगर तुम जीवन में आनन्द प्राप्त करना चाहते हो, तो समर्पित होने की क्रिया सीखनी पड़ेगी, अपने प्राणों को गुरु के प्राणों में समावेश करने की क्रिया सीखनी ही पड़ेगी, अपने आप को भुलाना पड़ेगा।
- ☆ तुम्हारे पास जो भी चिन्ताएँ हैं, हुःख हैं, परेशानियां हैं, बाधाएँ हैं, वे सभी तुम्हें मुझाको समर्पित कर देनी हैं।
- ☆ तुम्हें बिल्कुल खाली पात्र की तरह मेरे पास आना है, खाली कागज की तरह मेरे पास आना है, जिसके मैं पूर्णत्व लिख सकूंगा, मैं उस पर ब्रह्मात्म लिख सकूंगा। मैं तुम्हें बता सकूंगा, कि जीवन की पूर्णता क्या है? जीवन का आनन्द क्या है? जीवन की सर्वोच्चता क्या है? श्रेष्ठता क्या है?
- ☆ अपु से विराट बनाने की क्रिया केवल गुरु जानता है, मनुष्य से देवता बनाने की क्रिया केवल गुरु जानता है, मूलाधार से सहस्रार तक पहुंचाने की क्रिया केवल गुरु जानता है और इसीलिए जीवन का आधार केवल और केवल गुरु ही होता है।
- ☆ गुरु तो तुम्हें कहीं भी भगवा कपड़ों में मिल जाएंगे, मगर सद्गुरु न कोई भगवे कपड़े पहिनता है, वह कोई चालाकी करता है, उसकी वाणी में ओज होता है, एक सत्यता होती है, एक दृढ़ता होती है, वह

तोकर भी मार सकता है, वह तुम्हें चेतना युक्त भी बना सकता है, यदि तुम तैयार हो तो।

- ☆ साधना पथ की दो पगडपिंडियाँ चाहे ऊबड़ खाबड़ हों, चाहे कंटीली हों, चाहे इस रास्ते में टेढ़े-मेढ़े पत्थर बिखरे हों, परन्तु इसमें कोई दो राय नहीं है कि इन रास्तों का जो समापन है, वह अद्भुत है, पूर्ण आनन्दयुक्त है, पूर्णता देने वाला है और वहां पहुंच कर पूरी यात्रा की थकान अपने आप में समाप्त हो जाती है।
- ☆ मंत्रों के माध्यम से उस दैवी सहायता को प्राप्त करना, जिसके माध्यम से हम जीवन में पूर्णता प्राप्त कर सकें, उसको साधना कहते हैं। साधना के लिए यह आवश्यक है, कि हम उन देवताओं से परिचित हों... और यह परिचय मात्र और केवल मात्र सद्गुरु ही करवा सकते हैं।
- ☆ उन रास्तों पर पैर लहूलुहान तो होते हैं, थकावट तो आती है, रास्ते की धूप सहन करना पड़ता है, परन्तु अन्त में अलौकिक अनिवार्यी आनन्द की प्राप्ति होती है, जिसे समाधि सुख कहा गया है।
- ☆ गुरु तो बहुत दूर की देखता है, वह देखता है कि शिष्य को जीवन की पगडपिंडी पर कहां खड़ा करना है, और जहां खड़ा करना है, उसके लिए आज इसको कौन सी आज्ञा देनी है। इसलिए शिष्य को आज्ञा पालन में चिलम्ब नहीं करना चाहिए।
- ☆ पूर्णता तो तब सम्भव होती है, जब शिष्य गुरु के चरणों में सिर स्वकर आंसुओं से उनके चरणों को धोए, अपने को पूर्ण विसर्जित करे, उसका हृदय गद्गद हो जाय, गला भर जाय, और सूखे हुए गले से जो कुछ शब्द निकले, तो 'गुरुदेव' शब्द ही निकले।
- ☆ समर्पण ह्राथ जोड़ने से नहीं ही सकता, और न ही गुरु की आरती उतारने से आ सकता है। समर्पण का तात्पर्य है, कि गुरु जो आज्ञा दे, उसका बिना नानूच किए पालन किया जाए।
- ☆ शिष्य तो वह है, जिसकी हर समय मन में यही झच्छा हो, कि मैं गुरु के पास दौड़कर पहुंच जाऊं... ही सकता है कोई मजबूरी हो, नहीं जा सके, यह अलग चीज है, मगर मन में उत्कण्ठा हो, तीव्र झच्छा हो, छटपटाहट बनी रहे कि उसे हर हालत में गुरु के पास पहुंचना है।
- ☆ गुरु से प्राणगत सम्बन्ध होने चाहिए, देहगत नहीं यदि गुरु की तबीयत ठीक नहीं है और आपका मन बड़ा बैचेन होता हो, ऐसा लगे कि कुछ खाली खाली सा है मालूम नहीं होता हो कि यह बेद्धना क्यों है, यह छटपटाहट क्यों है, किस कारण से है... यही तो प्राणगत और आत्मा के सम्बन्ध होते हैं।

शिष्य धर्म

संसार में दुःख हैं, हर दुःख का कारण है और हर दुःख का निवारण भी है... सदगुरु की कृपा प्राप्त करने का सरल उपाय ही दीक्षा है... और शिष्य का धर्म यही है, कि पुनः पुनः गुरु चरणों में उपस्थित होकर दीक्षा द्वारा अपने अभीष्ट की सिद्धि करे। सदगुरु करुणा करके भले ही शिष्य को कुछ प्रदान कर दे, यह उनकी कृपालुता है, परन्तु शिष्य का धर्म तो यही कि वह प्रार्थना कर गुरुदेव से दीक्षा प्राप्त करे। भगवान शिव पार्वती को शिष्य के इस धर्म के बारे में दीक्षा के महत्व को प्रकार से स्पष्ट किया है -

दीक्षाविधिं प्रवक्ष्यामि साधकानां हितेच्छया।
विधाय विधिवद् दीक्षां पशुत्वात् स विमुच्यते॥१॥

शास्त्रोक्त विधि द्वारा दीक्षा ग्रहण के बाद साधक पशुत्व भाव से मुक्त होकर विशिष्ट भाव में प्रवेश करता है।

दीयते परमा सिद्धिः क्षीयते कर्मवासना।
आप्यते परमं धाम तेज दीक्षा स्मृता शिवे॥२॥

हे पार्वति! जिस क्रिया के माध्यम से सांसारिक भोग वासना की समाप्ति व परम तत्व की प्राप्ति संभव होती है, उसे दीक्षा कहते हैं।

ब्रह्मादिकीट पर्यन्तं जगत्सर्वं महेश्वरि।
पशुत्वं मोहितं देव्यास्तस्माद् दीक्षां चरेत् कल्पौ॥३॥

हे महेश्वरि! ब्रह्मा से लेकर कीट पर्यन्त समस्त प्राणि पशु भाव से आवेष्ठित हैं, उससे मुक्त होने के लिए दीक्षा ग्रहण करना चाहिए।

दीक्षितो याति शरणं दीक्षाहीनो भवेत् पशुः।
दीक्षितस्तु भवेज्ञानी पशुभावोज्जितो विभुः॥४॥

दीक्षा के बिना पशुभाव की समाप्ति हो ही नहीं सकती, दीक्षा के बाद पशुभाव से मुक्त होकर वह साधक ज्ञान एवं ब्रह्मत्व को प्राप्त कर सिद्धि पुरुष बन जाता है।

सर्वपातकमुक्तो हि लभेत् स परमां गतिम्।
यस्य दीक्षा शिवे! नास्ति जीवनान्तं च जन्मिनः॥५॥

दीक्षित साधक सभी पापों से मुक्त होकर परम स्थिति को प्राप्त करता है। हे पार्वती! जिस व्यक्ति की दीक्षा नहीं हो पाती, उसका जीवन व्यर्थ होता है।

॥दीक्षा विवर्धते विधाम्, दीक्षा सौभाग्यदायिनी॥ ॥ दीक्षया तत्पदम् आप्नुयात्, दीक्षया साध्यते साध्यम्॥

स जातु नोत्तरेद् देवि! निरयाम्बुनिधेः क्वचित् दीक्षाहीनस्य देवेशि! पशोः कुत्सितजन्मिनः॥६॥

हे पार्वति! दीक्षा के बिना पाप रूपी समुद्र को पार न किया जा सकता, अतः दीक्षा प्राप्त करनी ही चाहिए।

पापौघोऽनितिकमायाति पुण्यं दूरं पत्तायते।
तस्माद्यत्नेन दीक्षैषा ग्राहा कृतिभिरुत्तमैः॥७॥

दीक्षा के बिना साधना की प्रवृत्ति पापों की ओर होती जाती है, पुण्य कर्म छूट जाते हैं, अतः हर प्रयास से दीक्षा लेने का प्रयत्न करना चाहिए।

बाल्ये वा यौवने वापि वार्धकेऽपि सुरेश्वरि।
अन्यथा निरयी पापी पितृन् स्वाङ्गिरवं नवेत्॥८॥

साधक, बाल, युवा अथवा वार्धक्य किसी भी अवस्था दीक्षा ले सकता है, अन्यथा वह स्वयं पापी होता है तथा अपने समस्त पितृ समुदाय को नरकगामी बना लेता है।

अन्ते पशुर्मनुष्यः सन् पशुयोनिं ब्रजेच्छिवे।
पूर्वं पुण्यार्जितां प्राप्यं वासनां परमार्थदाम्॥९॥

दीक्षा के बिना व्यक्ति के अन्दर परमार्थ की ओर जाने के भावनाएं नहीं आती हैं और अंत में पशुयोनि को वह प्राप्त होता है।

युरु कुलीनं तंत्रज्ञं सर्वज्ञैः सुमनोहरम्।
लब्ध्वा भक्त्या प्रणम्यदौ तोषयित्वा विशेषतः॥१०॥

सत्कुल में उत्पन्न, सुन्दर शरीर वाले गुरु की शरण ले जाकर, उन्हें प्रणाम करे, सेवा से उन्हें प्रसन्न करे, गुरु दक्षिण देकर सुनिर्णीत मुहूर्त में साधक श्रद्धापूर्वक दीक्षा ग्रहण करें।

गुरु को सर्वस्व समर्पण दिवस है

गुरु पूर्णिमा

जल में कुंभ कुंभ में जल है, बाहर भीतर पानी।
फूटा कुंभ जल जल ही समाना है, यह तथ कहा जानी॥

ऐसा ही मिलन से युक्त पर्व है गुरु पूर्णिमा का, जिसमें शिष्य गुरु चरणों में अपने को उत्सर्ज करने के लिए आतुर हो जाता है, क्योंकि यह पर्व ही वह अद्वितीय पर्व होता है, जब शिष्य को गुरु दक्षिणा स्वरूप स्वयं को समर्पित करने का श्रेष्ठतम अवसर प्राप्त होता है और गुरु भी शिष्य के न्यून स्तर, उसके अधूरेपन को स्वयं ग्रहण कर उसे आशीर्वाद स्वरूप श्रेष्ठता प्रदान करते हैं, मात्र उसके भौतिक पक्ष को ही नहीं, उसके आद्यात्मिक पक्ष को भी।

भावों से भरे हृदय से, शब्दा और विश्वास से सद्गुरुदेव का गुरु पूर्णिमा पूजन जो शिष्य के जीवन का आधार है -

जब शिष्य अपने हृदय, देह, प्राण, रोम प्रतिरोम में गुरु का स्थापन कर लेता है, तो उसके रक्त के कण-कण में गुरुदेव की ध्वनि उच्चरित होने लगती है। गुरु स्वयं उसके हृदय में आकर कपट, चालाकी आदि को समाप्त कर देता है... और ऐसा तब होता है जब वह अपने हाइ-मांस के शरीर को मल-मूत्र से न भर कर, गुरु के प्रेम से सराबोर कर लेता है।

यह साधना तो 'स्व' को समाप्त करने की है और जैसे-जैसे वह इस साधना में अग्रसर होगा, उसी क्रम में गुरु उसके हृदय में स्थापित होने लगेंगे, गुरु का स्थापन तो वहीं हो सकता है, जहां रिक्तता होगी, क्योंकि गुरु हाइ-मांस का शरीर नहीं वरन् ब्रह्माण्ड की विराटता को समेटे हुए उसके हृदय में स्थापित होते हैं और यहीं विराटता वह अपने शिष्य को भी प्रदान कर देते हैं।

शिष्य को तो प्रारम्भिक अवस्था बनानी पड़ेगी। दिखाना पड़ेगा, कि उसमें क्षमता है, कि वह विराटता को धारण कर सकता है, उसे अपनी योग्यता सिद्ध करनी ही पड़ेगी, उसे अर्जुन की भाँति संधान का अभ्यास करना ही पड़ेगा, कृष्ण योग्यता व पावता अनुभव करते हैं और कुछ विशेष अवसरों

की भाँति गुरु की सेवा करनी ही पड़ेगी। गुरु के प्रति विश्वास व्यक्त करना ही पड़ेगा, गुरु के लिए समर्पण बनाना ही होगा, क्योंकि इसके बिना वह गुरु के हर कार्य को तोलने लगता है, स्थापित हो जाते हैं। ऐसा तब होता है जब शिष्य अपने छल, गुरु के कार्य को अपनी बुद्धि की कसौटी पर रखकर उसे कपट, चालाकी आदि को समाप्त कर देता है। वहां वह शिष्य नहीं आलोचक बनने लगता है, वह गुरु की क्रिया को नहीं समझ सकता है, विराटता को समझने के लिए विराटता ही धारण करनी पड़ेगी। जब शिष्य पूर्णतया गुरु के अनुकूल होगा तभी वह उनके कार्यों को समझ सकता है।

इसी अग्नि से शिष्य अपने विकारों को समाप्त करने में सफल होता है और जब वह अपने स्व को समाप्त कर लेता है, तो स्वयं ही उस विराटता को स्थापित कर लेता है। वह स्वयं में ही इतनी क्षमता प्राप्त कर लेता है, कि शनैः-शनैः विराटता को ग्रहण करता हुआ वह स्वयं पूर्ण हो जाता है।

शिष्य के जीवन को आनन्द, पूर्णता और अनेक प्रकार की अनुकूलताओं से भरने का पर्व है - 'गुरु पूर्णिमा'।

गुरु शिष्य को तभी कुछ प्रदान करते हैं, जब शिष्य में योग्यता व पावता अनुभव करते हैं और कुछ विशेष अवसरों

पर ऐसा संयोग बनता है, कि वे शिष्य की न्यूनताओं को, उसकी पेरशानियों को स्वतः ही समाप्त कर देते हैं और अपना सान्निध्य, अपनी तपस्या का अंश तथा साधनात्मक ऊर्जा प्रदान कर उसे स्वर्ण खण्ड बना देते हैं।

यह क्रिया मात्र आध्यात्मिक पक्ष से सम्बन्धित ही नहीं होती, अपितु जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दृष्टिगोचर होती है। जिस प्रकार मां अपने शिशु की प्रसन्नता व श्रेष्ठता के लिए प्रयत्नशील रहती है, उसी प्रकार गुरु की भी समस्त क्रियाएं अपने शिष्यों को प्रसन्नता, श्रेष्ठता, पूर्णता प्रदान करने के लिए ही होती हैं।

गुरु पूर्णिमा प्रत्येक साधक साधिका के लिए ऐसा महान् उत्तम दिवस है, जिस दिन वह अपने गुरु की पूजा अर्चना साधना कर अपने जीवन में ज्योति आलोकित कर सकते हैं। माता-पिता स्थूल शरीर को जन्म देते हैं, परन्तु गुरुदेव उस स्थूल शरीर में ज्ञान, चेतना, पुरुषार्थ की अग्नि भरते हैं, इसीलिए शास्त्रों में गुरु का स्थान माता-पिता सभी देवताओं से उच्च माना गया है।

गुरु पूर्णिमा के दिन गुरु की पूजा अर्चना कर साधक गुरु के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रगट करता है, शिष्य का हित इसी में है कि वह अपने गुरु के निरन्तर सम्पर्क में बनाये रखें, अतः जहां तक सम्भव हो सके गुरु पूर्णिमा के शुभ दिवस पर गुरु की साक्षात् पूजा करनी चाहिए क्योंकि गुरु ही परब्रह्म, गुरु ही परम गति है, गुरु ही पराकाष्ठा है, गुरु परम धर्म है, गुरु ही सब कुछ दे सकने में समर्थ होने के कारण श्रेष्ठ से भी श्रेष्ठ है।

जो साधक साधिका गुरु पूर्णिमा के दिन उपस्थित न हो सके, उन्हें अपने निवास स्थान पर प्रसन्न मन से परिवार के साथ पूर्ण विधि से गुरु पूजा करनी चाहिए।

गुरु पूर्णिमा के शुभ दिन ब्रह्म मुहूर्त में स्नान से निवृत हो कर पीले वस्त्र धारण करें और सर्वप्रथम गुरु का ध्यान करें, अपने पूजा स्थान में गुरुदेव का सुन्दर चित्र रखें तथा अपने सामने पूजा स्थान में देवी-देवताओं के मध्य में गुरु यंत्र स्थापित करें, गुरु यंत्र साक्षात् गुरु का प्रतीक स्वरूप है।

गुरु पूजन साधना में फल, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, सुपारी, वस्त्र, कलश, चन्दन, नारियल, कुंकुम, केशर आवश्यक है, सर्वप्रथम पीपल के पत्ते से कलश में से जल लेकर सभी दिशाओं में आसन स्थान पर पूजा स्थान पर जल छिड़कें तथा शुद्धिकरण किया करें, तथा दोनों हाथ जोड़ कर गुरुदेव का निम्न ध्यान करें, ध्यान के समय गुरु चित्र के आज्ञा चक्र की स्वरूप मानें, 3. वायु को धूप स्वरूप मानें, 4. अग्नि को दीप

ओर देखते हुए और अपने हृदय से इस प्रकार ध्यान करें कि गुरुदेव आपके सामने स्पष्ट हों -

गुरु ध्यान

अथातः प्रातस्तथाय शत्यास्थः सुसमाहितः ।

शिरस्थ कमले ध्यायेत् स्व गुरुब्रह्म रूपिणम् ॥

अर्थात् शिर स्थित सहस्रदल कमल के मध्य में हंस पीठ के ऊपर गौर शरीर, प्रसन्न मुखमण्डल, शांत मूर्ति, सुर शक्ति सहित, शिव स्वरूप गुरुदेव आपको आपका शिष्य ध्यान कर रहा है।

ध्यायेच्छिरशि शुक्लाङ्गे द्विनेत्रं द्विभुजं गुरुं ।

श्वेताम्बरं परिधानं श्वेत माल्यानुत्पेयनं ॥

वराभय करं शान्तं करुणामय विश्रहं ।

वामेनोत्पत्त धारिण्यां शत्यात्मिणित विश्रहं ॥

ब्रह्मरध्म के मध्य में श्वेत वर्ण, द्विभुज, द्विनेत्र गुरु स्थित है उनके वस्त्र श्वेत हैं, श्वेत माला पहने हुए, श्वेत चंदन लगाये हैं, उनके एक हाथ में वर तथा दूसरे हाथ में अभय है, उनकी मूर्ति शांत और करुणामय है, उनकी बार्या और रक्त वर्ण शक्ति है, इस प्रकार ध्यान करें।

फिर दाहिना हाथ अपनी नाभि पर रख कर उस पर बायां हाथ रख कर नाभि स्थल में गुरुदेव का ध्यान करें -

ॐ वराभय करं शान्तं शुक्लवर्णं स शक्तिकम् ।

ज्ञानानन्द मयं साक्षात् सर्व ब्रह्म स्वरूपकम् ॥

शुक्ल वर्ण वाले गुरुदेव, साक्षात् ब्रह्म एवं ज्ञान स्वरूप हैं, वे अपनी साधनात्मक शक्ति सहित सहस्रार में स्थित होकर शिष्य को एक हाथ से वर तथा दूसरे हाथ से अभय प्रदान कर रहे हैं।

इसके बाद गुरु का आह्वान करें -

ॐ एं परम गुरवे सशक्तिकम् श्री नारायणाय

गुरवे आवाहनं समर्पयामि ।

ॐ स्वरूप निरूपण हेतवे नारायणाय श्री गुरवे नमः ।

ॐ स्वच्छ प्रकाश विमर्श हेतवे नारायणाय श्री गुरवे नमः ।

ॐ स्वात्माराम पंजर विलीन तेजसे श्री परमेष्ठि नारायणाय गुरवे नमः आवाहनं समर्पयामि पूजयामि ।

इसके बाद गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य और ताम्बूल (सुपारी) इन छः उपकरणों से गुरुदेव का संक्षिप्त पूजन करना चाहिए।

1. पृथ्वी को गन्ध स्वरूप मानें, 2. आकाश को पुष्प
- स्वरूप मानें, 3. वायु को धूप स्वरूप मानें, 4. अग्नि को दीप

स्वरूप मानें, 5. अमृत को नैवेद्य स्वरूप माने, 6. वातावरण को ताम्बूल (सुपारी) स्वरूप मानें।

पूजा

गन्ध - दोनों हाथों के अंगुष्ठ और कनिष्ठा उंगलियों के योग से गुरुदेव को गन्ध समर्पित करें -

एं कनिष्ठिकाभ्यां लं पृथिव्यात्मकं जन्थं स
शक्तिकं श्री गुरवे समर्पयामि नमः ।

धूप - दोनों हाथों की तर्जनी और अंगुष्ठ के सहयोग से धूप समर्पित करें -

एं तर्जनीभ्यां यं वागात्मकं धूपं स शक्तिकं श्री
गुरवे समर्पयामि नमः ।

दीप - दोनों हाथों की मध्यमा और अंगुष्ठ के योग से दीप दिखायें -

एं मध्यमाभ्यां रं बहात्मकं दीपं स शक्तिकं श्री
गुरवे समर्पयामि नमः ।

नैवेद्य - दोनों हाथों की अनामिका और अंगुष्ठ के योग से नैवेद्य समर्पित करें -

एं अनामिकाभ्यां अमृतात्मकं नैवेद्यं स शक्तिकं
श्री गुरवे समर्पयामि नमः ।

ताम्बूल - दोनों हाथ जोड़कर ताम्बूल (सुपारी) प्रदान करें -

एं करतलकर पृष्ठाभ्यां सर्वात्मकं ताम्बूलं स
शक्तिकं श्री गुरवे समर्पयामि नमः ।

इस प्रकार छः उपकरणों से गुरुदेव का पूजन करें, यदि ये पदार्थ उपलब्ध हों तो वे पदार्थ 'गुरु यंत्र' के आगे समर्पित करें, और न हो तो मानसिक रूप से ऊपर लिखे अनुसार मानसिक उपकरण पूजन समर्पित करें, इसके बाद करन्यास करें -

करन्यास

अंगन्यास

ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ॐ मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वृष्ट
ॐ अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
ॐ कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रत्रयाय वैष्ट
ॐ करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट

करन्यास में सभी उंगलियों को तथा अंगन्यास में सारे शरीर का स्पर्श करना चाहिए।

जप - इसके बाद 'गुरु रहस्य माला' से 'गुरु मंत्र' का जप करें - 'श्री गुरवे नमः'

गुरु स्तवन

नमस्तुभ्यं महा मंत्र दायिने शिवरूपिणे ।
ब्रह्म ज्ञान प्रकाशाय संसार दुःख तारिणे ॥
अति सौभाग्य विद्याय वीरायाज्ञान हारिणे ।
नमस्ते कुल नाथाय कुल कोतिन्यदायिने ॥
शिव तत्व प्रकाशाय ब्रह्म तत्व प्रकाशिने ।
नमस्ते गुरवे तुभ्यं साधकाभ्य दायिने ॥
अनाचाराचार भाव बोधाय भाव हेतवे ।
भावाभाव विनिर्मुक्त मुक्ति दात्रे नमो नमः ॥
नमस्ते सम्भवे तुभ्यं दिव्य भाव प्रकाशिने ।
ज्ञानानन्द स्वरूपाय विभवाय नमोनमः ॥
शिवाय शक्ति नाथाय सच्चिदानन्द रूपिणे ।
काम रूपाय कामाय काम केलि कलात्मने ॥
कुल पूजोपदेशाय कुलाचार स्वरूपिणे ।
आरक्ष निज तच्छक्ति वाम भाग विभूतये ॥
नमस्तेऽस्तु महेशाय नमस्तेऽस्तु नमो नमः ।
इद स्तोत्रं पठेद्वित्यं साधको गुरु दिङ्मुखः ॥
प्रातरुत्थाय देरेशि! ततो विद्या प्रसीदति ।
कुल सम्भव पूजायामादौ यो नः पठेदिदम् ॥
विफला तस्य पूजा स्यादभिचाराय कल्पयते ।
इति कुञ्जिका तंत्रे गुरु स्तोत्रं समाप्तम् ॥

यदि शिष्य अथवा शिष्या दीक्षित हो तो गुरु मंत्र 'ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः' मंत्र का जप करें, यह मंत्र जप एक माला अर्थात् 108 बार उच्चारण करें।

गुरु पंक्ति नमस्कार - इसके बाद गुरु पंक्ति नमस्कार करें-

ॐ गुरुभ्यो नमः ।
ॐ परम गुरुभ्यो नमः ।
ॐ परापर गुरुभ्यो नमः ।
ॐ सर्व गुरुभ्यो नमः ।

इसके बाद 'ऐं' मंत्र का 108 बार जप कर गौयोनि मुद्रा (दाँये या बाये हाथ की मुट्ठी बांधने से कनिष्ठिका अंगुली के मूल के नीचे के भाग में जो योनि की आकृति बनती है, उसे गौयोनि मुद्रा कहते हैं) से गुरु के चरणों में जप सर्पण करें।

फिर गुरु को प्रणिपात होकर नमस्कार करें -

अखण्ड मंडलाकारं व्याप्तं वेन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं वेन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

न गुरोरधिकं तत्वं न गुरोरधिकं तपः ।
 तत्वं ज्ञानं परं नास्ति तस्मै श्री गुरवे नमः ॥
 अज्ञानं तिमिरान्धस्य ज्ञानांजनं शताकद्या ।
 चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥
 नमोऽस्तु गुरवे तस्मै इष्ट देव स्वरूपिणे ।
 यस्य वाग्मृतं हन्ति विषं संसार संज्ञकम् ॥
 भव पाश विनाशाय ज्ञानं दृष्टि प्रदर्शिते ।
 नमः सद्गुरवे तस्मै भुक्ति मुक्ति प्रदायिने ॥
 नराकृति परब्रह्मरूपायाज्ञानं हारिणे ।
 कुलधर्मं प्रकाशाय तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

इस प्रकार गुरुदेव को नमरकार कर वाग्भव बीज मंत्र द्वारा 'ऐं' तीन बार प्राणायाम करे, गुरु को अपने सामर्थ्य अनुसार दक्षिणा अर्पित करे, नियमित रूप से गुरु स्तोत्र तथा गुरु स्तवन का पाठ करने से समस्त कार्य गुरुमय हो कर सफलतादायक बनाते हैं।

साधक को गुरु पूजन के पश्चात् गुरु स्तोत्र एवं श्री गुरु स्तवन का पाठ अवश्य करना चाहिए इसके पश्चात् समर्पण स्तुति एवं गुरु आरती सम्पन्न करें।

साधना सामग्री - 300/-

गुरु स्तोत्र

जीवात्मानं परमात्मानं दानं ध्यानं योगी ज्ञानम् ।
 उत्कल काशी गंगा मरणं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥१॥

प्राणं देहं जेहं राज्यं स्वर्गं भोजं योगं मुक्तिम् ।
 भावर्मिष्टं पुत्रं मित्रं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥२॥

वानं प्रस्थं यति विधि धर्मं पारमहंसं भिक्षुकं चरितम् ।
 साधोः सेवां बहु सुखं भुक्त्वा न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥३॥

विष्णोर्भक्तिं पूजनं रक्तिं वैष्णवं सेवां मातरि भक्तिम् ।
 विष्णोरिव पितृं सेवनं योगं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥४॥

प्रत्याहारं चेन्द्रियं यमनं प्राणायामं न्यासं विधानम् ।
 इष्टे पूजा जप तप भक्तिर्नं गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥५॥

कालीं दुर्गां कमला भुवना त्रिपुरा भासा बजला पूर्णा ।
 श्री मातृंगी धूमा तारा न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥६॥

मातस्यं कौर्मं श्रीवाराहे नरहरि रूपं वामनं चरितम् ।
 नर नारायणं चरितं योगं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥७॥

श्री भृगुदेवं श्रीरघुनाथं श्रीयदुनाथं बौद्धं कल्वयम् ।
 अवतारा दश वेद विधानं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥८॥

गंगा काशी कांची द्वारा मायायोध्यावन्ती मथुरा ।
 यमुना रेवा पुष्करं तीर्थं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥९॥

गोकुलं गमनं गोपुरं रमणं श्री वृंदावनं मथुरुपुरं रटनम् ।
 एतत् सर्वं सुन्दरि! मातर्नगुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥१०॥

तुलसीं सेवा हरिहरि भक्तिः गंगा सागर संगमं मुक्तिः ।
 परममधिकं कृष्णं भक्तिर्नं गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥११॥

एतत् स्तोत्रं पठति च नित्यं मोक्षं ज्ञानीं सोऽपि च धन्यम् ।
 ब्रह्माण्डान्तर्यद् यद् ध्येयं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ॥१२॥

ऋग्वेद उद्घाटक

बटुक भैरव साधना



इस साधना को मुख्यतः साधकजन निम्न प्रयोजनों के लिए सम्पन्न करते हैं -

- ★ मुकदमें में सफलता के लिए
- ★ समाज में पूर्ण पौरुषता एवं निर्भीकता से जीने हेतु
- ★ किसी प्रकार की राज्य बाधा, जैसे प्रमोशन अथवा ट्रांसफर में आ रही बाधाओं से निवृत्ति हेतु
- ★ किसी तंत्र बाधा को समाप्त करने हेतु

इस साधना को किसी भी माह की अमावस्या को प्रारम्भ करनी चाहिए। यह रात्रिकालीन साधना है जिसे रात्रि 10.00 बजे के बाद ही सम्पन्न करना चाहिए। पीली अथवा सफेद धोती धारण कर ऊपर से रक्षा हेतु गुरुमंत्र वाला पीताम्बर ओढ़ लें। किसी पात्र में काले तिल के आसन पर 'बटुक भैरव यंत्र' को स्थापित करें। तेल का अखण्ड दीप साधना काल में जलते रहना चाहिए।

अपने दाहिनी ओर जल से भरा कलश स्थापित करें, उसमें पंच पल्लवों (आम अथवा अशोक आदि किसी वृक्ष के पत्ते) को स्थापित करें। पहले गुरु पूजन करके गुरु मंत्र जप लें। इसके बाद दोनों हाथ जोड़कर भगवान् बटुक भैरव का ध्यान करें -

ध्यान

फणिवर फणिनाथो देव देवाधिनाथः
क्षितिपति वरनाथो वीर वेतात्ननाथः।
निधिपति निधिनाथो योगिनी योगनाथो,
जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्।

विनियोग

इसके बाद दाएं हाथ में जल लेकर विनियोग करें -

ॐ अस्य श्री आपदुद्वाराय बटुक भैरव मंत्रस्य
बृहदारण्यक ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्री बटुक भैरवो
देवता, हीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, भैरवः कीलकं मम
धर्मार्थकाममोक्षार्थं श्री बटुक भैरव प्रीत्यर्थं च जपे
विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

निम्न मंत्र बोलते हुए निर्दिष्ट अंगों का स्पर्श करें -

बृहदारण्यक ऋषये नमः	(शिर)
त्रिष्टुप् छन्दसे नमः	(मुख)
श्री बटुक भैरव देवतायै नमः	(हृदय)
हीं बीजाय नमः	(गुद्ध प्रदेश)
स्वाहा शक्तये नमः	(दोनों पैर)
भैरव कीलकाय नमः	(नाभि)
विनियोगाय नमः	(पूरा शरीर)

यंत्र का पंचोपचार से संक्षिप्त पूजन करें तथा नित्य गुड का भोग लगावें। इसके बान निम्न मंत्र का 'काली हकीक माला' से 11 दिन तक जप करें -

॥ ॐ हीं आपद उद्घारणाय सिद्धये महाबलाय
भैरवाय ॐ नमः ॥

इसके बाद जप को निम्न मंत्र बोलते हुए श्री बटुक भैरव को समर्पित करें -

अन्नेन्न मंत्र जपाच्छयेन कर्मणा।
श्री बटुक भैरवः प्रीयताम् न मम॥

नित्य गुड का जो भोग लगाया जाता है, उसे किसी कुते के आगे डाल कर वापस चले आवें। साधना समाप्ति पर यंत्र व माला को जल में विसर्जित करें।

साधना सामग्री - 330/-

आप भी आवाहन कर सकते हैं मृतात्मा का
जो उत्तर देगी आप द्वारा पूछे गये प्रश्नों का जिससे आप सुलझा सकते हैं रहस्य की गुत्थिया

मृतात्मा आवाहन साधना

मृत्योपरांत सूक्ष्म शरीर से आत्मा निरन्तर विचरण करती रहती है, उसकी इच्छा रहती है कि वह अपने परिवार के सदस्यों से बात कर सके। वह यह बताना चाहती है, कि उसकी मृत्यु किन परिस्थितियों में हुई, यदि उसका मर्डर हुआ तो किसने किया और कहां किया। यदि उसने कहीं धन गाढ़ रखा है, तो वह किस स्थान पर है?

इसके साथ ही उस आत्मा की यह भी इच्छा होती है, कि वह किसी श्रेष्ठ गर्भ से जन्म ले ले और निरन्तर श्रेष्ठ गर्भ की तलाश में रहती है। परन्तु उस जैसी ही लाखों आत्माएं भी इसी प्रयास में रहती हैं। ऐसी स्थिति में जो सरल, सीधी-सादी आत्माएं होती हैं, वे शांत रह जाती हैं और जो कूर आत्माएं होती हैं, जो जीवन काल में उद्दण्ड रही होती हैं, वे तुरंत मनुष्य योनि में नया जन्म लेना चाहती हैं और तीव्रता के इसी आवेश में उस समय जो भी गर्भ खुला होता है, उसमें प्रवेश कर जाती है। इस कशमकश में जिस आत्मा का जब तक पुनः जन्म नहीं हो जाता, तब तक वह अपने परिवार जनों के आस-पास विचरण करना ही पसन्द करती है।

कई बार ऐसा होता है, कि किसी की अचानक मृत्यु हो जाने से कई बातें राज की राज ही रह जाती हैं। मृत्यु के बाद कुछ लोग वसूली करने भी आ जाते हैं, कि हमने आपके पिताजी को इतनी रकम उधार दी थी। परन्तु वे सही कह रहे हैं, इसका उत्तर तो मृतात्मा के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है।

मृतात्मा आवाहन साधना विधि

इस साधना के पूर्व साधक को अपने सामने 'निखिलेश्वरानंद सिद्ध यंत्र' का स्थापन कर सवा लाख गुरु मंत्र का एक बार अनुष्ठान करना अनिवार्य होता है। इसके लिए आप उसी माला का प्रयोग करें, जिससे गुरु मंत्र का जप करते हैं। सुविधानुसार दिन एवं संख्या निर्धारित कर लें।

इस प्रारम्भिक अनुष्ठान के बाद पड़ने वाले प्रथम शुक्रवार को मृतात्मा आवाहन साधना प्रारम्भ की जा सकती है। अपने सामने लाल वस्त्र पर 'आत्मा आवाहन यंत्र' स्थापित कर दें।

इसके दाईं ओर गुरु चित्र तथा बाईं ओर 'निखिलेश्वरानंद

सिद्ध यंत्र' स्थापित करें। धूप प्रज्ञवलित करें। अपने आसन के चारों ओर 'चार मधुसुपेण रुद्राक्ष' स्थापित करें। ये रुद्राक्ष विशेष रक्षा मंत्रों द्वारा सिद्ध होते हैं, तथा इस तीव्र प्रयोग में साधक के लिए एक सुरक्षा चक्र का कार्य करते हैं। फिर 'आत्म आवाहन माला' से निम्न मंत्र की 21 माला जप करें -

मृतात्मा आवाहन मंत्र

// ह्रौं ह्रौं हस्र हस्र उमुक उमुक उरत्मा
उरवाहय जाग्रय स्फुटय फट //

यह 5 रात्रि का प्रयोग है। उसके बाद निखिलेश्वरानंद सिद्ध यंत्र को छोड़ कर सभी सामग्री को लाल कपड़े में बांध कर निर्जन स्थान में गाड़ दें। इससे यह साधना सिद्ध हो जाती है।

प्रयोग विधि - जब भी किसी आत्मा का आवाहन करना हो, तो लकड़ी के बाजोट पर निखिलेश्वरानंद सिद्ध यंत्र को स्थापित कर सुगन्धित अगरबत्ती जला लें तथा उपरोक्त मंत्र में 'अमुक' की जगह जिस आत्मा को बुलाना हो उसका नाम लगाकर मात्र 21 बार मंत्र जप करें। मंत्र जप के समय आत्मा के बिम्ब का मानसिक ध्यान करते रहें, जिससे उसे उपस्थित होने में अनुकूलता प्राप्त हो सके। यदि साधक को अपने सामने धुंधला सा आकार दिखाई दे या फिर किसी प्रकार की कोई गंध का आभास हो, तो उसे आत्मा की उपस्थिति समझना चाहिए। जिस कमरे में यह प्रयोग करें, वहां की पवित्रता, शांत वातावरण एवं मध्मिम प्रकाश आदि का ध्यान रखें।

आत्मा आवाहन के लिए सायंकाल 6 से 7 बजे का समय श्रेष्ठ होता है, आवाहन के समय आप अपने साथ अन्य सदस्यों को भी बिटा सकते हैं, परन्तु आत्मा की आवाज केवल इस साधना में सिद्ध साधक को ही सुनाई देगी। आत्मा के उपस्थित होने पर अत्यंत आदर व सम्मान के साथ शिष्ट भाषा में प्रश्न पूछें। एक बार बुलाने पर बहुत अधिक प्रश्न न पूछें, यदि प्रश्न अधिक हों, तो बाद में फिर कभी उसी आत्मा का आवाहन कर सकते हैं। आत्मा को विदा करते समय धन्यवाद देकर अपनी कृतज्ञता व्यक्त करें।

साधना सामग्री - 430/-

डाक व्यय पत्र ग्राह
करने वाले द्वारा
दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

भारत में डाक
टिकट लगाने
की आवश्यकता
नहीं है।

सेवा में

मंत्र-तंत्र-चंत्र विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यय पत्र ग्राह
करने वाले द्वारा
दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

भारत में डाक
टिकट लगाने
की आवश्यकता
नहीं है।

सेवा में

मंत्र-तंत्र-चंत्र विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यय पत्र ग्राह
करने वाले द्वारा
दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

भारत में डाक
टिकट लगाने
की आवश्यकता
नहीं है।

सेवा में

मंत्र-तंत्र-चंत्र विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

00 से
इस
प्रथ
एक
तीनी
सा
त्य
रते
बल
में
ती;
से
आई
का
गर
ड़िने
ना।
त्रै,

और

आधिकारी अप्रलोक्यों बर्ती मिलती?

यह प्रश्न बहुत से साधकों के मन में मंथन करता रहता है, साधना का मार्ग इतना जटिल नहीं है, जितना जटिल मनुष्य का मन, दृष्टिभाव, एकाग्रता की कमी, अश्रद्धा, और अविश्वास है। गुरु और ईश्वर के प्रति पूर्ण श्रद्धा ही साधना का आधार है, प्रदत्तुत आलेख भी आपके लिए मंथन समान है इसे विचारों और आत्मअवलोकन करें कि कहाँ कमी है और इसका निराकरण क्या है, साधनाएँ मनुष्य के लिए सिद्धि प्राप्ति हेतु ही बनी हैं, धैर्य से करते रहिये सफलता अवश्य मिलती है -

.....

यह प्रश्न तो ऐसे साधक के मन में उठता है जिसकी योग दर्शन में लिखा है -

साधना प्रदान करने वाले गुरु में श्रद्धा नहीं होती, आत्मसमर्पण करने जैसी श्रद्धा नहीं होती। जहां दृढ़ श्रद्धा है, वहां साधन खूब तत्परता से हुए बिना नहीं रहता अतएव इस प्रकार के साधकों को ऐसी खोज करने की फुरसत ही नहीं मिलती। इसलिये साधना में प्रथम आवश्यकता है दृढ़ श्रद्धा की।

श्रीभगवान् ने गीता 4/39 में कहा है -

श्रद्धावाल्लभते ज्ञानं तत्परः संवत्तेनिद्रयः ।
ज्ञानं लब्धवा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ॥

ज्ञानकी प्राप्ति के लिये गुरु के ऊपर परम श्रद्धा अनिवार्य है। श्रद्धा न होने से ज्ञान-साधना तत्परता से नहीं होती और जब तक साधना में तत्परता नहीं आती, तब तक साधना में कोई फल प्रत्यक्ष रूप में नहीं दीखता। यह भाव सूचित करने के लिए श्रीभगवान् ने उससे अगले श्लोक 4/40 में कहा है—

अज्ञश्चाश्रद्धानश्च संशयात्मा विनश्यति।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सखं संशयात्मनः॥

एक तो अज्ञानी है और दूसरे किसी के ऊपर श्रद्धा नहीं रखता, ऐसा मनुष्य सदा संशयग्रस्त रहेगा। स्वयं समझता नहीं और गुरुजन के ऊपर विश्रवास रखता नहीं, ऐसे मनुष्य का संशय कैसे दूर होगा? अतएवं श्रीभगवान् कहते हैं कि इस संशयग्रस्त साधकका यह लोक बिगड़ता है, इसमें उसे सुख नहीं मिलता; इसी प्रकार उसका परलोक भी बिगड़ जाता है

यहां तक हमने देखा कि किसी भी साधना की सफलता के लिये साधना बताने वाले व्यक्ति के प्रति परम श्रद्धा होना अनिवार्य है। किसी भी साधना में सिद्धि के लिये अभ्यास-वैराग्य के प्रसंग में अभ्यास का स्वरूप बतलाते हुए प्राप्तन्जलि

1. दीर्घकाल - साधना दीर्घकालपर्यन्त अडिग श्रब्दा से करनी चाहिये। दीर्घकाल का अर्थ यहां दो वर्ष, ज्ञार वर्ष, दस वर्ष आदि सीमित समय के अर्थ में नहीं है। बल्कि इसका अर्थ है - सिद्धि प्राप्त होने तक। इसलिये सिद्धि प्राप्त होने तक अडिग धैर्य से साधना करते रहना चाहिये।

2. नैरन्तर्येण - अर्थात् साधना नित्य - निरन्तर करनी चाहिये। चार दिन मुस्तैदी से करके दो दिन छोड़ दे तो ऐसा करने से साधना साधना सफल न होगी। इसके लिये नित्य और निरन्तर अर्थात् बीच में नागा किये बिना साधना करते रहना चाहिये।

3. एकाग्रता - दूसरी जगह कहीं ध्यान न देकर केवल साधना में ही चित्त को एकाग्र करना चाहिये। यदि साधना में आदरबुद्धि, भाव और प्रेम न हो तो उसमें एकाग्रता नहीं होती; इसलिये जो कुछ भी करे, वह आदर बुद्धि, भाव और प्रेम से करे। इस प्रकार जो साधना है वह सफल हुए बिना नहीं रहती।

जब दीर्घकाल पर्यन्त मनुष्य साधना नहीं कर सकता। इसका कारण या तो श्रद्धा की कमी है या पुरुषार्थ ही नहीं पाता। चार छः महीने साधना करे और फिर विचार करे कि इस छः महीने से साधना करते आ रहे हैं, परन्तु फल तो कुछ नहीं दिखता। तो यह ठीक नहीं। यह समझने के लिये एक दृष्टान्त लें, योगवासिष्ठ में लिखा है -

कालेज परिपच्चन्ते कषिगभौदयो वथा।

एवमात्मविचारोऽपि शनैः कालेन पच्यते ॥

जैसे बीज बोने के बाद अंकर निकलने में देर लगती है और

माता के उदर में गर्भ में परिपक्व होने में समय लगता है, उसी प्रकार साधना के परिपक्व होने में समय अवश्य ही लगेगा। थोड़ा समय लगता है या अधिक; इसका आधार साधक के काषाय के ऊपर है। जिस साधक का काषाय अल्प प्रमाण में और अच्छा होता है, उसे थोड़े समय में सिद्धि मिल जाती है। जिसका काषाय बड़े प्रमाण में और घटिया होता है, उसे बहुत देर लगती है। भले ही एक ही गुरु के दो शिष्य हो और उनके पास साधना करते हों, तथापि ऊपर लिखे कारणों से एक को जल्दी सफलता मिलती है और दूसरों को देर से।

एक मूँग का दाना बोइये तो तीसरे ही दिन अंकुर आ जाएगा; परंतु कठिन दाना, जैसे बेरका बीज अथवा बेल बो दें, तो उसके अंकुर निकलने में 6-7 महीने लग जायेंगे। इस प्रकार विभिन्न प्रकार के बीज के अंकुर निकलने में अलग-अलग समय लगता है। इसी प्रकार साधना सफल होने में भी समय लगता है।

इसी प्रवृत्ति माता के उदर में गर्भ के परिपक्व होने में भी कुछ समय अपेक्षित होता है। छोटे जीवों को थोड़ा समय लगता है और बड़े प्राणी को विशेष। मानव गर्भ के परिपक्व होने में 270 दिन लगते हैं। अब यदि परदेश गया हुआ पति पाँच महीना बीतने के बाद ही हर महीने पूछने लगे कि पत्नी को क्या बालक हुआ, तो यह प्रश्न जिस प्रकार हास्यास्प्रद जान पड़ेगा, उसी प्रकार साधना के परिपक्व होने के समय पहले ही यदि मन में विचार आवे कि साधना का फल क्यों नहीं दीखता; तो यह भी उसी प्रकार हास्यास्पद होगा।

पूर्ण धैर्यपूर्वक साधक को जबतक सिद्धि प्राप्त न हो जाय, तब तक दृढ़ श्रद्धा के साथ साधना करते रहना चाहिये। यदि बीच में धैर्य टूटने लगा तो सब किया कराया व्यर्थ जायगा।

श्रद्धा की कमी का दूसरा दुष्परिणाम यह होता है कि एक के बाद दूसरी साधना बदलती रहती है और अन्त में किसी में भी निष्ठा नहीं रहती। मनका स्वभाव ही ऐसा है कि यह प्राप्त का आदर नहीं करता; प्राप्त में दोष देखता है और उससे घबराकर अप्राप्त की खोज में दौड़ा करता है।

एक आदमी एक साधना में लगता है। चार-छः महीने या वर्ष-दो वर्ष उसमें ठीक मन लगता है। पश्चात् अकुलाने लगता है और उसमें दोषदृष्टि करके दूसरी अधिक सरल साधना की खोज में लग जाता है। नये साधन में उसे गुण ही गुण दीखता है। अतएव उसे ग्रहण कर लेता है। पश्चात् उसमें चार-छः महीने या वर्ष दो वर्ष रमण करता है और फिर अकुलाकर उसे भी छोड़ देता है। इस प्रकार एक के बाद दूसरी-साधना छूटती फल की प्राप्ति के लिये हनुमान की उपासना करता है। इस

जाती है और जीवन व्यर्थ ही कट जाता है।

साधना के गुण दोष नहीं होते

कोई साधना केवल गुणप्रद या केवल दोषप्रद नहीं होती। इस संसार की रचना ही द्वन्द्वात्मक है। अतएव गुण के साथ दोष, सुविधा के साथ असुविधा, अनुकूलता के साथ प्रतिकूलता रहती ही है। दोष, असुविधा और प्रतिकूलतापर ध्यान न देकर एक ही साधना में मनुष्य लगा रहे, तभी सिद्धि प्राप्त हो सकती है; अथवा तब होती है जब उसमें अविचल श्रद्धा होती है। इस प्रसंग की चर्चा भगवान् ने स्वर्धमापालन के सम्बन्ध की है, वह देखने योग्य है। श्रीभगवान् (गीता 3/35) कहते हैं -

श्रेयान् स्वर्धमर्मो विजुणः परथर्मात्स्वनुष्ठितात्।

अब यहां धर्म के स्थान में साधना शब्द रख दीजिये तो कुछ भी हर्ज न होगा। तब इसका अर्थ यह होगा कि अपनी साधना, भले ही दूसरी साधना की अपेक्षा कम आर्कषक अथवा अधिक श्रमसाध्य जान पड़े तो भी उसमें लगे रहने में ही साधक का कल्याण है। मन दूसरे की साधना देखकर अवश्य कहेगा कि वह साधना सहज साध्य है; परंतु उसके भुलावे में पड़ना नहीं चाहिये और अपनी ही साधना में लगे रहना चाहिये। भगवान् तो यहां तक कहते हैं -

स्वर्धमर्मे निधनं श्रेयः परथर्मो भव्यावहः ॥

(गीता 3/15)

अपनी साधना करते - करते यदि साधक की आयु पूरी हो जाय, तो भी उससे साधक का कल्याण ही है; परंतु एक साधना को छोड़कर दूसरी ग्रहण करने में हानि है।

यही बात साधना की है। निष्ठा एक ही साधना में होती है। जैसे पतिव्रता का पति एक ही होता है, उसी प्रकार साधक की साधना एक ही होती है, गुरु एक ही होता है, उसी प्रकार मंत्र भी एक ही होता है। इसमें यदि बार-बार अदल बदल किया करे तो मनुष्य को कभी भी साधना में सिद्धि मिलनेवाली नहीं है।

साधना के भेद

साधना के दो प्रकार हैं - एक निर्गुण-निराकार और दूसरा सगुण-साकार। सगुण-साकार में मनुष्य राम-कृष्णादि की उपासना करता है। श्रीराम की उपासना करने वाले को कोई भ्रम में डाल दे और कहे कि तुम इस उपासना छोड़ दो; क्योंकि श्री कृष्ण की उपासना में सिद्धि शीघ्र मिलती है। आगे चलकर वह साधक कृष्ण की उपासना को भी छोड़ देता है और गणपति को ले लेता है; फिर गणपति को छोड़कर शीघ्र भी छोड़ देता है। इस प्रकार एक के बाद दूसरी-साधना छूटती फल की प्राप्ति के लिये हनुमान की उपासना करता है। इस

प्रकार यदि एक बार साधना बदली तो फिर उसका कोई अन्त नहीं होता। अमेरिका का एक तलाक का किस्सा यहां अप्रासङ्गिक न होगा। एक स्त्री ने जब पहली बार तलाक दिया तो उसने बहुत ही विचार किया और फिर तलाक दे दिया। दूसरा घर करने के साथ-साथ वर्तमान पति से और अच्छा पति कहां मिलेगा, वह इसकी खोज करने लगी। मनका ऐसा स्वभाव है कि वह प्राप्त वस्तु का आदर नहीं करता। इतना ही नहीं, बल्कि उसका दोष देखने लगता है और अप्राप्त वस्तु के काल्पनिक गुण की ओर ही दृष्टि डालकर उस पर आकर्षित होता है। इस प्रकार उस स्त्री ने एक के बाद दूसरा और दूसरे के बाद तीसरा - इस प्रकार 45 वर्ष की उम्र होते-होते 19 बार तलाक दिया। अन्त में न्यायाधीश ने कहा कि 'मैं आशा करता हूं कि यह अन्तिम तलाक होगा।'

साधना करते रहिये

यही बात साधना की है। एक साधना छोड़कर दूसरी करने से, फिर अनेक प्रकार की साधनाओं की खोज में मन दौड़ता है और एक साधना के बाद दूसरी साधना बदलती जाती है एवं किसी भी साधना में स्थिरता न होने के कारण खाली हाथ मनुष्य मृत्यु को प्राप्त होता है। इसी कारण श्रुति भगवती साधक का अधिकार बतलाते हुए कहली है कि -

यस्य देवे पराभक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ।

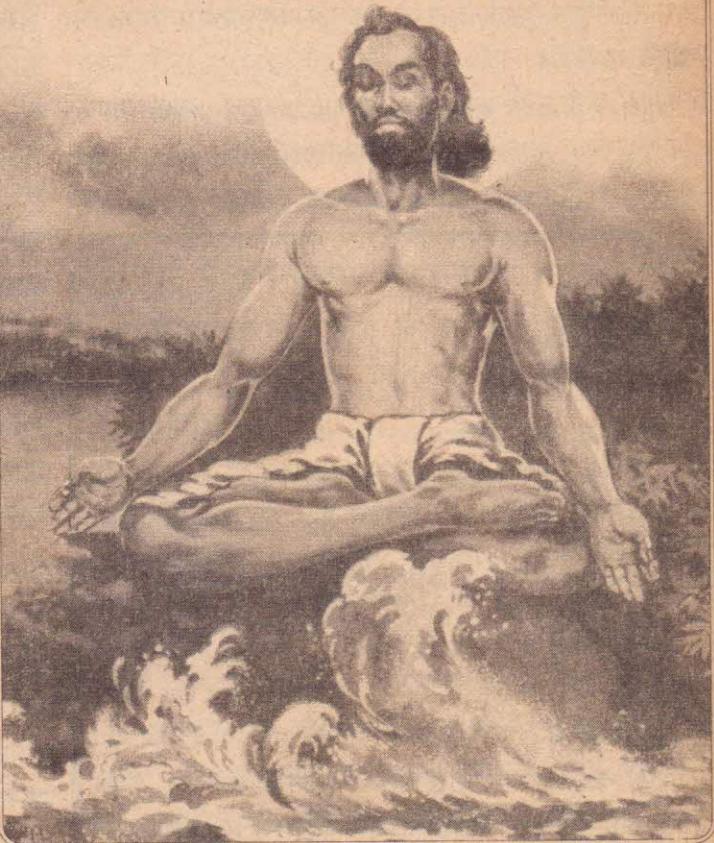
अर्थात् जिस साधक को ईश्वर में पूर्ण अनुराग होता है और जैसी भक्ति ईश्वर में होती है वैसी ही गुरु में होती है, उस साधक को कभी साधना बदलनी नहीं चाहिये। उसके लिये कहा है -

तस्यैते कथिता श्रद्धा प्रकाशन्ते महात्मनः।

अर्थात् जिस मनुष्य में अटूट श्रद्धा है और गुरु में ईश्वर भाव है, उसको जो साधना बतलायी जाती है, वह सिद्ध हुए बिना नहीं रहती।

धैर्य और विश्वास

प्रत्येक साधना में सिद्धिर्पर्यन्त धैर्य रखने की तथा विश्वास न छोड़ने की अनिवार्य आवश्यकता है। मनुष्य अपनी मान्यताओं के वश होकर जो कुछ पढ़ता है या मित्रमण्डली में सुनता है, उसको अनुभव में लाने की आशा करता है और वैसा अनुभव न होने पर साधना पर से विश्वास ही गंवा बैठता है। कोई



कहता है कि 'मुझे तो घण्टा जैसे ध्वनि सुनायी पड़ती है।' कोई कहता है कि 'मुझे तो मधुर बंशी ध्वनि सुन पड़ती है।' किसी को प्रणव का दर्शन होता है, किसी को प्रकाश का दर्शन होता है और वह भी लाल, नील, उजले प्रकाशक। किसी को राम-कृष्ण आदि देवताओं का तथा अम्बिका, तो किसी को हनुमान जी का दर्शन होता है। इस प्रकार की बहुत सी बातें मनुष्य के पढ़ने और सुनने में आती हैं। भगवान् ही विभिन्न रूपों में प्रकट होते हैं। मन जिस भावना के ऊपर केन्द्रित होता है, उसी भावना के अनुसार उसे दीखता है। परंतु वैसा ही दर्शन दूसरे को हो, यह आवश्यक नहीं है। इसलिये साधक को ऐसी मान्यता में नहीं फँसना चाहिये, उसे अपनी साधना में अड़िग धैर्य से अग्रसर होना चाहिये। गुरु वशिष्ठ कहते हैं -

साधनं सफलं तस्य विज्ञेयं यस्य सन्मतेः।
दिनानुदिनमायाति मानदं भोग्यैनुता॥

यहां मूल में 'विचार' शब्द है। परंतु विचार एक साधन मात्र है। इसलिये 'विचार' के लिये 'साधन; शब्द का प्रयोग किया है जो गलत नहीं कहा जा सकता। वशिष्ठ ऋषि के कहने का तात्पर्य यही है कि साधन सफलता पूर्वक ठीक तौरपर हो रहा है, यह तभी समझो जब साधक के मन की भोग-लोलुपता

दिन-प्रतिदिन शांत होती जाय। जिस साधक की इच्छा हो वह रही है या नहीं।

साधना में श्रद्धा के बाद दूसरी आवश्यकता अडिग धैर्य की है। जब तक सिद्धि प्राप्त नहीं हो जाती, धैर्य पूर्वक अपनी साधना में लगे रहना चाहिये। यदि हम प्रतिदिन साधना करते

जायं और वह भाव से तथा प्रेमपूर्वक हो तो धीरे-धीरे पुराने संस्कार धुलते जायेंगे और नये संस्कार पड़ते जायेंगे। यह काम बहुत धीरे-धीरे होना चाहिये। उसमें कितनी प्रति हो रही

है, यह जानने का कोई साधना नहीं है। इसी के कारण साधक घबरा जाता है और अधिक-से-अधिक चार-पांच वर्ष साधना करके फिर उसे छोड़ देता है। जो कार्य धीमी गति से होता है, वह पूरा हो तभी उसकी सिद्धि देखने में आती है, यही बात साधना में समझनी चाहिये। चित्त का संस्कार अवश्य धुलता है, नया शुभ संस्कार पड़ता जाता है। परंतु जबतक सारे संस्कार धुल न जायं और उनके स्थान में शुभ संस्कार दृढ़ न हो जायं, तब तक कोई परिणाम देखने में नहीं आता। साधना का क्रम पूरा होने पर जब शुभ संस्कार का उदय होता है, तभी उसका अनुभव होता है; और तब साधक के आनन्द का पार नहीं रहता। उस आनन्द का वाणीद्वारा वर्णन नहीं हो सकता। उससे भी अधिक आनन्द साधना पूरी होने पर साधक को होता है।

जिस साधक में असीम धैर्य तथा उत्साह है, वही साधक सिद्धि प्राप्त करता है। जो धैर्य छोड़ बैठता है और जिसका उत्साह जाता रहता है, वह साधक साधना बीच में छोड़ देता है। कोई 1000 दिन साधना करता है और उत्साह मन्द होने पर छोड़ देता है। अधिक धैर्यवान् साधक 2000 दिन साधना करता है और धैर्य में कभी आने पर उसे छोड़ देता है, कोई 3000 दिन तक साधना करता है और फल समीप आता हुआ भी न दीखने से साधना छोड़ देता है और सिद्धि वंचित रह जाता है। कोई 3800 दिन तक साधना करता है और धैर्य में कभी आने के कारण उत्साह मन्द होने पर उसे छोड़ देता है।

संकल्प में जल ग्रहण क्यों?

अनृते खलु वै क्रियमाणे वरुणे गृहति।

(तैत्तिरीयोपनिषद् १/७/२/६)

वेदादि शास्त्रों में हाथ में जल लेकर संकल्प करने का विधान इसलिए है, क्योंकि जल में वरुण का निवास है और उसके साक्ष्य में जो प्रतिज्ञा की जाएगी, उसका निर्वाह न करने पर वरुणदेव के कोपभाजन होंगे। जल, वायु, अग्नि ये प्रत्यक्ष देवता हैं, जो अनुभूत हैं, जिन्हें देखा या स्पर्श किया जा सकता है। इसलिए इन प्रत्यक्ष देवों की साक्षी में संकल्प लिया जाता है। जल, वायु आदि सर्वत्र उपस्थित रहते हैं, अतः जब भी साधक अपने संकल्प से च्युत होता है, तो जल अथवा अग्नि आदि को देख कर पुनः अपने संकल्प का स्मरण हो आता है, क्योंकि ये ऐसे देव हैं, जिनकी उपस्थिति साधक के समक्ष

अधिकांश समय बनी ही रहती है।

साधना का मूल शब्द

यह तो एक दृष्टान्तमात्र है। यह इस बात को समझाने के लिये है कि साधना में अडिग श्रद्धा और अटूट धैर्य होना चाहिये। वस्तुतः साधना की सिद्धि के लिये समय की कोई सीमा नहीं बांधी जा सकती; क्योंकि इसका आधार अन्तःकरण के दोषों की निवृत्ति के ऊपर है। दोष अधिक हों तो अधिक समय लगेगा और कम हों तो कम समय लगेगा। ध्रुवजी को छः महीने में ही भगवान् का दर्शन हो गया था। खटवाङ् राजा को क्षणभर में ज्ञान होकर मुक्ति मिल गयी। विद्यारण्य मुनि ने गायत्री के 23 पुरश्चरण किये, परंतु कोई सिद्धि नहीं प्राप्त हो सकी। किन्तु लाभ यह हुआ कि उनको उत्कट वैराग्य हो गया और उन्होंने संन्यास ले लिया। संन्यास लेने के बाद गायत्री देवी उनके ऊपर प्रसन्न हुई और प्रकट होकर वर मांगने के

लिये कहा। विद्यारण्य मुनि बोले - 'माताजी! अब तो मैं सन्यासी हूं और मुझे कोई कामना नहीं है; परंतु आपने पहले दर्शन क्यों नहीं दिये? यह मेरी समझ में नहीं आता।' तब गायत्री देवी ने कहा - 'तुम्हारे 24 महापातक थे। 23 पुरश्चरण से 23 पाप धुल गये। यदि एक और पुरश्चरण किया होता तो तुमको मेरा दर्शन हो जाता। किन्तु तुमने वैसा न करके, सन्यास ले लिया और सन्यास की दीक्षा मात्र से तुम्हारा 24 वां पाप भी दग्ध हो गया। इस कारण मैं आज तुम्हारे समक्ष प्रकट हो गयी हूं।'

विद्यारण्य मुनि ने जैसे धैर्य गंवाकर साधना छोड़ दी थी, उसी प्रकार आजकल बहुत लोग एक निश्चित समय तक कोई फल प्राप्ति होते न देखकर साधना छोड़ देते हैं। प्रथम आवश्यकता तो अविचल श्रद्धा की है। ऐसी श्रद्धा हो तो धैर्य टिके और तभी उत्साह से साधना हो सके।

साधना छूटनी है अपने दोष के कारण और साधक समझता है कि यह साधना ही ठीक नहीं है अथवा गलत है। ऐसी अधकचरी साधना करने वाले मनुष्य ही शास्त्र की निन्दा करते हैं और लोगों में कहते फिरते हैं कि साधना और सिद्धि की बात केवल मनुष्य को बहाकाने के लिये है और ऐसा मनुष्य यदि विद्वान् होता है तो अपनी आकर्षक शैली में इस विषय पर पुस्तकें लिख डालता है।

साधना विपरीताश्चेद् राक्षसा एव केवलम् ।

समाज में अधिकांश लोग तो शास्त्र में परिचित नहीं होते। इस कारण इस प्रकार के लेखों से वे प्रभावित हो जाते हैं और नास्तिक बन जाते हैं। वे अपनी पुस्तक में यह भी निरूपण करते हैं कि आत्मसाक्षात्कार जैसी कोई बात होती ही नहीं, यह तो अपने आपको धोखा देने की बात है। अंग्रेजी में इसको वे लोग Auto-Hypnotism कहते हैं।

साधना के बाधक तत्व

धैर्यविहीन साधक साधन छोड़ते समय अपने मनको समझाता है कि इतने लम्बे समय तक भाव से साधना करने पर भी फल कुछ न मिला। कोई प्रतिबन्ध बाधक हुआ होगा। प्रतिबन्ध तीन प्रकार के हैं (1) भूतः, (2) वर्तमान और (3) भावी।

भूत प्रतिबन्ध: भूतकाल में अनुभूत पदार्थ तथा स्त्री पुरुष आदि एवं घर-बार आदि का साधना के समय स्मरण होना। इसको 'भूत-प्रतिबन्ध' कहते हैं। इसकी निवृत्ति अपने पुरुषार्थ से ही होती है। इसका उपाय भगवान् ने गीता अध्याय 6 श्लोक 36 में बताया है। मन जहां-जहां जाय, वहां से उसको हटावे और साधना में लगावे। इसके सिवा भूतप्रतिबन्ध के

मिटाने का दूसरा कोई उपाय नहीं है।

वर्तमान प्रतिबन्ध - मुख्यतः चार प्रकार का होता है। (1) कुर्तक, (2) दुराग्रह, (3) मन्दबुद्धि और (4) विषयासक्ति। इनमें कुर्तक और दुराग्रह केवल पुरुषार्थ से दूर हो सकते हैं और मन्दबुद्धि तथा विषयासक्ति गुरु की कृपा से दूर होती है। इसमें भी पुरुषार्थ की आवश्यकता तो पड़ती ही है, पर मुख्यता गुरु-कृपा की होती है।

भावी प्रतिबन्ध

यह प्रारब्ध का ही एक भाग है। कभी-कभी एक ही कर्म ऐसा होता है कि उसका फल दो तीन जन्मों में जाकर भोगना पड़ता है। परंतु इस भावी प्रतिबन्ध कथाएं बहुत देखने में नहीं आती। मेरी जानकारी अबतक जड़भरत और वामदेव की कथा के सिवा दूसरी कोई नहीं आयी है।

इस प्रतिबन्ध की व्यवस्था साधक के लिये जानना जरूरी नहीं है। यह तो गुरु के ऊपर है। वही प्रतिबन्ध स्वरूप को समझकर उसकी निवृत्ति का उपाय बतला सकते हैं।

एक साधक था, वह जब साधना करने बैठता, तभी 'किं जरातम्' यह प्रश्न खड़ा हो जाता। कुछ दिन तो उसने धैर्य रखा, परंतु बार-बार इस प्रश्न को उठाते देखकर उसने इस विषय में गुरु से निवेदन किया। गुरु ने तुरंत अपनी अटकल लगायी और शिष्य से पूछा कि 'तुम जब घर से निकले, उस समय घर के लोगों की क्या स्थिति थी?' सबकी स्थिति का वर्णन करते हुए उसने बतलाया कि वह घर से निकला, उस समय उसकी स्त्री गर्भवती थी, बच्चा होने वाला था और उसका क्या बालक पैदा होता है? यह जानने के लिए उसका मन केन्द्रित हो गया था। इसी कारण उसके मन में यह बार-बार प्रश्न उठा करता था। गुरु ने तुरंत ही शिष्य को आज्ञा दी कि घर जाकर पता लगाओ कि स्त्री को बालक हुआ है। ऐसा करने पर उसका 'किं जरातम्' का प्रश्न शांत हो गया। इस प्रकार प्रतिबन्ध का सिद्धान्त गुरु के लिये उपयोगी है। साधक को इसका उपयोग नहीं करना चाहिये।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि साधक में श्रद्धा की प्रथम आवश्यकता है। उसके साथ-साथ असीम धैर्य और पूर्ण उत्साह भी होना चाहिये। इन तीनों में एक की भी कमी होने से साधना पूर्ण नहीं होती। अतएव जो साधक अपनी साधना को पूर्ण करना चाहता है, उसे गुरु में अविचल श्रद्धा रखनी चाहिये तथा धैर्य और उत्साह अन्ततक बनाये रखना चाहिये। इसके सिवा सिद्धि के लिये दूसरा कोई मार्ग नहीं है।

कक्षरों की वाणी

मई

मेष -

इस समय आपको धैर्य और विश्वास की बहुत अधिक आवश्यकता है। जैसे-जैसे आगे बढ़ता जायेगा, आपको पुनः पूर्व की भाँति अनुकूलता प्राप्त होगी। अपने वर्तमान कार्य पर पूरा ध्यान देते हुए, नवीन कार्यों हेतु अच्छे समय का इन्तजार करें। यह माह आपके स्वास्थ्य की दृष्टि से उचित नहीं है, स्वास्थ्य को लेकर थोड़ी चिन्ता रह सकती है। इस माह किसी भी प्रकार का अपव्यय ना करें। महिलाओं के लिए यह माह परिवार में सुख-समृद्धिदायक होगा। इस माह अनुकूलता हेतु 'मांतर्गी त्रैलोक्य कवच' (मार्च 2005) सम्पन्न करें। तिथियां - 1, 3, 7, 10, 12, 18, 19, 22, 26, 27 हैं।

वृष -

आने वाले माह में आपको जीवन की हर सच्चाई का परिचय होगा तथा आपके द्वारा किये गये परिश्रम का पूर्ण फल आपको अपने इष्ट की विशेष अनुकृपा से ही प्राप्त हो सकता है। अच्छा होगा आप किसी भी प्रकार का नवीन कार्य नहीं करें तथा ज्ञात-अज्ञात शत्रुओं से सर्तक रह कर कोई नया व्यवहार करें। अभी समय आपके प्रतिकूल है अतः आपको संयम और धैर्य की आवश्यकता है, आप अपने कार्य के प्रति पूरी ईमानदारी बरतें। फिर भी आप अपने कर्म और कर्तव्यों में सार्थक रहेंगे। इस माह 'पारदेश्वर शिवलिंग साधना' (फरवरी 2005) करें। तिथियां - 2, 4, 6, 9, 10, 11, 15, 21, 22, 25, 31 हैं।

मिथुन -

पुराने समय से आ रही सभी बाधाओं का निराकरण करने के लिये आपको कठिन परीश्रम की नितांत आवश्यकता है। फिर भी आप हर तरह के विशेष कार्य के भविष्य के लिये छोड़ दें और यथा संभव अपने कार्यक्षेत्रों को बिना वाद-विवाद, नम्रता और प्रेम से पूर्ण विस्तार का मौका दें। यही किया आपके भाग्योदय के लिये सहायक रहेगी। परिवारजनों से किसी भी प्रकार का वाद-विवाद उचित नहीं होगा। 'बगलामुखी साधना' (अप्रैल 2005) करें। तिथियां - 3, 4, 6, 8, 11, 13, 17, 22, 23, 25, 30, 31 हैं।

कर्क -

समय की अनुकूलता का लाभ उठाते हुए अपने निर्धारित लक्ष्य का प्राप्त करने का प्रयत्न करें। समाज में आपका मान-सम्मान, प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आपको आपके स्वजनों, मित्रों, परिवारजनों से विशेष सहयोग प्राप्त होगा जिसकी सहायता से आप अपने कार्य क्षेत्र में बढ़ोतरी कर पायेंगे। किसी विशेष यात्रा से आपको आर्थिक लाभ भी प्राप्त होगा। माह के अंत में आय के स्रोत में विशेष वृद्धि होगी। परिवार में उत्साह एवं उमंग का वातावरण रहेगा। इस माह आप 'शनि साधना' (अप्रैल 2005) सम्पन्न करें। तिथियां - 1, 5, 7, 8, 14, 15, 19, 20, 26, 27, 29 हैं।

सिंह -

आय और व्यय के बीच में फंसे हुए समीकरण को सुलझाने के लिये आपको काफी मेहनत करनी पड़ सकती है। धैर्य और आत्मविश्वास ही आपके मित्र होंगे। अपने विश्वास के द्वारा ही आप मार्ग में आने वाली कठिनाईयों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। किसी के सहयोग की अपेक्षा नहीं करें। आकस्मिक धन लाभ एवं पारिवारिक जिम्मेदारीयों का अनुभव भी आपको पूर्ण प्रसन्नता देगा। परिवार में मांगलिक कार्य हाने से मन में प्रसन्नता अनुभव होगी। इस माह अनुकूलता हेतु आप 'तारा साधना' (अप्रैल 2005) सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 1, 2, 3, 6, 8, 10, 17, 19, 20, 26, 28, 31 हैं।

कन्या -

अभी समय आपके लिये बहुत अनुकूल है अतः आप अपने भविष्य की योजनाओं पर कार्य कर सकते हैं। भूमि, वाहन, सम्पत्ति निर्माण के लिये समय बहुत ही अनुकूल है। धन का अपव्यय ना करते हुए उसे उचित कार्य में ही व्यय करें। शत्रुपक्ष द्वारा आपके मार्ग में परेशानियां पैदा की जा सकती हैं। अतः व्यर्थ के वाद-विवाद से दूर ही रहें। परिवार जनों का पूर्ण सहयोग मिलने से कार्य कुशलता में वृद्धि होगी। आप 'भाग्योदय कवच' (जनवरी 2005) धारण करें। तिथियां - 2, 4, 10, 11, 12, 13, 15, 19, 20, 21, 28, 29 हैं।

सर्वार्थ, अमृत,
त्रिपुष्कर, सिंह योग

सिंह योग 7, 25, 31 मई / 8, 11, 25 जून ☆ सर्वार्थ सिंह योग 6 मई / 2, 3, 6, 25, 30 जून ☆ अमृत सिंह योग 6 मई ☆ द्वि-

इस मास ज्योतिष की दृष्टि से : इस मास देश की राजनैतिक स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। प्रजातंत्र के चारों स्तम्भों, लोकसत्ता, राज्यसत्ता, न्यायपालिका तथा प्रेस में आपस में विद्वेष बढ़ेगा। जिसका असर निश्चित तौर पर पूरे देश पर पड़ेगा। मानसून जल्दी आने से फसल में वृद्धि होगी। लेकिन मंहगाई दर बढ़ी रहेगी। व्यापारी वर्गों के लिये माह अनुकूल रहेगा।

तुला -

यह माह आपको हर तरह से अनुकूलता प्रदान करने के लिये सहायक सिद्धि होगा। रुके हुए कार्यों का सम्पादन होने से मन प्रसन्न होगा तथा साथ ही साथ इन कार्यों से आपको आर्थिक लाभ भी प्राप्त होगा। आपकी छवि समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में उभरेगी। इस माह आपको किसी विशेष यात्रा पर जाने का योग बन रहा है जो आपके भविष्य निर्माण में अवश्य ही सहायक सिद्धि होगी। व्यापारियों को माह के उत्तरार्ध में विशेष अनुकूलता प्राप्त होगी। इस माह 'काल सिद्धि साधना' (फरवरी 2005) करें। तिथियाँ - 1, 2, 4, 5, 11, 12, 13, 15, 19, 20, 22, 23, 24, 25 हैं।

वृश्चिंचक -

समय आपके लिये धीरे-धीरे अनुकूल बनता जा रहा है। आपके जीवन में यह समय मनोरंजन एवं परिवारिक सौहार्द से आनन्ददायक होगा। आप अपने मित्रों एवं परिवार के दायित्वों को निभाते हुए अपने आपको सक्षम एवं पूर्ण गतिशील पायेंगे। परिवार में होने वाले किसी भी तरह के विवाद से आप पूर्णता दूर रहें। इस माह आप अपने वाणी एवं कर्मक्षेत्र में विशेष सर्तकता बरतें, शत्रु पक्ष आपको बाधित करने का प्रयत्न करेगा। इस माह आप 'मानसिक शांति हेतु - साबर साधना' (अप्रैल 2005) सम्पन्न करें। तिथियाँ - 2, 5, 6, 7, 10, 14, 15, 17, 19, 23, 24 हैं।

धनु -

समय आपके अनुकूल है, अपनी समस्याओं एवं बाधाओं पर ध्यान देने की अपेक्षा अपने कार्यक्षेत्र में वृद्धि करें। आपको विशेष लाभ प्राप्ति के योग बन रहे हैं। भाग्य आपके साथ है फिर भी आप अपने कर्म पर पूर्ण विश्वास रखते हुए अपने कार्य को साकार रूप दें। स्वास्थ्य की दृष्टि में यह माह आपके लिये उचित नहीं है। अतः अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। स्त्रियों को इस माह विशेष सावधानी रखने की जरूरत है। विद्यार्थी वर्ग को अधिक मेहनत की आवश्यकता है। इस माह आप 'शांति कर्म तंत्र साधना' (जनवरी 2005) करें। तिथियाँ - 5, 6, 10, 17, 21, 22, 27, 28, 31 हैं।

मकर -

यह माह आपके लिये भाग्योदय कारक सिद्धि होगा जो आपकी सफलता के नये द्वार खोलने में सहायक सिद्धि होगा। निश्चित ही इस माह व्यापारी वर्ग, नौकरी पेशा वर्ग लाभन्वित रहेंगे। अर्थ के मामले में आपको आकस्मिक परिवर्तन का अनुभव प्राप्त हो सकता है। इस माह धार्मिक स्थलों की यात्रा का पूर्ण योग बना रहा है। फिर भी आप यात्रा में विशेष ध्यान रखें, अपरिचित व्यक्तियों से सर्तक रहें। विद्यार्थी वर्ग के लिये विशेष अनुकूलता होगी। इस माह आप 'पारद श्रीयंत्र साधना' (अक्टूबर 2004) सम्पन्न करें। तिथियाँ - 1, 2, 4, 5, 11, 12, 13, 15, 19, 20, 22, 23, 24, 25 हैं।

कुंभ -

यह माह आपको विशेष कार्यभार, मनोकामना सिद्धि के साथ प्रदान करेगा। आपको अपने कार्य क्षेत्र में पूर्ण अनुकूलता मिलेगी। आप समय का अपव्यय न करते हुए, अपने कार्य को पूर्ण करने में सर्तकता बरतें। इस माह आपको कार्य क्षेत्र से सम्बन्धित किसी विशेष यात्रा पर जाना पड़ सकता है। यात्रा आपके लिये पूर्ण सहायक सिद्धि होगा। संतान का विशेष ध्यान रखें। शत्रुपक्ष से सावधान रहें। इस माह आप 'शनि साधना' (अप्रैल 2005) सम्पन्न करें। शुभ तिथियाँ - 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 18, 19, 21, 28, 29, 30 हैं।

मीन -

संयम और नियम ही जीवन में आपको पूर्णता दे सकता है, जल्दबाजी में आकर कोई विशेष निर्णय न लें। किसी भी विशेष कार्य को करने से पहले अपने मित्रों, शुभचिन्तकों से सलाह अवश्य प्राप्त कर लें। किसी भी प्रकार की समस्या, बाधा एवं कार्य में होने वाली विलम्बता को सुलझाने के लिये अपने इष्ट पर पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास के साथ समर्पित रहें। इस माह आप अनुकूलता हेतु 'मोहिनी महाविद्या' (अप्रैल 2005) अवश्य सम्पन्न करें। तिथियाँ - 5, 6, 10, 11, 12, 14, 21, 22, 24, 29, 30, 31 हैं।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

04	मई	वैशाख कृष्ण पक्ष-11	बुधवार	बैद्यनाथी एकादशी व्रत
05	मई	वैशाख कृष्ण पक्ष-12	गुरुवार	प्रदोष व्रत
08	मई	वैशाख कृष्ण पक्ष-30	रविवार	अमावस्या व्रत
11	मई	वैशाख शुक्ल पक्ष-03	बुधवार	अक्षय तृतीया
20	मई	वैशाख शुक्ल पक्ष-11	शुक्रवार	मोहिनी एकादशी
21	मई	वैशाख शुक्ल पक्ष-12	शनिवार	शनि प्रदोष व्रत
22	मई	वैशाख शुक्ल पक्ष-14	रविवार	नृसिंह जयंती
23	मई	वैशाख शुक्ल पक्ष-15	सोमवार	पूर्णिमा व्रत

नक्षत्रों की वापरी

जून

मेष -

यही समय आपको नवीन योजनाओं में, कार्य में जनसम्पर्क में यश एवं सम्मान बढ़ायेगा। यह समय आपके अपने कार्य क्षेत्र के लिए पूर्ण अनुकूल है तथा अर्थ एवं आय के स्रोत में वृद्धि होगी। यदि आप सजग रहे भी। मन में उत्साह रहेगा, विद्याथी वर्ग सही मार्गदर्शन लेकर ही आगे बढ़े। भविष्य की निर्माण में मुख्य भूमिका वाला यह माह स्त्रियों के लिए भी श्रेष्ठकर सिद्ध होगा। स्वास्थ्य पर पूर्ण ध्यान रखें। वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। इस माह अनुकूलता हेतु 'षोडश योगिनी साधना' (मार्च 2005) सम्पन्न करें। तिथियां 2, 4, 6, 9, 11, 16, 18, 21, 25, 28, 30 हैं।

कक्ष-

इस माह आप अपनी योजनाओं तथा रूपके हुए कार्यों को पूर्ण कुशलता के साथ सम्पन्न करेंगे। विशेष लाभ की से मानसम्मान व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। शत्रुपक्ष आपकी सफलता में बाधा एवं परेशानियां उत्पन्न करेगा। आप अपने व्यवहार द्वारा अपने स्वजनों का ही नहीं, शत्रुओं का भी मन जीत सकते हैं। अपने कार्यों में सफलता हेतु आप अपने इष्ट तथा शिव के प्रति पूर्ण समर्पित रहें। परिवार में मांगलिक आयोजन प्रसन्नता प्रदान करेगा। प्रयत्नों से बेरोजगारों युवकों को अवश्य सफलता प्राप्त होगी। आप 'बगलामुखी साधना' (अप्रैल 2005) करें। तिथियां - 2, 5, 6, 11, 12, 13, 18, 21, 22, 23, 26, 28 हैं।

वृष-

आप इस माह अधिकांश व्यस्त रहते हुए अपने आपको कार्यों के भार से परिचित होंगे ही। अपनी छिपी हुई क्षमताओं का विकास आप इसी माह में करेंगे। जरूरत पड़ने पर आपके इस क्षमता का परिचय भी देना पड़ सकता है। अतः आप तैयार रहे और अपने इष्ट पर पूर्ण विश्वास रखें। नवीन कार्य प्रारम्भ हेतु अभी समय अनुकूल नहीं है। परिवार के मामलों में संयम बरतना हितकर रहेगा। महिलाओं के व्यय में वृद्धि हो सकती है। आप 'मांतगी त्रैलोक्य कवच' (मार्च 2005) करें। तिथियां - 3, 5, 7, 8, 13, 16, 17, 20, 24, 26, 28 हैं।

सिंह-

लम्बे इंतजार के बाद समय आपके अनुकूल आ रहा है। इस माह आपको मानसिक शांति का अनुभव होगा। नवीन कार्यों तथा रूपके हुए कार्यों के प्रारम्भ होने से लाभ भी प्राप्त होगा। समय का उपयोग करते हुए अपने कार्यों को स्थायित्व प्रदान करें। धन के अपव्यय से बचें। किसी यात्रा विशेष पर जाना पड़ सकता है। अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। स्त्री वर्ग किसी भी प्रकार के वाद-विवाद से बचें। अनुकूलता हेतु आप 'पारद गणपति साधना' (जनवरी 2005) करें। तिथियां - 2, 4, 7, 9, 13, 14, 15, 21, 23, 24, 27, 30 हैं।

मिथुन-

यही समय है कि आप अपने रूपके हुये कार्य को पूर्ण कर देंगे। वाद विवाद शत्रुपक्ष से सजग रहे। अपनी वाणी एवं लेखनी पर विशेष ध्यान देवे। नवीन कार्यों के बजाय अपने ही कार्यक्षेत्र पर अग्रसर रहे। यही आपका श्रेष्ठत्व प्रदान करेगा। आयव्यय बराबर बढ़चढ़ कर आपकी मानसिक परेशानी के लिए बाध्य करेगा पर आप इसपर विजय श्री प्राप्त करेंगे। किसी ओर के सहयोग की आशा न करते हुए अपने आप पर निर्भर रहें। भविष्य में आपको पूर्ण अनुकूला मिलेगी। इस माह आप 'स्फटिक शिवलिंग साधना' (फरवरी 2005) करें। तिथियां - 2, 5, 7, 9, 12, 14, 16, 18, 21, 25, 28, 30 हैं।

कन्या-

हर्षोउल्लास भरा यह माह आपके जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन कर सकता है। आध्यात्म के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। नये-नये व्यक्तियों से आपका सम्पर्क होगा, जिससे जीवन के प्रति आपकी सोच में परिवर्तन आयेगा। इस माह आपको कोई विशेष यात्रा पर भी जाना पड़ सकता है जो कि आपके लिये बहुत शुभ सिद्ध होगी। आपकी समाज में यश एवं प्रतिष्ठा बढ़ेगी। परिवारजनों से किसी भी प्रकार का वाद-विवाद नहीं करें। व्यापारियों के लिये माह शुभ ही सिद्ध होगा। आप 'षोडश योगिनी साधना' (मार्च 2005) करें। तिथियां - 1, 3, 5, 6, 9, 16, 18, 23, 24, 30 हैं।

सर्वार्थ, अमृत,
त्रिपुष्कर, शिंदि योग

सिद्ध योग 8, 11, 25 जून / 13, 19, 21, 22, 27 जुलाई ☆ सर्वार्थ सिद्ध योग 2, 3, 6, 25, 30 जून / 1, 4, 16, 18, 20, 26 जुलाई
☆ द्विपुष्कर योग 19, 28 जून / 3 जुलाई ☆ त्रिपुष्कर योग 23 जुलाई ☆

इस मास ज्योतिष की वृष्टि से : यह माह देश के लिए उचित नहीं है। भारत के विभिन्न राज्यों में सत्ता के लिए लड़ाई-झगड़े बहुत बढ़ेंगे। कई जगह बाढ़ की स्थिति आयेगी। विशेषकर उड़ीसा, बिहार और बंगाल के लिए योग अच्छे नहीं हैं। जान-माल का नुकसान होगा। समुद्री तूफान पुनः आने की आंशका है। देश में धार्मिक उन्माद में भी तेजी आयेगी।

तुला -

पिछले माह के अंत में प्रारम्भ हुए कार्य इस माह आपको पूर्ण सफलता प्रदान करेंगे। इस माह आपको लम्बी दूरी की यात्राओं पर जाना पड़ सकता है। इन यात्राओं से आपके व्यय में वृद्धि होगी। आपके द्वारा की गई मेहनत का आपको पूर्ण लाभ नहीं प्राप्त होने से मन दुखी होगा। परंतु आप चिंता नहीं करें भविष्य में आपको आपके कार्यों का पूर्ण लाभ प्राप्त होगा। विद्यार्थीयों और बेरोजगारों को सफलता हेतु परिश्रम की आवश्यकता है। इस माह सफलता हेतु आप 'हनुमान साधना' (दिसम्बर 2004) सम्पन्न करें। तिथियाँ - 3, 7, 8, 9, 16, 17, 19, 20, 21, 27, 30, 31 हैं।

वृश्चिक -

अपनी मानसिकता में बदलाव लायें, हर चुनौती को स्वीकार करें। आप किसी भी प्रकार की चुनौती को स्वीकार करने में सक्षम हैं। आपका साहस ही आपको लाभ देगा। वाद-विवाद को सुलझाने के लिये समय आपके लिये अनुकूल है। वाद-विवाद में मित्रों नथा सहयोगीयों से परामर्श अवश्य प्राप्त करें। धार्मिक स्थलों की यात्रा आपके लिये सुखप्रद सिद्ध होगी। परिवार के सदस्यों, स्वजनों, बन्धुओं से प्राप्त सहयोग आपके विश्वास में वृद्धि करेगा। विद्यार्थी मेहनत से सफलता प्राप्त करेंगे। इस माह आप 'जया दुर्गा साधना' (मार्च 2005) करें। शुभ तिथियाँ - 3, 4, 9, 13, 16, 18, 19, 22, 27, 30 हैं।

धनु -

श्रेष्ठ कर्म और धर्म यह दो सफलता के रथ के पहिये हैं। आप अपने कर्म क्षेत्र को बलवान करते हुए, अपने इष्ट के प्रति पूर्ण समर्पित रहें। इससे आपको अवश्य ही लाभ प्राप्त होगा। आप अपनी संकल्प शक्ति द्वारा परेशानियों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। अपने कार्य पर ध्यान दें, समय आपके अनुकूल है। अच्छे समय का उपयोग करें तथा व्यर्थ के वाद-विवाद से बचें। व्यर्थ के वाद-विवाद में आपका ही समय खराब होगा। आर्थिक लाभ प्राप्त नहीं होने से मन अप्रसन्न होगा, अपव्यय से बचें। आप 'हिंदिम्बा यंत्र' (अप्रैल 2005) करें। तिथियाँ - 2, 3, 5, 7, 8, 10, 11, 13, 20, 23, 28, 30 हैं।

मकर -

मन उत्साह और उमंग से भरा रहेगा, जिससे आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। इस माह आप अपने रूपे हुए कार्यों तथा नवीन कार्यों को प्रारम्भ कर सकते हैं। दूसरों पर निर्भर रहने की अपेक्षा अपना कार्य आप स्वयं सम्पन्न करें। यह माह आपके लिये बहुत शुभ है, इस माह आप नयी गाड़ी, मकान, सम्पत्ति आदि क्रय कर सकते हैं। माह के अंत में आकस्मिक लाभ का योग भी बन रहा है। संतान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। इस माह आप 'तारा साधना' (अप्रैल 2005) अवश्य सम्पन्न करें। शुभ तिथियाँ - 3, 5, 6, 8, 16, 17, 19, 20, 22, 24, 27, 28, 30 हैं।

कुंभ -

इस माह आपका अनेक नये लोगों से सम्पर्क होगा। जो आपको प्रगति के मार्ग पर ले जायेंगे। आकस्मिक धन लाभ का विशेष योग बन रहा है। इस माह आप वाहन, मकान, सम्पत्ति का क्रय कर सकते हैं। अध्यात्म के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। आपको विभिन्न यात्राओं पर भी जाना पड़ सकता है। परिवार में मंगलकारी आयोजनों से मन प्रसन्न होगा। जीवन साथी के साथ प्रेम प्रसंग मन को प्रसन्न करेंगे। आप शुभत्व हेतु 'शनि साधना' (अप्रैल 2005) सम्पन्न करें। शुभ तिथियाँ - 1, 4, 9, 11, 14, 15, 17, 21, 23, 26, 27, 30 हैं।

मीन -

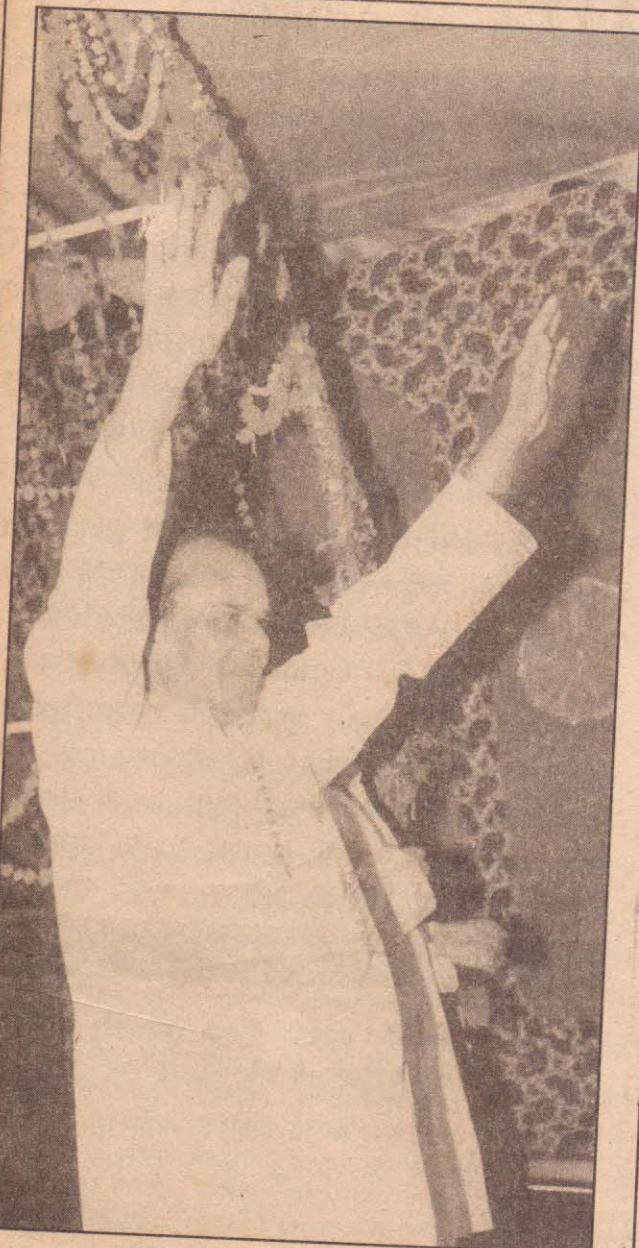
इस माह आपको अपने परिश्रम के अनुरूप पूर्ण लाभ प्राप्त नहीं हो पायेगा। परंतु यह अल्पलाभ ही आपके लिये श्रेष्ठकर सिद्ध होगा। भविष्य में आपको इसका पूर्ण लाभ अवश्य ही प्राप्त होगा। अपने व्यय पर नियन्त्रण रखें। परिवारजनों से किसी भी प्रकार का विवाद आपके लिये हितकर सिद्ध नहीं होगा। विद्यार्थीयों एवं बेरोजगारों के लिये समय पूर्ण अनुकूल है, थोड़े से ही परिश्रम द्वारा उन्हें लाभ प्राप्त हो सकता है। आप 'उन्मत्त भैरव साधना' (जनवरी 2005) सम्पन्न करें। तिथियाँ - 2, 4, 12, 17, 19, 20, 27, 28, 29, 30 हैं।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्योहार

02	जून	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष-11	गुरुवार	अपुरा एकादशी
04	जून	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष-13	शनिवार	शनि प्रदोष व्रत
17	जून	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-10	शुक्रवार	गंगा दशमी व्रत
18	जून	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-11	शनिवार	निर्जला एकादशी व्रत
19	जून	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-12	रविवार	प्रदोष व्रत
21	जून	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-15	मंगलवार	पूर्णिमा व्रत
02	जुलाई	आषाढ़ कृष्ण पक्ष-11	शनिवार	यागिनी एकादशी व्रत
03	जुलाई	आषाढ़ कृष्ण पक्ष-12	रविवार	प्रदोष व्रत
06	जुलाई	आषाढ़ कृष्ण पक्ष-30	बुधवार	अमावस्या व्रत

रहमानी

सारगमा या



साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है, जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिन्हें जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है -
जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके भाव्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः: 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है।

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (मई 29) (जून 5, 12, 19, 26)	दिन 06:00 से 08:24 तक 11:36 से 02:48 तक 03:36 से 04:24 तक रात 06:48 से 10:00 तक 12:24 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
सोमवार (मई 30) (जून 6, 13, 20, 27)	दिन 06:00 से 07:30 तक 09:12 से 11:36 तक रात 08:24 से 11:36 तक 02:48 से 03:36 तक
मंगलवार (मई 24, 31) (जून 7, 14, 21, 28)	दिन 10:00 से 11:36 तक 04:30 से 06:00 तक रात 06:48 से 10:00 तक 12:24 से 02:48 तक 05:12 से 06:00 तक
बुधवार (मई 25) (जून 1, 8, 15, 22, 29)	दिन 06:48 से 10:00 तक 02:48 से 05:12 तक रात 07:36 से 09:12 तक 12:24 से 02:48 तक
गुरुवार (मई 26) (जून 2, 9, 16, 23, 30)	दिन 06:00 से 07:36 तक 10:00 से 11:36 तक 04:24 से 06:00 तक रात 09:12 से 11:36 तक 02:00 से 04:24 तक
शुक्रवार (मई 27) (जून 3, 10, 17, 24)	दिन 06:00 से 06:48 तक 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 03:36 तक रात 07:36 से 09:12 तक 10:48 से 11:36 तक 01:12 से 02:48 तक
शनिवार (मई 28) (जून 4, 11, 18, 25)	दिन 06:00 से 06:48 तक 10:30 से 12:24 तक 08:24 से 10:48 तक 02:48 से 03:36 तक 05:12 से 06:00 तक

रागमात्या

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत हैं, जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिन्हें जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, वह वह व्यापार से सम्बन्धित हो, जौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके भाव्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है।

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (जून 5, 12, 19, 26) (जुलाई 3, 10, 17)	दिन 06:00 से 08:24 तक 11:36 से 02:48 तक 03:36 से 04:24 तक रात 06:48 से 10:00 तक 12:24 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
सोमवार (जून 6, 13, 20, 27) (जुलाई 4, 11, 18)	दिन 06:00 से 07:30 तक 09:12 से 11:36 तक रात 08:24 से 11:36 तक 02:48 से 03:36 तक
मंगलवार (जून 7, 14, 21, 28) (जुलाई 5, 12, 19)	दिन 10:00 से 11:36 तक 04:30 से 06:00 तक रात 06:48 से 10:00 तक 12:24 से 02:48 तक 05:12 से 06:00 तक
बुधवार (जून 1, 8, 15, 22, 29) (जुलाई 6, 13, 20)	दिन 06:48 से 10:00 तक 02:48 से 05:12 तक रात 07:36 से 09:12 तक 12:24 से 02:48 तक
गुरुवार (जून 2, 9, 16, 23, 30) (जुलाई 7, 14, 21)	दिन 06:00 से 07:36 तक 10:00 से 11:36 तक 04:24 से 06:00 तक रात 09:12 से 11:36 तक 02:00 से 04:24 तक
शुक्रवार (जून 3, 10, 17, 24) (जुलाई 1, 8, 15)	दिन 06:00 से 06:48 तक 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 03:36 तक रात 07:36 से 09:12 तक 10:48 से 11:36 तक 01:12 से 02:48 तक
शनिवार (जून 4, 11, 18, 25) (जुलाई 2, 9, 16)	दिन 06:00 से 06:48 तक 10:30 से 12:24 तक रात 08:24 से 10:48 तक 02:48 से 03:36 तक 05:12 से 06:00 तक



यह हमने नहीं बगाहमि हिरुने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्ण प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है, कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेगी, यता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तबावरहित कर पायेगा या नहीं। प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आगाम दुक्ष बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके सामाजिक प्रस्तुत हैं जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पूर्ण करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

जून

1. “श्रीं” बीज का उच्चारण करते हुए घर से निकलें।
2. प्रातः काल गुरु चित्र के समक्ष खड़े होकर निम्न श्लोक का पांच बार उच्चारण करें -

कालण्डसिन्धु निखिलेश्वर! दीनबन्धु! प्रेमावतार! परिपोष्य शिष्यवर्जम्/ मोहं निवार्य परिलक्ष्य चिन्तस्वरूपः; बन्दे गुरो निखिल! ते चरणारविन्दम्॥

3. ‘हनुमती’ (न्यौछावर 21/-) पर सिन्दूर चढ़ा कर उसे बाहर जाते समय किसी निर्जन स्थान पर डाल दें।
4. दिन का प्रारम्भ ‘उँ फट’ के उच्चारण से करें।
5. सूर्योदय के समय सूर्य देवता को अर्घ्य अर्पित करें।
6. प्रातः काल भोजपत्र पर कुंकुम से ‘हूं’ लिखें तथा उस पर एक सुपारी रखें। इसका सामान्य पूजन करें।
7. प्रातः काल ‘हनुमानाष्टक’ का पाठ करें।
8. प्रातः काल सूर्योदय से पहले ‘सिद्ध विनायक गुटिका’ (न्यौछावर 60/-) का अभिषेक करें।
9. प्रातः काल ‘तांत्रोक्त गुरु पूजन’ सम्पन्न करें।
10. भगवती दुर्गा के चित्र के समक्ष निम्न श्लोक का ज्यारह बार उच्चारण करें -

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

11. प्रातः काल अक्षत के ज्यारह दाने ‘जं’ बीज मंत्र का उच्चारण करते हुए दक्षिण दिशा में डाल दें।
12. दिन का प्रारम्भ ‘उँ हीं हीं उँ’ के 11 बार उच्चारण से करें।
13. केशर का तिलक कर बाहर जायें।
14. हनुमान चालीसा का पाठ करें।
15. आज काली उड़द तथा सरसों के तेल का दान किसी निर्धन व्यक्ति को अवश्य करें।

16. प्रातः काल गुरु पूजन कर गुरु चित्र के समक्ष निम्न श्लोक का पूर्ण श्रद्धा पूर्वक उच्चारण करें - अदोवदानं परमं सदेहं प्राणं प्रमेयं परसंप्रभूतं। पुरुषोत्तमा पूर्णं मदेव रूपं निखिलेश्वरोयं प्रणमं नमामि॥
17. तेल के दीपक में एक लौंग डाल कर इष्ट आरती सम्पन्न करें, कार्यों में सफलता प्राप्त होगी।
18. प्रातः काल काली मिर्च के पांच दाने ‘क्लीं’ बीज मंत्र का उच्चारण करते हुए सिर पर घुमा कर दक्षिण दिशा की ओर फेंक दें।
19. प्रातः काल ‘उँ सूर्य आदित्याय स्वाहा’ मंत्र का जप करते हुए सूर्य को अर्घ्य दें॥
20. प्रातः काल 15 मिनट तक ‘सोऽहं’ मंत्र का जप करें।
21. आज निखिलेश्वरानंद स्तवन का पाठ करें। दिन भर गुरु स्मरण करें तथा गुरु सेवा का संकल्प लें।
22. दिन का प्रारम्भ ‘जं गणपतये नमः’ के 7 बार जप से करें।
23. गुरु मंत्र का जप यथा सम्भव अधिक से अधिक करें।
24. भगवती लक्ष्मी की पूजा कर, दुध से बने किसी पदार्थ का भोग लगायें।
25. ‘ज्ञेमती चक्र’ (न्यौछावर 00/-) को किसी मंदिर में भेट करें।
26. नवार्ण मंत्र का सात बार जप अवश्य ही करें।
27. शिवलिंग पर पांच बिल्व पत्र अर्पित करते हुए जल से अभिषेक करें।
28. पांच काली मिर्च के दाने अपने सिर पर से घुमाकर चारों दिशाओं में फेंक दें तथा पाचवें दाने को पृथ्वी पर फेंक दें।
29. गणेश जी को लड्ढा का भोग लगायें।
30. विशिष्ट गुरु पूजन करके कार्य आरम्भ करें।

यह हमने नहीं बराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है, कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह रवयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं। प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्द युक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं जो बराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पूर्ण करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

जुलाई

1. प्रातः कला तुलसी के वृक्ष में अधर्य देकर धूप दिखायें, पूरा दिन सफलतापूर्वक व्यतीत होगा।
2. बाहर जाने से पूर्व निम्न श्लोक का उच्चारण करें - जय जय हनुमान गोसाई। कूपा करहूं गुरुदेव की नई॥
3. 'अग्रेन्द्र' (न्यौछावर 60/-) को अपने साथ लेकर जाने से सारे महत्वपूर्ण कार्य सफल होंगे।
4. प्रातः काल सरसों के तेल का दान करें।
5. प्रातः काल सूर्योदय से पूर्व काले तिल को 'भैरव गुटिका' (न्यौछावर 60/-) पर अर्पित करें।
6. आज काले तिल व तेल का दान करें।
7. बाहर जाने से पूर्व निम्न श्लोक का उच्चारण करें - दृष्टा स्वयं निवासवत्ती वभूव, शक्तित्रयी वपुषि वीमिति सहर्षम्। झानं श्रियं समुदयं सविकासमायः; वन्दे गुरो! लिखितं ते चरणारविन्दम्॥
8. बाहर जाने से पूर्व बेसन से बनी वस्तु को ग्रहण करें।
9. प्रत्येक कार्य को करने से पूर्व 'श्रीं' का ज्यारह बार उच्चारण करें।
10. प्रातः काल सूर्य को अधर्य दें।
11. 'ॐ नमः शिवाय' का जप 11 बार कर बाहर जायें।
12. हनुमान के विग्रह के समक्ष तेल का दीपक लगा कर बाहर जायें।
13. 'हारिद्रक' (न्यौछावर 51/-) की सामान्य पूजा कर अपनी जेब में रखें, शाम को निर्जन स्थान पर डाल दें।
14. प्रत्येक कार्य से पूर्व 'ॐ नमो नारायणाय' का जप ज्यारह बार करें।
15. 'घुरुण्डी' (न्यौछावर 31/-) को लाल वस्त्र में बांध कर अपने पास रखने से आपका दिन सफलतापूर्वक व्यतीत होगा।
16. प्रातः काल काले तिल लेकर घर की छत या आंगन में बिखेर दें।
17. प्रातः काल किसी कुत्ते को रोटी खिलायें, आपको आने वाली आपदाएं समाप्त होंगी।
18. प्रातः काल आप 'महामृत्युजय मंत्र' का 21 बार उच्चारण करें।
19. पीपल के पत्ते पर मिष्ठान रख कर हनुमान मंदिर में भोग चढ़ाये लाभ प्राप्त होगा।
20. प्रत्येक कार्य को करने से पूर्व इष्ट देव का स्मरण करें।
21. आज गुरु पूर्णिमा है, पूरे विधिविधान सहित गुरु पूजन अवश्य करें और गुरु कार्य का संकल्प लें।
22. घर से बाहर निकलने से पूर्व दही का सेवन करें।
23. काले उड़द को किसी शिव मंदिर में चढ़ायें।
24. प्रातः काल बिस्तर पर बैठे-बैठे ही गायत्री मंत्र का जप पांच बार अवश्य करें।
25. शिवलिंग पर जल तथा दूध मिलाकर चढ़ायें।
26. 'हकीक पत्थर' (न्यौछावर 21/-) को अपने पास रख कर बाहर जाने से महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त होगी।
27. गणपति का ध्यान कर बाहर जायें।
28. प्रातः काल चेतना मंत्र 'ॐ ह्रीं सम प्रण देह रोम प्रतिरोम चैतन्य जाग्रह हरी ॐ' का 5 बार उच्चारण करें।
29. 'श्री फल' (न्यौछावर 51/-) को साथ लेकर बाहर जायें।
30. 'ॐ शं शनिश्चराय नमः' का 11 बार उच्चारण कर घर से बाहर जायें।
31. प्रातः काल 'कालाक्ष गुटिका' (न्यौछावर 60/-) का अभिषेक कर पूर्व दिशा में किसी निर्जन स्थान पर डाल दें।

नदी के वेग को बांध बनाकर रोका जा सकता है
तो जीवन में यौवन के उदाम वेग को भी बंधायी किया जा सकता है

जीवन की पुरुषर्थी की लाये कल्प वस्त्र जावक्षता है
 जीवन की वृद्धि की कर्यायी कल्प की जीवन की वस्त्र जावक्षता है
 जीवन की वृद्धि का वस्त्र वक्षता वस्त्राया जावक्षता है

पविशुकाम विचित

धर्मादेव अद्वा साधना है

मत घबराइये, मत विचलित होइये, जीवन में आचु का ठलान आ सकता है
 लैकिन मन और तन में काम का उदाम वेग तो सदैव रहना चाहिये, जीवन में निरन्तर
 उत्साह और रस का सुंचार होता रहे तो नित्य कीजिए अनंग साधना -

जीवन में पूर्ण पौरुषता का तात्पर्य है प्रबल व बिजली की तरह कड़कता हुआ व्यक्तित्व, जिसकी आंखें देखकर ही सामने वाले की आंखें द्युक जायें। पूर्ण पौरुषता का तात्पर्य है, जोश और मर्दानगी से भरा उभरा हुआ विशाल वक्ष स्थल, जिसकी गठन देखकर स्त्रियों की आंखों में स्वप्न तैर जाय, उसमें जो सभी खतरों से जूझने का हौसला रखता हो। जिसमें चुनौती देने व चुनौती लेने का भाव हो। ऐसे प्रबल पौरुष से भरे सौन्दर्य का स्वामी हजारों हजारों की भीड़ में भी अलग खड़ा दिखाई देता है जिसके ऊपर मस्ती से हवा की कोई लहर आ कर उसके चौड़े मस्तक पर घुघराले वालों को बिखेर रही हो, और जिसकी गठी मांस पेशियों पर उभर कर जाती हुई नसें गर्व से घोषणा कर रही हो, कि इसकी रगों में रक्त नहीं, पिघला सीसा ही बह रहा है।

कर चेहरे पर अनियमित जीवनचर्या के कारण पीलापन ला उदास व निस्तेज सा हो गया है। असमय बाल पक जाना, आंखों के नीचे गड़दे पड़ जाना, चेहरे से मुस्कुराहट चली जाना, यह सब सामान्य लक्षण ही बनते जा रहे हैं, जिन्हें देखकर आश्चर्य होता है, कि क्या ये वही लोग हैं जो अपने गोत्र का उच्चारण करते समय किसी ऋषि का नाम लेते हैं? क्या बचा है इन लोगों में उन महानतम ऋषियों का? कहां है उनका वह ओज, कहां है उनकी वह उदारता, और कहां है उनके जैसा शरीर सौष्ठव? इस युग में ६ फीट की लम्बाई होना ही अपने आप में दुर्लभ हो गया है, जबकि हमारे आर्य पूर्वज तो सामान्य रूप से सात फीट के होते ही थे और यह औसत लम्बाई जो आज सिमट कर पांच फीट दो इंच के आस-पास रह रहा है, आने वाली पीढ़ियों में तो और भी घटती जा रही है।

अब तो पौरुषता के नाम पर पुरुषोचित सौन्दर्य इसी प्रकार दुर्लभ हो गया है जैसे नारी सौन्दर्य। नारियां हैं तो निस्तेज सी, ढलके वक्ष स्थल लिये पेट, और कूलहों पर चर्बी की कई पत्तें रखे, उन चर्बियों की पत्तों को ही नहीं जीवन को भी ढो रही हैं। पुरुष वर्ग पान, गुटका, सिगरेट से औंठ व दांत काले

इसका कारण है, आज का दूषित वातावरण, समय के अत्यधिक पूर्व मिल जाने वाला यौन ज्ञान, चाहे वह सड़क पर लगे पोस्टरों से मिले या फुटपाथ पर फैली किताबों से या टी.वी. से। असमय की कृप्रवृत्तियों में लगकर लोग जीवन के उस तत्व को खो देते हैं जिसे 'वीर्य' कहते हैं जो कि जीवन का

सारभूत तत्व है। जिसके अभाव में व्यक्ति के अन्दर शून्यता ही बचती है, इसी का फिर भविष्य में परिणाम होता है कि व्यक्ति विवाह के उपरान्त अनेक दुर्बलताओं से ग्रस्त होकर अपनी पत्नी को सम्भोग में सन्तुष्ट नहीं कर पाता। पत्नी की अतुर्सि ही गृह कलह और तनाव का वातावरण देकर जीवन विषाक्त कर देती है। सत्य भी है कि यदि आप अपनी पत्नी को कामक्रीड़ा में सन्तुष्ट नहीं कर पायेंगे तो आपके जीवन के साथ ही साथ आपकी पत्नी का जीवन भी भार स्वरूप ही उठेगा।

सौन्दर्य, बल, क्षमता तो ऐसी होनी चाहिए कि आपके चेहरे पर झलकती जवानी की गुलाबी आभा को देखकर स्त्री स्वयं दीवानी बन जाये और आपके आगे पीछे घूमने को बाध्य हो जाय। दम-खुम, पौरुषता से भरे लबालब शरीर में, जिसकी चौड़ी कलाइयाँ कुछ भी उमेठ कर रख देने की सगर्व घोषणा सी करती लगें। शक्ति को अपने भीतर मजबूती से जबड़े भींच कर प्रकट करता चेहरा हो और जवानी से ओंठ एक दूसरे के ऊपर मजबूती से चिपक जायं तो उसे देखकर कौन युवती आतुर नहीं हो उठेगी उन ओंठों के रस का पान करने के लिए? फिर शुरु होगी आपके आसपास मंडराने की क्रियाएं, इशारे, निगाहों के आमन्त्रण और निगाहों से ही नहीं बातों से भी घुमा-फिरा कर आमन्त्रण। इस जीवन में तब सुख भोगने का दाव आपके पास होगा। सौन्दर्य का भोग करने वाला व्यक्ति ही इस जीवन में सफल हो सकता है क्योंकि सौन्दर्य भोग से ही उसके अन्दर आत्मविश्वास पुष्ट हो उठता है। सौन्दर्य भोग में गिड़िगिड़ा कर ही नहीं, वरन् सौन्दर्य ही सामने आकर गिड़िगिड़ाये।

पौरुष यानि कि उद्घाम घेग ये धृती
बढ़ी, चट्टाब को घुमाकट, तोड़कट टथ
देवे वाली बढ़ी, यदि तोड़ न पाये तो उसको
फ्राटकट इथ देवे वाली बढ़ी।

पौरुष यानि कि अटीपूटी देह, तांधे की
खबक औट रीसे की दमथम लेफट गढ़ा
हुआ छाटीट, पौरुष यानि की चीते की तटह
लचकीली औट धलवती देह अंपनी दूबहटी
आल को चमकाती हुई ...

यही तो पौरुष औट उसकी अलगटत
अदा!!!

नेपाल के व्यक्तिगत पुस्तकालय में प्राप्त प्राचीन हस्त लिखिल ग्रंथ से ली गई साधना जो परशुराम तंत्र का ही एक भाग है....

परशुराम जो अपने आप में दुर्धर्षिताकी मिसाल रहे। परशुराम जैसा ही व्यक्तित्व गठित करने की पौरुष साधना...

जीवन में यह सब कल्पना की बाते ही नहीं, वरन् साकार रूप भी ले सकती हैं, यदि इस जीवन की बारीकियों को, साधना पक्ष में पहलुओं को समझा जाय तो। अनेकानेक साधना पद्धतियों से जो 'रस' की साधना है उसका नाम है 'अनंग साधना' जिसे सफलता पूर्वक सम्पन्न कर व्यक्ति नवजीवन और नव यौवन तो प्राप्त कर ही सकता है अपनी खोई हुई ताकत और जवानी की सनसनी से भरा शरीर भी पा सकता है साथ ही यदि वह नियमित रूप से साधना में प्रवृत्त रहे तो इस शरीर के आन्तरिक व बाह्य रूप का कायाकल्प भी कर सकता है।

जीवन में नवजीवन का उपाय है -

व्यक्ति के लिए आवश्यक नहीं कि वह अपने ढीले पड़ गये शरीर को पुनः वही जोश व ताजगी देने के लिए आयुर्वेद के उपाय भी प्रामाणिक होते हैं किन्तु उन्हें अब पूर्णता से समझ कर जीवन में उतारने का धैर्य व्यक्ति में नहीं बचा है। आयुर्वेदिक उपायों में व्यक्ति के शरीर की संरचना के अनुकूल औषधि प्रदान करना भी योग्य वैद्य द्वारा ही संभव है, और कोई आवश्यक ही नहीं कि आपको अपने स्थान के आसपास अनुभव वैद्य मिल ही जाय। इसके विपरीत साधना प्रयोगों में ऐसी कोई बाध्यता नहीं होती, इसमें किसी भी प्रकार का कोई बन्धन नहीं होता और सामान्य पढ़ा लिखा व्यक्ति भी सफलता पूर्वक इन प्रयोगों को अपना कर अपने जीवन में सुखद व मनोनुकूल परिवर्तन ला सकता है।

जीवन में 'काम' कोई अश्लील स्थिति नहीं है और पूर्ण स्वस्थ पुरुष व स्त्री के मिलन में जिस सुख की उत्पत्ति होती है वह अपने आप में जीवन के मधुरतम क्षण होते हैं। जीवन के सर्वाधिक महत्वपूर्ण किन्तु प्रायः उपेक्षणीय और अछूते पक्ष को जहां तक साधना पूर्णता से स्पर्श करती है और व्यक्ति को न केवल शारीरिक रूप से सौन्दर्यवान्, सबल और दर्शनीय बनाती है, अपितु वही उसके मन में कामकला के अनेक भेद भी स्वतः स्पष्ट होने लगते हैं। 'अनंग' अर्थात् कामदेव ही जब पुरुष में आकर समाहित हो जाय तो उसके जीवन में न्यूनता ही क्या रह सकती है? कामदेव की यह विशिष्ट साधना जिस साधक को सिद्ध हो जाती है, उसे अप्सरा

साधना, किन्तरी साधना अथवा यक्षिणी सिद्ध करने में कोई विशेष प्रयास नहीं करना पड़ता, क्योंकि यह वर्ग ही आतुर हो उठते हैं ऐसे सिद्ध साधक के शरीर में समाहित होने का।

जीवन में मधुरता घोलने की इस विशेष साधना में कोई भी जटिलता नहीं है। इस साधना में जो आवश्यक तत्व है वह यह है कि आपके मन में विश्वास और आनन्द हो कि अब आपको अपने जीवन में नवयीवन घोलने का एक अवसर मिल रहा है, होता यह है कि जिस क्षण हम आनन्द युक्त होकर साधना करते हैं उन क्षणों में हमारे शरीर के तन्तु इस प्रकार जुड़े होते हैं कि सम्बन्धित मंत्र जप का सीधा प्रवाह ग्रहण कर लेते हैं। यह सीधा प्रवाह ग्रहण करना ही जीवन में अनुकूल परिवर्तन व साधना में सफलता का आधार होता है।

साधना इस प्रकार करें -

यह साधना केवल शुक्रवार को ही की जा सकती है। रात्रि के 10 बजे के पश्चात् शांत व एकान्त कक्ष में वातावरण को सुसज्जित एवं सुगन्धित करें। श्रेष्ठ वस्त्र पहिन कर, स्वयं भी इत्र लगायें और यदि संभव हो तो गुलाब के फूलों की माला पहनें। सामने स्थापित 'अनंग यंत्र' पर पुष्प, गुलाल, अक्षत, केशर व इत्र चढ़ाकर आप अपनी जिस प्रकार की भी दुर्बलता से मुक्ति पाना चाहें, उसकी स्पष्ट शब्दों में प्रार्थना करें व निम्न मंत्र का जप 'कामदेव माला' से करें। यह माला ही अपने आप में पूर्ण रूप से एक सिद्धि है जिसे व्यक्ति धारण कर निरन्तर अपने अन्दर यौवन की ऊषा का प्रभाव बनाये रख सकता है। इस साधना में प्रयुक्त किया जानेवाला मंत्र है -

मंत्र

//ॐ हौं हूं अनंगाय फट//

इस साधना में चार लघु नारियलों की भी आवश्यकता रहती है, जो जीवन में चार पुरुषार्थों के प्रतीक हैं। मंत्र जप के उपरान्त पुष्प की पंखुड़ियों से इनका पूजन कर इन्हें पीले वस्त्र में बांध कर अपने शयन कक्ष में स्थापित कर देना चाहिए। इस साधना में उपरोक्त मंत्र की केवल ज्यारह माला मंत्र जप करना पर्याप्त होता है। यदि यह मंत्र जप व्यक्ति निरन्तर कर सके तो उत्तम रहता है अन्यथा चार शुक्रवारों तक इस साधना क्रम को दोहराते रहें। अनुष्ठान पूर्ण होने के बाद चारों होता है।

लघु नारियल, यंत्र व माला पीपल के वृक्ष के नीचे रख दें।



काम गायत्री मंत्र

//ॐ कामेदवाय विद्महे पुष्प वाणाय
थीमहि तद्वा अन्तः प्रचोदयात् //

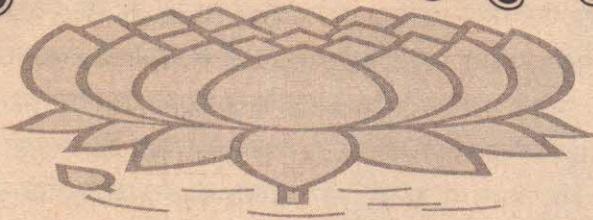
अनंग साधना का ही पूरक है 'काम गायत्री साधना'। व्यक्ति नित्य प्रति प्रातः स्नान के पश्चात् उपरोक्त काम गायत्री मंत्र की एक माला जप अवश्य करे। इस मंत्र जप से साधना का फल द्विगुणित हो जाता है।

अनंग साधना एक ऐसी साधना है जिसमें चमत्कार की आशा करना व्यर्थ है क्योंकि यह तो शरीर के अणुओं का सुसंयोजन करने की एक प्रक्रिया है जो एक दम से घटित नहीं हो सकती। जिन साधकों ने धैर्य पूर्वक अपने को इस साधना में प्रवृत्त रखा है उनका अनुभव है कि इससे न केवल बालों में सघनता, बालों का काला हो जाना, आंखों में चमक बढ़ जाना, झुर्रियों का मिट जाना जैसे छोटे-मोटे परिवर्तन ही संभव होते हैं, वरन् कद-काठी का भी आकार प्रकार बदलने लगता है और व्यक्ति जीवन में पूर्ण वैवाहिक सुख भोगने के साथ-साथ समाज में भी अपना विशिष्ट स्थान बनाने में सफल होता है।

साधना सामग्री - 350/-

त्रिभुवनवश करी सर्वाभरण भूषित पदम माल्यम्

ਲੁਧਿਆਣੀ ਕਰ-ਕਰਦ ਸਾਲਾਹ



‘लक्ष्मी-तंत्र’ में बतलाया गया है कि लक्ष्मी नित्य निर्दोष और निस्सीम कल्याण गुणों से संयुक्त होती है। वे समस्त उेश्वर्यों की नियामिका है। ज्ञान, बल, उेश्वर्य, वीर्य, शक्ति और तेज को धारण करने के कारण उन्हें ‘भगवती’ कहा जाता है। पुराण कथाएं निरर्थक नहीं हैं, उनके पीछे विज्ञान है, उसके व्यापक अन्वेषण की आवश्यकता है। विष्णु और लक्ष्मी का आसन शेष और शेष के फणों पर पृथ्वी की स्थिति पुराणों में बतलायी जाती है। वेदों में विष्णु, लक्ष्मी और अन्नि पर्यायवाची प्रयुक्त हुए हैं। अन्नि में ऊर्जा या ऊर्जा होती है, यही उनकी शक्ति होती है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में यही विष्णु और लक्ष्मी का रूप है।

जिस तरह 'विष्णु' तत्व सर्वव्यापक है, 'श्री' तत्व श्री सर्वव्यापक है। नारायण और लक्ष्मी सारे जगत में निष्पत्ति स्वस्थप में व्याप्त हैं।

भगवती लक्ष्मी के चित्र में आपने ध्यान दिया होगा कि उसमें कमल का बाहुल्य होता है। लक्ष्मी और कमल एक दूसरे के पूरक ही तो हैं, लक्ष्मी को यदि समझना है तो कमल से श्रेष्ठ कोई उपमा ही नहीं, ठीक उसी के समान गुलाबी आभा से दैदीप्यमान मुख मण्डल, उसी के समान उज्ज्वल और कोमल स्वरूप, उसी के समान समीप से निःसृत होती पद्मगंध, ठीक वैसी ही निर्लिपि और पद्म के सैकड़ों दलों की भाँति सैकड़ों स्वरूप! लक्ष्मी अपने आप में दैवी सौन्दर्य से भरी, नारीत्व की गरिमा की एक ऐसी देवी है, जिसका अभी तक शायद सही मूल्यांकन ही नहीं किया गया, एक ओर जहां उन्हें इस धन-लोलुप समाज ने धन देने की देवी मात्र समझ कर उनसे व्यापारिक सा सम्बन्ध जोड़ा, वहीं भक्ति के भोंडे रूप में उन्हें ‘लक्ष्मी मैया’, ‘लक्ष्मी मैया’ कहकर उनका ही नहीं मातृत्व का भी अपमान किया गया। दूसरी ओर कुन्ठित और निराश शास्त्रकारों ने उन्हें उपेक्षा की दृष्टि से देखा, धन को सभी बुराइयों का मूल कहा और लक्ष्मी को चंचला आदि कहा।

परन्तु वस्तुस्थिति इससे कुछ अलग हटकर ही है, धन की अधिष्ठात्री यह देवी मूल रूप से नारी ही तो है, जिस प्रकार एक नारी स्वभावतः कोमल, स्नेहशील, दयाल और ममत्व से

भरी होती है, किन्तु प्रबल स्वाभिमानी भी। वह इस बात की तरफ इच्छुक और आतुर होती है कि उसकी सराहना की जाए और सप्रयास उसे कोई जीवन में लाए, उसी प्रकार इस तथ्य को हम लक्ष्मी साधना के सन्दर्भ में भी कह सकते हैं। नारी या तो प्रबल पौरुष के माध्यम से अथवा प्रबल प्रेम के माध्यम से ही वशीभूत होती है, अन्य कोई उपाय ही नहीं। इस तथ्य को ध्यान में रखकर जहां एक ओर तांत्रोक्त रूप में लक्ष्मी को वश में करने के उपाय खोजे गए हैं और विश्वामित्र जैसे सरीखे, हठीले ऋषियों ने उन्हें चुनौती पूर्वक, पौरुषतापूर्वक अपने आश्रम में उसे बंधकर रहने को विवश कर दिया, वहीं दूसरी ओर वैदिक काल में यज्ञ के माध्यम से, स्तोत्र रचना के माध्यम से उनकी अभ्यर्थना की गई और उनके स्थापन की कामना की गई। भगवती महालक्ष्मी को दस महाविद्याओं में एक महाविद्या कमला के रूप में प्रतिष्ठित कर एक प्रकार से उनके प्रति सम्मान ही व्यक्त किया गया। यत्र के माध्यम से भी उनके स्थापन में आबद्धीकरण के प्रयास किए गए। श्रीयत्र, कनकधारा यत्र एवं अन्य विशिष्ट यंत्रों की रचना कर उनके

आबद्धीकरण का ही प्रयास किया गया, सर्वथा निर्लिपि रहने वाले और मोह-माया से परे रहने वाले औघड़ों ने भी उनके वशीकरण के उपाय ढूँढे।

लक्ष्मी ऐसी श्रेष्ठ देवी है जिसके स्पर्श मात्र से ही व्यक्ति में पूर्णता का प्रादुर्भाव हो जाता है, यदि लक्ष्मी को केवल धन का प्रतीक न मानें वरन् सम्पूर्ण जीवन के पूर्णत्व का आधार मानें तो एक पुरुष में पौरुष और आत्मविश्वास प्रदान करने की मूलभूत देवी लक्ष्मी ही है। एक पुरुष के जीवन में लक्ष्मी - आगमन से ही न केवल उसकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होकर उसे मानसिक सबलता देती है वरन् लक्ष्मी अपने विविध स्वरूपों से जिस प्रकार से उसके प्रत्येक पक्ष को स्पर्श कर जाती है, उससे व्यक्ति सहज ही आत्मविश्वास से भर उठता है। लक्ष्मी की उपेक्षा ही व्यक्ति को जीवन में दरिद्री और अपमानित बनाती है। कई ऐसे धनाद्य भी हैं जिन्हें छोटे-छोटे कार्यों के लिए सामान्य से व्यक्ति के सामने भी गिडिगिडाना

पड़ता है, ऑफिसों के चक्कर लगाने पड़ते हैं। यदि धन ही लक्ष्मी का प्रतीक होता तो यह सब क्यों होता? लक्ष्मी सम्पूर्ण रूप से जीवन की आभा है, व्यक्ति का प्रभामण्डल है, आन्तरिक रूप से मिली तृप्ति का प्रकटीकरण है। लक्ष्मी को जीवन में और शरीर में समाहित कर लेना, सारे जीवन, तन और मन को पद्मगंध की दिव्य सगुन्थ से सुगन्धित कर लेने की क्रिया है। सम्मोहन की ऐसी गुलाबी आभा को अपने तन-मन में समा लेने की बात है कि ऐसे व्यक्ति के प्रभामण्डल से कोई अद्भुत रह ही नहीं सकता। जिनके शरीर में लक्ष्मी का समाहितीकरण हो जाता है वह स्वतः ही ऐसे सम्मोहन से युक्त हो जाते हैं, जो कि शायद किसी अन्य प्रकार से सम्भव नहीं। जैसे दूर कहीं किसी छोटे से तालाब में कोई कमल खिला हो और उसकी मादक गंध से वातावरण भीगा-भीगा हो, ठीक उसी तरह जिनके शरीर में लक्ष्मी समाहित हो जाती है, उनकी आभा और सम्मोहन से सारा वातावरण भीगा-भीगा हो, ठीक उसी तरह जिनके शरीर में लक्ष्मी समाहित हो जाती है, उनकी आभा और सम्मोहन से सारा वातावरण भीगा-भीगा हो जाता है। जिससे लोग खिंच खिंच कर उनके पास आने लगते हैं। उन्हें सप्रयास किसी को अपनी ओर आकर्षित नहीं करना पड़ता, और इसी में जीवन की श्रेष्ठता है। यदि आपको गिडिगिडा कर या किसी के आस-पास मंडराकर उसे अपने वशीभूत करना पड़े तो फिर जीवन में पौरुष का अर्थ ही क्या? और आनन्द भी कहां?

लक्ष्मी के सौ स्वरूप

लक्ष्मी का तो अत्यन्त विस्तृत क्षेत्र है। पत्नी को भी लक्ष्मी स्वरूपा माना गया है, कहते हैं कि जिस व्यक्ति की पत्नी में लक्ष्मी तत्व समाविष्ट हो जाए, वह व्यक्ति स्वतः ही नारायण-

तुल्य बन पूर्ण राजसी सुख का भोग करता है। केवल पत्नी ही नहीं, वाहन-लक्ष्मी, आयु-लक्ष्मी, भू-लक्ष्मी, पुत्र-लक्ष्मी, धरा-लक्ष्मी, धान्य-लक्ष्मी, लक्ष्मी के तो सौ स्वरूप निर्धारित किए गए हैं। जो कुछ भी व्यक्ति के जीवन में 'श्री' वृद्धि करे, उसके प्रभामण्डल को और अधिक सम्मान बढ़ाए, उसके पीछे लक्ष्मी का ही स्वरूप है। स्थान भय के विस्तार से लक्ष्मी के सभी सौ स्वरूपों का वर्णन यहां कर पाना कठीन है, किन्तु इसका अनुमान तो आप जीवन में पग-पग पर लगा सकते हैं। जहां भी आपको लगे कि काश! मेरे जीवन में यह होता, तो बस उसके पीछे लक्ष्मी का ही कोई स्वरूप छुपा है। उसी रूप में आप लक्ष्मी का ही वह वरदान व्यक्त अथवा अव्यक्त रूप में मांग रहे होते हैं।

लक्ष्मी के विविध स्वरूपों को जान भी लें फिर मुख्य प्रश्न तो शेष रह ही जाता है कि हम इन्हें जीवन में कैसे प्राप्त करें? यह जीवन इतना बड़ा नहीं होता और न ही व्यक्ति में इतनी सामर्थ्य होती है कि वह सप्रयास अपने जीवन में लक्ष्मी के विविध स्वरूपों को उतार सके। येन-केन-प्रकारेण व्यक्ति जीवन में मात्र चार या पांच प्रकार की लक्ष्मी का अर्जन ही कर पाता है और उनका भी केवल अर्जन मात्र, उपयोग नहीं। जबकि जीवन में होना तो यह चाहिए कि हम अपनी अर्जित वस्तु का सुख भी प्राप्त कर सकें। व्यक्ति अर्जित कर लेने के पश्चात् भी इस रूप में असफल रह जाता है कि वह उसे जीवन में धारण किए रह सके। लक्ष्मी का अर्थात् जीवन में सुख और 'श्री' का उपभोग न कर पाना, उसे बचा कर न रख पाना, एक प्रकार से उसे न प्राप्त करने के समान ही है।

इस तथ्य को लेकर पर्याम समय से मंत्रवेत्ता और श्रेष्ठ साधक शोध कर रहे थे कि ऐसा क्या उपाय प्राप्त किया जाए कि व्यक्ति के जीवन में लक्ष्मी तत्व के समावेश के साथ ही साथ उसे स्थायित्व भी दिया जा सके। श्री यंत्र, कनकधारा यंत्र, अष्टलक्ष्मी यंत्र एवं कई अन्य यांत्रिक एवं मांत्रिक उपाय प्रचलित तो हैं लेकिन महत्वपूर्ण बात तो यह है कि ऐसा कौन सा उपाय हो कि व्यक्ति के शरीर में ही लक्ष्मी के समस्त सौ स्वरूपों को स्थापित किया जा सके और उसे अक्षुण्ण बनाये रखा जा सके। इन्हीं शोधों के परिणाम स्वरूप जो उपाय सामने आया, उसका नाम है लक्ष्मी-वर-वरद माल्य। जिसके माध्यम से सदा-सदा के लिए व्यक्ति के शरीर में लक्ष्मी का स्थायी निवास हो सके, उसके जीवन में ऐसा हो कि लक्ष्मी उसके साथ छाया की भाँति रहे।

विचित्र व अद्भुत मनकों से बनी लक्ष्मी आबद्धीकरण की

किया से युक्त इस दुर्लभ माला में कुल 108 मनके होते हैं। जिनमें से आवश्यकता तो केवल सौ मनकों की ही होती है लक्ष्मी के सौ स्वरूपों को स्थापित करने के लिए, आठ मनके विशेष सौन्दर्य प्रभाव के लिए प्रदान किए जाते हैं साधक के शरीर में। इसका प्रत्येक मनका लक्ष्मी मंत्रों से सिद्ध कर, प्रत्येक मनके में लक्ष्मी के किसी एक विशेष स्वरूप का स्थापन किया जाता है एवं 'श्री सूक्त' में गुह्य रूप से वर्णित गोपनीय पद्धति से ऐसा विशेष प्रभाव दिया जाता है कि व्यक्ति के जीवन में लक्ष्मी के सौ स्वरूपों का स्थायी निवास हो सके। ऐसी माला केवल धारण करने वाले व्यक्ति के लिए ही नहीं, उसके पुत्रों-पौत्रों और वंशजों के लिए भी उसी प्रकार से उपयोगी रहती है। स्पष्ट रूप से कहा जाए तो यह केवल एक माला नहीं अपितु धरोहर है, आपकी पीढ़ियों के लिए। आप जिस प्रकार अपने पुत्र-पौत्रों के लिए धन-संचय, भूमि व मकान के रूप में अपनी याद छोड़ जाते हैं, ठीक उसी प्रकार आने वाली पीढ़ियां कृतज्ञता से गद्गद हो उठेगी कि उनके पूर्वज उनके लिए कैसा अनोखा उपहार छोड़कर गए हैं। यह ऐसी माला नहीं है कि इसे जब चाहे तब बाजार में जाकर खरीद लें और धारण कर लें। इस प्रकार की माला को तो बिले ही सिद्ध करना जानते हैं।

पत्रिका परिवार ने अपने निर्देशन में सिद्धहस्त शिष्यों के द्वारा यह माला केवल भारत में रहने वाले शिष्यों के लिए तैयार कराई है एवं अत्यधिक कठिनाई व लम्बे अनुष्ठानों द्वारा सिद्ध होने के कारण यह माला अत्यन्त सीमित संख्या में ही उपलब्ध हो सकी है।

इस माला को धारण करने से व्यक्ति के शरीर में भगवती लक्ष्मी अपने सौ स्वरूपों के साथ पूर्णता से प्रवेश कर स्थापित होने के लिए बाध्य हो जाती है। इन मनकों के व्यक्ति के शरीर से स्पर्श करते रहने के कारण धीरे-धीरे उसके जीवन में परिवर्तन आने लगते हैं। लक्ष्मी-तत्व के स्पर्श से उसका चिन्तन भी बदल जाता है। आर्थिक दरिद्रता के साथ-साथ दैन्यता और कायरता समाप्त हो जाती है। उसके जीवन में सही अर्थों में आध्यात्मिकता का पूर्ण-सुख, सौभाग्य और मानसिक शान्ति का समय प्रारम्भ हो जाता है। लक्ष्मी भी अन्य देवी-देवताओं के समान मूल रूप में आध्यात्मिक स्वरूप ही है। आध्यात्मिकता की प्रचलित परिभाषा के कारण उन्हें समझ नहीं पाए क्योंकि आध्यात्मिकता का अर्थ, भगवे वस्त्र धारण करने तक सीमित जो कर दिया गया है। घर में पुत्र हो, पौत्र हो, सुलक्षण पत्नी हो, परस्पर मेल मिलाप हो, अतिथि उसका प्रयास प्रशंसनीय है क्योंकि वह किन्हीं जिम्मेदारियों



सत्कार हो, आत्मीय मित्रों के संग हास्य-विनोद के क्षण हो, साधु-संतजनों का सत्कार व दान हो, धार्मिक स्थानों की यात्राएं हो और फिर भी मन निरन्तर प्रभु चिन्तन में ही लीन रहे, यही आध्यात्मिकता की सही परिभाषा है। पूज्यपाद गुरुदेव ने एक अवसर पर स्पष्ट किया था कि वर-वरद का तात्पर्य होता है हम किसी को कुछ प्रदान कर सकें। केवल अपने ही लिए अर्जित व संचित न करें। यह विशिष्ट माला ऐसी लक्ष्य की पूर्ति करती है कि आप अपने आप को समृद्ध करें ही, अपना जीवन सुख-पूर्वक व्यतीत कर निश्चिन्त भाव से प्रभु चरणों में लीन हो सकें - ताकि जो आपके सम्पर्क में आए उसे भी आप कुछ प्रदान करने की सामर्थ्य रखते हो।

यह निश्चित है कि आध्यात्मिक उन्नति तभी हो सकती है, जब परिवारिक समृद्धि एवं उन्नति हो। परिवारिक उन्नति के अभाव में गृहस्थ की कठिनाइयों के साथ चलते व्यक्ति अपने जीवन में श्रेयता नहीं ला सकता। यह माला ऐसी ही अनेक परिवारिक जीवन में आने वाली कठिनाइयों का निदान प्रस्तुत करती है। परिवारिक जीवन में तो कभी बच्चों की तबीयत खराब होती है, तो कभी किसी संकट में अचानक व्यय हो उठता है, साथ ही नित्य भरण-पोषण के पक्ष तो होते ही हैं। सचमुच जो व्यक्ति गृहस्थ में रहते हुए साधना करता है, उसका प्रयास प्रशंसनीय है क्योंकि वह किन्हीं जिम्मेदारियों

से मुंह मोड़ कर केवल अपनी उन्नति में लीन होने वाला श्रमिक समस्या हल हो गई।
स्वार्थी प्राणी नहीं होता।

पारिवारिक उन्नति के साथ-साथ, व्यक्ति का सामाजिक जीवन भी सामानान्तर रूप से चलता रहता है। उस पर गृहस्थ का दोहरा दायित्व होता है। वह जितने अंशों में उसे सामाजिक भी होना ही पड़ता है। सामाजिक जीवन में अनावश्यक विवाद, शत्रु-बाधा, सहयोगियों से तनाव जैसी कई समस्याओं से उनका नित्य-प्रति के जीवन में उलझन पड़ता है। यह माला ऐसे अवसरों के लिए पूर्ण रूप से सफलतादायक है, क्योंकि जिस व्यक्ति में लक्ष्मी तत्व समाहित हो जाता है, उसे स्वतः ही 'यश-लक्ष्मी' प्राप्त होती है, उसे 'राज्य-लक्ष्मी' भी प्राप्त होती है, और लक्ष्मी के इन श्रेष्ठ स्वरूपों के रहते व्यक्ति के सामाजिक जीवन में फिर बाधाएं उपस्थित हो ही नहीं सकती। यदि कोई विरोध करता भी है तो स्वतः ही वह निस्तेज हो उठता है। घोर से घोर विरोधी भी ऐसी माला धारण करने वाले के सामने हक्कलाने से लग गए देखे गए हैं।

व्यक्ति के सम्पूर्ण क्रिया - कलापों को किसी परिभाषा में नहीं बांधा जा सकता। यह नहीं कहा जा सकता कि व्यक्ति के जीवन में केवल इतने-इतने कार्यों इतनी-इतनी बाधाओं से ही निपटना होगा। नित्य जटिल होते जा रहे पारिवारिक व सामाजिक जीवन में एक के बाद एक नित्य नए पहलू प्रकट हो रहे हैं, किन्तु इनका निदान तो एक उपाय से किया जा सकता है और उसका उपाय है जीवन में ऐसे श्रेष्ठ दैवी बल का प्रवेश, जो सभी बाधाओं को एक और झटक दे। **लक्ष्मी वर-वरद माल्य शरीर व मानस में निरन्तर ऐसी ही दैवी ऊर्जा प्रवाहित करने की क्रिया है।**

व्यापार वृद्धि के क्षेत्र में भी इस माला का अद्भुत प्रभाव देखा गया है। अनुभव में आया है कि व्यापारी बन्धुओं ने (अथवा जिन साधकों एवं शिष्यों का जीवनयापन किसी व्यवसाय से होता है उन्होंने) इस माला को धारण करने के पश्चात् न केवल अपने आप में सम्मोहन सा भर लिया, वरन् ऐसा लगता है कि उन्होंने मनकों के रूप में लक्ष्मी को भी अपनी दुकान में बांध सा लिया है। जो प्रभाव उन्हें श्री यंत्र, कनकधारा यंत्र, कुबेर यंत्र स्थापित करने से मिले थे, उससे भी कहीं अधिक तीव्र प्रभाव इस माला के धारण करने से प्राप्त हुए हैं। गुडगांव के एक प्रमुख उद्योगपति ने पूज्य गुरुदेव के निर्देश पर यह माला यों ही धारण कर ली, और एक सामाजिक भीतर-भीतर स्वतः ही उसकी फैक्टरी में चली जा रही

इस माला के अनेक लाभ सम्भव हैं, जिनसे व्यक्ति का जीवन सुखी एवं सफल हो उठता है। ऐसी माला का नित्य दर्शन और धारण अपने-आप में पुण्यदायी कार्य है, जिसमें न किसी लम्बी-चौड़ी साधना की आवश्यकता है और न किसी आडम्बर की। यह तो एक ऐसी विशिष्ट माला है कि इसे घर का प्रत्येक सदस्य धारण कर सकता है। घर के मुखिया के साथ-साथ उसकी पत्नी को यही माला धारण करना अतिरिक्त आवश्यक रहता है, क्योंकि लक्ष्मी स्त्री स्वरूप है और इसी से वह घर की स्वामिनी से सहज रूप से समाकर घर का सर्वांगीण विकास करती है। यह माला न केवल व्यक्ति को धन-धन्य और लक्ष्मी के विविध स्वरूपों में लाभदायक सिद्ध होती है, वरन् ऐसी माला का निरन्तर वक्षस्थल पर स्पर्श उसे नव-जीवन प्रदाता और रोगों से मुक्ति के साथ ही साथ आध्यात्मिक लाभ भी देने वाला है। भारतीय चिन्तन के अनुसार नाभि से लेकर कंठ प्रदेश तक का सारा शरीर, भगवान विष्णु का क्षेत्र है अतः इस स्थान पर निरन्तर लक्ष्मी का, **वर-वरद माल्य** का सुखद व पवित्र स्पर्श, व्यक्ति के जीवन में, लक्ष्मी-नारायण की संयुक्ति का पुण्य देता है। वक्षस्थल का प्रदेश न केवल भगवान विष्णु का क्षेत्र है, वरन् इसी प्रदेश में ही समस्त देवी-देवताओं का भी निवास है।

इस माला द्वारा आप लक्ष्मी साधना के निम्न प्रयोग भी सम्पन्न कर सकते हैं, उसके लिये 1 माला मंत्र जप ही पर्याप्त है।

लक्ष्मी प्राप्ति के लिए मंत्र -

// ॐ श्रीं हीं कर्त्तीं महालक्ष्म्यै नमः //

व्यापार वृद्धि के लिए मंत्र -

// ॐ कर्त्तीं व्यापारोद्भृतिं हीं नमः //

शत्रु नाश के लिए मंत्र -

// ॐ कर्त्तीं व्यापारोद्भृतिं कर्त्तीं नमः //

रोग मुक्ति के लिए मंत्र -

// ॐ वं मम देह चैतन्य जाग्रय हीं हुं नमः //

गड़ा हुआ धन प्राप्ति के लिए मंत्र -

// ॐ हां हीं शतपत्रिके हां हीं श्रीं स्वाहा //

उपरोक्त सभी प्रयोगों में मंत्र भिन्न हैं किन्तु साधना विधि समान ही है जिन्हें स्थापन के साथ उचित दिवस पर जप करने से अनुकूल लाभ प्राप्त होता है।

लक्ष्मी वर-वरद-माल्य - 300/-

गुरु ही कर सकते हैं -

आज्ञा चक्र जागरण

गुरु द्वारा शक्तिपात्र से किया जाता है -

छत्तीस आयामों का जागरण

दिव्यता के स्वरूप गुरुदेव जब शिष्य के आज्ञा चक्र को स्पर्श करते हैं तो विस्फोट संहार की क्रिया प्रारम्भ होती है पर उस विस्फोट में छिपा है नवीन सृजन जागरण, जो जीवन के भौतिक एवं आध्यात्मिक सभी पक्षों को जाग्रत कर शिष्य के जीवन में परिपूर्णता ला देता है, यही है दीक्षा का रहस्य

ज्ञानज्ञानज्ञानज्ञानज्ञानज्ञानज्ञानज्ञानज्ञानज्ञानज्ञानज्ञानज्ञानज्ञानज्ञानज्ञान

यह संसार इसके समस्त क्रिया कलाप वास्तव में एक निश्चित चक्र में गतिशील है। एक वर्तुल अदृश्य रूप से धूम रहा है। धूमने के कारण प्रतिदिन सुबह होती है, सायं होती है और पुनः रात्रि के बाद प्रातः आती है। मनुष्य का संसार में शिशु रूप में जन्म होता है, आयु विशेष आने पर वह युवा होता है, वृद्ध होता है और अंत में शरीर त्याग कर पुनः इस चक्र में आ जाता है। ऋतुओं का आगमन, राष्ट्रों का बनना बिंगड़ना, इस पृथ्वी और ब्रह्माण्ड में निरन्तर परिवर्तन होना, मानो कोई अदृश्य सत्ता सभी को नचा रही हो। श्रद्धालु इसे आस्था की दृष्टि से देखते हैं और विज्ञान को मानने वाले अथवा तार्किक इसका विश्लेषण करना चाहते हैं, किन्तु उसे भी अन्ततोगत्वा किसी अदृश्य सत्ता का अस्तित्व मानना ही पड़ता है, जिसे वह अणुओं का संयोजन-वियोजन कहता है, उसको संचालित करने वाले 'किसी' को स्वीकार करना ही पड़ता है। विज्ञान और ज्ञान की ओर झुकना ही पड़ता है, और आधुनिक भौतिक शास्त्र के पितामह कहे जाने वाले विख्यात वैज्ञानिक नोबल पुरस्कार विजेता अल्बर्ट आइन्स्टीन ने भी अपने जीवन के अंतिम दिनों में यह स्वीकार किया कि वे ज्ञान के जिन बिन्दुओं तक पहुंचे, वहां तक तो भारतीय योगी कब के पहुंच चुके थे। उन्हें अपने जीवन के अंतिम दिनों में सिद्धाश्रम व उसमें ज्ञान के अनेक पक्षों पर शोधरत योगियों का भी ज्ञान हुआ था, और उन्होंने बड़े खेद के साथ स्वीकार किया था, कि यदि उनके जीवन के कुछ दिन और शेष रहते तो वे सशरीर सिद्धाश्रम पहुंचने की चेष्टा करते।

इस स्वीकारोक्ति से पाश्चात्य वैज्ञानिक जगत में हलचल मच गई और अनेक प्रख्यात वैज्ञानिक अपनी गर्व भरी दृष्टि को भारत के प्रति नम्र करने के लिए विवश हुए।

ज्ञान के जगत को, ज्ञान की सत्ता को इसी प्रकार दृष्टि श्रम करके ही समझा जा सकता है, यदि यहां भी उसी प्रकार तर्कों का बोलबाला रहे, तो इसका विज्ञान से भेद ही क्या? क्योंकि इसी ज्ञान के जगत की ही सत्ता है, जो इस समस्त ब्रह्माण्ड को अपनी चेतना, अपनी तपः ऊर्जा और अपने आग्रह द्वारा नियमित व नियन्त्रित करता है। केवल पृथ्वी का दिन-रात धूमना नहीं, केवल वस्तुओं का समय पर आना और जाना नहीं, वरन् इस समस्त ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी घटित हो रहा है, जो कुछ भी छल, कपट, व्याभिचार एवं हिंसा व्यास हो रही है और धर्म का निरन्तर क्षय होकर धर्म के नाम पर असत् की सत्ता व्यास हो रही है, उसको नियन्त्रित करने का कार्य यही ज्ञान का जगत करता है, जिसे प्राचीन भारतीय साधनात्मक ग्रंथों में अत्यन्त श्रद्धा व सम्मान के साथ ज्ञानगंज (सिद्धाश्रम) की संज्ञा दी गई है।

धर्म का तात्पर्य भौतिकता का विनाश नहीं होता, जैसा कि अधिकांश सम्प्रदाय चीख-चीख कर कहते हैं, वरन् धर्म का, अध्यात्म का सही तात्पर्य यही होता है कि इस पृथ्वी पर भौतिकता व आध्यात्मिकता के मध्य जो असंतुलन समाप्त हो गया हो, उसे नियन्त्रित किया जाए। यह जीवन के सर्वथा व्यवहारिक पक्ष को सामने रखता है और इसी की यथार्थ

प्रस्तुति समाज के मध्य हो सके, इसके लिए अपने मध्य से समय-समय पर उच्चकोटि के योगियों, महर्षियों एवं तपस्वियों को इस धरा पर भेजता रहता है, चाहे वह भगवान् श्री कृष्ण का हमारे समक्ष उदाहरण हो या भगवान् बुद्ध का अथवा भगवत्पाद आद्य शंकराचार्य का और यह क्रम अक्षुण्ण है। ध्यान देने की बात है कि ऐसे प्रत्येक अवतरण एक निश्चित अंतराल पर ही होते हैं अर्थात् ढाई हजार वर्ष बाद ही एक अवतरण अस्तित्व में आता है, जिसे उसके जाने के बाद जनता ईश्वर मान कर पूजती है। भगवान् श्रीकृष्ण के ढाई हजार वर्ष बाद भगवान् बुद्ध का अवतरण इस धरा पर सम्भव हुआ और उसके ढाई हजार वर्ष बाद अब...!

क्या रहस्य है इस निश्चित अंतराल का?

निश्चय ही इस वर्तुल के पीछे भी प्रकृति का कोई रहस्य छिपा ही हुआ है। अनेक साधकों ने इस तथ्य को ध्यान में रख इसका रहस्य खोजना चाहा, किन्तु इसका प्रामाणिक उत्तर यदि मिलता है, तो महर्षि विश्वामित्र के द्वारा, जहां उन्होंने एक श्लोक में स्पष्ट कहा है -

अर्थात् 'प्रत्येक ढाई हजार वर्ष बाद ग्रहों का एक निश्चित संयोजन इस ब्रह्माण्ड में होता है और तब कोई दिव्य आत्मा सामान्य मनुष्य की ही भाँति मानव गर्भ का आश्रय लेकर इस धरा पर अवतरित होती है।'

भगवान् बुद्ध ने जहां अपने को सामान्य जन से दूर रखा? वे तो राजमहल और राजप्रद छोड़कर आ गए।

भगवान् का प्यार

अर्जुन ने एक बार बांसुरी से पूछा - सुभगे! तुम्हें कुछ स्वयं हर समय होठों से लगाये रहते हैं। हम सब उनकी कृपा पाने के लिए बहुत प्रयत्न करते हैं परन्तु सफल नहीं होते, जबकि तुम बिना प्रयत्न किए ही उनके अधरों पर रहती हो।

'बिना प्रयत्न किये नहीं अर्जुन' मैंने भी प्रयत्न किया है। जानते हो मुझे मुरली बनने के लिए अपना मूल अस्तित्व ही खो देना पड़ा है।

अर्जुन को तब समझ आई। बांसुरी अपने-आप में खाली थी, उसमें स्वयं का कोई स्वर नहीं गूंजता था, बजाने वाले के ही स्वर बोलते थे।

बांसुरी को देखकर कोई यह नहीं कह सकता था कि वह कभी बांस भी रह चुकी है, क्योंकि न तो उसमें कोई गांठ थी और न कोई अवरोध। अर्जुन को भगवान् का प्यार पाने का अनूठा सूत्र मिल गया।

भगवान् श्रीकृष्ण ने ज्वालों के संग जीवन बिताया, उन्हीं के मन में अनुकूल रास-रंग की लीलाओं में भाग लिया।

दूर रहने वाले, केवल मंचों पर चढ़ कर बात करने वाले महंत तो हो सकते हैं, सद्गुरु अथवा गुरु कदापि नहीं।

इस चर्चा के उपरांत भी एक जिज्ञासा शेष रह जाती है कि जब-जब ढाई हजार वर्ष बाद इस प्रकार का दिव्य अवतरण होता है, तो उसका व्यापक अर्थ क्या होता है? क्या वे मात्र धर्म की नवीन व्याख्या करने या नवीन मत देने के लिए ही अवतरित होते हैं अथवा उनका उद्देश्य केवल अधर्मी व्यक्तियों का नाश कर धर्म की स्थापना करना होता है। वास्तव में ये सभी व्याख्याएं अधूरी हैं। धर्म की हानि होने पर तो ईश्वर स्वयं मानव रूप में आते हैं, साथ ही वे अपनी विशिष्टता के द्वारा मनुष्य को केवल आध्यात्मिक उपदेश ही नहीं वरन् सही आध्यात्मिकता से परिचित कराने की क्रिया सम्पन्न कर जाते हैं, और यह क्रिया होती है कुण्डलिनी जागरण द्वारा व्यक्ति के आज्ञा चक्र को चैतन्य करने की। यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि हमारे पूर्वजों की कुण्डलिनी जाग्रत रहती थी, और जब वे अगला जन्म लेते थे, तो उन्हें दस-बारह वर्ष की अवस्था होते-होते अपना पिछला जीवन याद आ जाता था, क्योंकि एक जन्म में जाग्रत कुण्डलिनी शक्ति दूसरे जन्म में भी साथ रहती है, और जन्म के दोनों ओर देखने के कारण उनके जीवन में आपाधापी, तनाव अथवा कलह जैसी स्थितियां थी ही नहीं। आयों का वर्णन कहीं भी इस रूप में नहीं मिलता कि वे बड़े दीन-हीन, दुखी व दिरद्र थे, अपितु सर्वत्र उन्हें गीत गाने वाला बलिष्ठ, सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति कह कर ही चित्रित किया गया है, और इसका कारण केवल जाग्रत आज्ञा चक्र ही होता था।

आज्ञा चक्र जागरण को केवल यह अर्थ नहीं होता कि व्यक्ति इसके माध्यम से अपने भूत और भविष्य को जानने की क्रिया सम्पन्न कर लेता है, वरन् आज्ञा चक्र जागरण तो अपने-आप में सम्पूर्ण जीवन व्यवस्था का जागरण है। आज्ञा चक्र के जागरण का अर्थ है जीवन में सम्पूर्ण आध्यात्मिक व भौतिक क्षमताओं का जागरण। आज्ञा चक्र का आकार भगवान् शिव के तृतीय नेत्र के रूप में वर्णित किया गया है, जो खड़े आकार में माथे पर दोनों भौंहों के मध्य गुप्त रूप से अवस्थित है। इसके एक किनारे पर अठारह भौतिकता से सम्बन्धित बिन्दु हैं एवं दूसरे किनारे पर आध्यात्मिकता से सम्बन्धित अठारह बिन्दु इस प्रकार हैं -

भौतिकता के बिन्दु -

1. सुख, 2. ऐश्वर्य, 3. भोग, 4. विलास, 5. रस (कला, संगीत, गायन), 6. तृप्ति (सुस्वादु भोजन), 7. चैतन्यता, 8. माधुर्य (मनोवांछित साधनात्मक सफलता), 9. निर्झर, 10. देवत्व, 11. श्री, 12. काम (श्रेष्ठ पत्नी सुख), 13. विख्याति (यश, सम्मान, पद), 14. पुष्टि, 15. तुष्टि, 16. शांति (तनावमुक्ति), 17. औदार्य (दान आदि करने की पात्रता), 18. वर्चस्व (नेतृत्व)



आध्यात्मिकता के बिन्दु -

1. दया, 2. ममता, 3. करुणा, 4. प्रेम, 5. स्नेह (अपनत्व),
 6. आनन्द, 7. योग विभूति (अष्टादस सिद्धियाँ), 8.
 - निस्पृहता, 9. मोक्ष, 10. देहसिद्धि (शून्य गमन आदि विद्याएं),
 11. आसकाम, 12. जरा व्याधि मुक्ति, 13. ध्यान, 14.
 - धारणा, 15. समाधि, 16. मुदिता, 17. मैत्री, 18. कुण्डलिनी

जागरण ।

इन छत्तीस बिन्दुओं को जाग्रत करने की क्रिया केवल दीक्षा ही है, जो अपने आप में उच्च स्वरूप में शक्तिपात का रूप धारण कर लेती है। इन्हीं छत्तीस बिन्दुओं में से अलग-अलग बिन्दु को स्पर्श कर सद्गुरु अपने तपस्यात्मक बल द्वारा अपने शिष्य की समस्या का सामाधान करते हैं। उपरोक्त वर्णित सभी नाम प्राचीन काल के शास्त्रों में वर्णित हैं, जो उस युग की समाज व्यवस्था के अनुकूल हैं और बगल में उनका आज के अर्थों में सरल शब्दों में भावार्थ बताया गया है, क्योंकि समाज का मूल स्वरूप तो नहीं बदला है। व्यक्ति की आज भी वे इच्छाएं, कामनाएं और समस्याएं हैं, जो कि प्राचीन काल में होती थी। इन बिन्दुओं के माध्यम से जब तक व्यक्ति की समस्त भौतिक कामनाएं और सम्पूर्ण आध्यात्मिक भाव-भूमि जाग्रत नहीं कर दी जाती, उसे संतुष्ट नहीं कर दिया जाता, तब तक वह पूर्णता प्राप्त कर ही नहीं सकता।

भगवान श्रीकृष्ण ने इसी क्रिया को सम्पन्न करने के लिए आधार किया 'रास' को, जिसमें वे उन्मत्त स्त्री पुरुषों के आज्ञा चक्र पर ध्यान केन्द्रित कर, अपनी प्राण ऊर्जा को शक्ति के प्रवाह में बदल कर, आध्यात्मिक बिन्दुओं पर आधात कर उन्हें सूक्ष्म रूप से आध्यात्मिकता की ओर प्रेरित करते थे और उनके ढाई हजार वर्ष बाद पुनः भगवान बुद्ध ने यही क्रिया अपने धर्म चक्र प्रवर्तन के माध्यम से की। भगवान श्रीकृष्ण अथवा भगवान बुद्ध की आंखों में जिस मोहिनी शक्ति का उल्लेख कथाओं में यत्र-तत्र मिलता है, उसके पीछे यही रहस्य था कि उनकी प्राण ऊर्जा शक्ति का प्रवाह बन कर नेत्रों के माध्यम से प्रवाहित होती रहती थी, और इसी कारण दोनों

ही युग प्रवर्तक महापुरष, साक्षात् भगवान की संज्ञा से विभूषित किए गए... किन्तु चले जाने के बाद।

आज पूज्यपाद गुरुदेव जी निरन्तर यही क्रिया दीक्षाओं के एवं शक्तिपात के माध्यम से सम्पन्न करते जा रहे हैं, और इस क्रिया को सम्पन्न करने में कितना अधिक परिश्रम करना पड़ता है... व्यक्ति इसका अनुमान ही नहीं लगा सकता, क्योंकि वह चेतना की इस भूमि पर ही नहीं खड़ा होता।

प्रत्येक व्यक्ति की चेतना का मूल केन्द्र होता है उसका नाभि कुण्ड, जिसे साक्षात् अमृत-कुण्ड की संज्ञा दी गई है, और जो केवल ऐसे ही दिव्य अवतरणों में पूर्णरूप से जाग्रत व हिलोर लेता हुआ होता है। जिस क्षण व्यक्ति सद्गुरु के समक्ष अपनी समस्या लेकर उपस्थित होता है अथवा किसी विशेष मनोकामना या दीक्षा की प्रार्थना करता है, उस क्षण विशेष में वे अपने नाभि-कुण्ड के अमृतकणों को आलोड़ित कर शक्ति के प्रवाह के रूप में नेत्र के माध्यम से व्यक्ति के आज्ञा चक्र के उस बिन्दु पर प्रवाहित कर देते हैं, क्योंकि उन्हें ज्ञात होता है कि किस बिन्दु पर दबाव देकर क्या कुछ सम्पन्न किया जा सकता है अथवा सामने वाले के अंदर वह विशेषता उत्पन्न की जा सकती है।

वह योग की अत्यंत दुर्लभ एवं अगम्य प्रक्रिया है, इसी कारणवश इसे साक्षात् परमेश्वर की लीला की संज्ञा दी गई है। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में गुरु को बहुत कठिन प्रक्रिया करनी होती है, किन्तु वे फिर भी अपने अंदर के अमृत-कुंड को निरन्तर शिष्यों और साधकों पर उड़ेलते हुए उनके विष को पीते रहते हैं। इसी कारणवश आज्ञा चक्र को भगवान शिव का स्थान कहा गया है। भगवान शिव ने जिस प्रकार मर्थन के समय एक बार... विषपान किया... सद्गुरु उसे प्रत्येक क्षण करते रहते हैं।

**“जब तक चन्द्रगुप्त के साम्राज्य को पूरे भारतवर्ष में स्थापित नहीं करुंगा
तब तक शिखा बन्धन नहीं करुंगा”**

यह श्रीमद् प्रतिज्ञा थी

महान् नीतिकार, राजगुरु कौटिल्य की जिन्हें चाणक्य के नाम से जाना जाता है

इतिहास का एक सुनहरा अध्याय

जिसमें चाणक्य ने देश हित में सारे शत्रुओं का स्तम्भन कर दिया

शत्रु रक्षण भी विशेष तांत्रिक क्रिया

जिसके माध्यम से आज भी शत्रु की बुद्धि गति-मति को स्तम्भित कर अपने अनुकूल बनाया जा सकता है।

अध्ययनशील प्रकृति रही है मेरी प्रारम्भ से ही। आध्यात्मिक समानुसार पात्र बदलते रहते हैं।

व तांत्रिक प्रकृति के कारण मेरा रुझान ऐसे साहित्यों में प्रमुख है, जिनमें तंत्र और अध्यात्म का समन्वय होता है। अत्यधिक चिंतनशील प्रकृति का होने के कारण मेरा मस्तिष्क शोधशाला बन गया था।

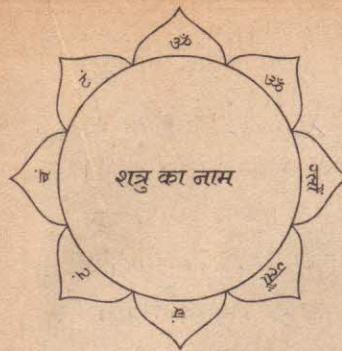
अपनी इसी प्रकृति के कारण मैं अनेक लाइब्रेरियों में जाता रहता हूँ और इसी तरह मैं एक दिन ऐसे ग्रन्थागार में पहुंचा, जहां बहुत सी प्राचीन पुस्तकें और हस्तलिखित पाण्डुलिपियां रखी थीं। मैं अपनी खोजी प्रवृत्ति के कारण वहां उन पुस्तकों के मध्य बैठ उनको पढ़ने लगा। वहां मेरे हाथ में अत्यन्त जर्जर अवस्था में एक किताब आई, जो चाणक्य के विषय में थी, उसमें चाणक्य के आध्यात्मिक जीवन का विवरण था। चूंकि चाणक्य एक ऐसा पात्र है, जिसने आध्यात्मिक जीवन जीते हुए राजनीति और अर्थशास्त्र पर ग्रंथ लिखा; आज भी उसका लिखा ग्रंथ सर्वश्रेष्ठ है, अतः मुझमें इस किताब को पढ़ने की उत्सुकता बढ़ गई।

मैं पन्ने पलटता रहा, तो ऐसा अनुभव किया, कि वर्तमान राजनीतिक दशा और चाणक्य के काल की राजनीतिक दशा में काफी हद तक समानता है; बस फर्क है, तो सिर्फ शताब्दियों का। तब भी राजनीतिक उतार-चढ़ाव आते रहते थे और आज भी राजनीतिक उसी प्रकार की है। ऐसा प्रतीत हुआ, कि राजनीति तो प्रारम्भ से ही एक समान ही चलती आई है, बस कार्य करने लगता है।

चाणक्य अपने राजनीतिक जीवन में एक सफल व्यक्तित्व था, इसके पीछे उसकी तपस्या, उसका आध्यात्मिक जीवन ही था, परन्तु इसके साथ वह एक सफल तथा श्रेष्ठ तांत्रिक भी था, जिसका वर्णन अत्यल्प मिलता है; ऐसा मैं इसलिए कहा रहा हूँ, क्योंकि उस पुस्तक में जो वर्णित था, उसके अनुसार चाणक्य ने अपने संकल्प को पूर्ण करने हेतु कुछ तांत्रिक व मांत्रिक साधनाएं भी सम्पन्न की थीं।

इससे पता चलता है, कि चाणक्य ने अपने राजनीतिक जीवन को सफल बनाने के लिए साधनाओं का सहारा लिया और उसने निश्चय ही अपने संकल्प को पूर्ण करने हेतु कुछ प्रयोगों को सम्पन्न किया था और प्रत्यक्ष तो नहीं, परन्तु अप्रत्यक्ष रूप से उसने ही पूरा राजकार्य चलाया, चन्द्रगुप्त तो मात्र उसका शिष्य था।

मुझे ऐसा लगा, कि इस पाण्डुलिपि में कुछ विशेष क्रियाओं का वर्णन है, किन्तु पाण्डुलिपि स्पष्टतः नहीं समझ पाने के कारण मैं कुछ श्लोकों को उतार कर घर ले आया और एक श्रेष्ठ विद्वान् से उनका सरलीकरण करवाया, तो पता चला, कि यह एक तांत्रिक प्रयोग है, जिससे गति-मति का स्तम्भन हो सकता है। इस स्तम्भन प्रयोग को करने से शत्रु की गति-मति बंध जाती है तथा वह पूर्णतः प्रयोगकर्ता के अनुकूल बन जाता है।



पर एहसास किया, कि वास्तव में उसकी सफलताओं के पीछे उसकी बौद्धिकता के साथ-साथ तंत्र भी समन्वित था।

उसने अपने संकल्प को पूर्ण करने हेतु कई प्रयोगों का सहारा लिया और वास्तव में इतिहास साक्षी है, कि उसने अपने संकल्प को पूर्ण कर दिखाया, उसने अपने शत्रुओं की यह स्थिति बना दी, कि शत्रु उसके समक्ष कुछ सोचने-समझने की शक्ति से च्युत हो जाते थे और वह निरन्तर सफलता की ओर ही अग्रसर रहा।

आज भी, चाहे वह राजनीतिक जीवन हो या सामाजिक जीवन, प्रतिस्पर्धा तो बढ़ ही रही है। प्रत्येक व्यक्ति सफलता प्राप्त करने को लालायित है। इसके लिए यदि उन्हें गैरकानूनी तत्वों का भी सहारा लेना पड़ता है, तो वे हिचकते नहीं, वरन् ऐसे तत्वों का उपयोग कर सफलता प्राप्त करने का हर संभव प्रयास करते हैं, और इस बेताबी में लोग अच्छे-बुरे का भी ज्ञान भूल जाते हैं।

परन्तु चाणक्य ने इन प्रयोगों का उपयोग अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए नहीं किया था, वरन् जब देश की दशा अत्यधिक गंभीर हो गई और राज्य परिवार के सदस्य आपस में सत्ता के लिए युद्ध कर रहे थे, बाह्य देश भी इस स्थिति से लाभ उठाने की नीयत से आक्रमण करने के लिए तैयार हो गये थे, सीमाओं पर आक्रमण आरम्भ हो चुका था, ऐसी विषम परिस्थितियों में चाणक्य ने साधनाओं का सहारा लिया और शत्रुओं पर विजय प्राप्त की।

चाणक्य एक विद्वान व्यक्ति था, जिसने भली-भांति इन प्रयोगों को सम्पन्न किया, मात्र अपने सुख हेतु नहीं, वरन् जनकल्याण की भावना से प्रेरित हो कर। चाणक्य द्वारा प्रयुक्त किये गये प्रयोगों में से यह 'स्तम्भन प्रयोग' पाठकों के लिए प्रस्तुत है -

यह प्रयोग अत्यधिक तीक्ष्ण है, अतः इसे कभी हास्य के रूप में अथवा आजमाने के रूप में चर्ची करें, वरन् अत्यन्त

यह देखकर मैं चाणक्य विषम परिस्थितियों में इस प्रयोग को सम्पन्न करें। यह प्रयोग के चरित्र पर अपनी सम्पन्न कर अपने शत्रु की गति-मति को बांधकर अपने अनुकूल आदतानुसार शोधरत हो बनाया जा सकता है। इसके बाद जब भी शत्रु आपके सामने गया, फिर मेरे समझ रहस्य की परत-दर-परत खुलती और आप अपना मनोवांछित कार्य उससे सिद्ध करवा सकते हैं।

साधना विधान

- ★ इस प्रयोग में साधक को 'नीली हकीक माला' तथा 'शत्रु स्तम्भन यंत्र' का प्रयोग करना है।
- ★ यह प्रयोग दिनांक किसी भी अमावस्या को सम्पन्न करें। यह रात्रिकालीन प्रयोग है।
- ★ साधक शुद्ध स्वच्छ पीले वस्त्र पहन कर आसन पर बैठें। गुरु पीताम्बर अवश्य ओढ़ें।
- ★ लकड़ी के बाजोट पर सफेद रंग के वस्त्र बिछावें, उस पर हल्दी और रक्त चंदन के घोल से अष्टदल कमल बनायें तथा प्रत्येक आठ दलों में निम्न आठ अक्षरों को लिखें ॐ ॐ ज्लौं ज्लौं, ज्लौं, चं टं, चं, टं।
- ★ अष्टदल के मध्य शत्रु का नाम लिखकर उस पर यंत्र को स्थापित करें।
- ★ यंत्र का पूजन करें; पुष्प, चंदन, कुकुम, अक्षत चढ़ावें।
- ★ यंत्र के सामने तेल का दीप लगायें और सात लोहे की कीलें भी रख दें।
- ★ पश्चिमाभिमुख होकर 'नीली हकीक माला' से निम्न मंत्र की 51 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

ॐ हां ह्रीं हूं कामाक्षि! मायारूपिणि
सर्वमन्तोहारिणि स्तम्भय स्तम्भय रोधय
रोधय मोहय मोहय क्लां क्लूं कामाक्षि!
कान्हेश्वरि! हुं हुं हुं।

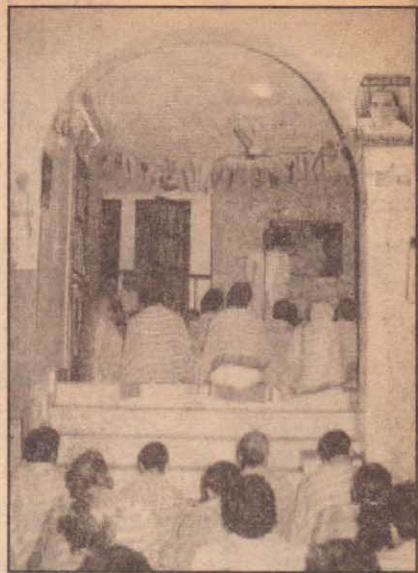
प्रयोग समाप्त होने पर पीले धागे से सभी लोहे की कीलों को बांधकर यंत्र तथा माला भी बाजोट पर बिछे कपड़े में रखकर बांध लें और किसी नदी में प्रवाहित कर दें।

साधक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए, कि मजाक के लिए या मन में दुर्भावना रखकर इस मंत्र की साधना नहीं करनी चाहिए। यदि कोई व्यक्ति आपकी प्रगति में बाधक बन रहा है और आपको दूसरा सुगम मार्ग नहीं मिल रहा है, तो उसे रोकने के लिए यह प्रयोग सम्पन्न करें।

प्रत्येक साधना निःशुल्क

गुरुधाम दिल्ली

जिस भूमि पर कैकड़ें प्रयोग और अकंक्ष्य दीक्षाएं
कम्पन हो चुकी हैं, उसे किंद्र चैतन्य दिव्य भूमि
पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग



मंगलवार, 28-06-05

समस्त साधकों एवं शिष्यों
के लिए यह योजना प्रारंभ हुई
है। इसके गतर्गत विशेष
दिवसों पर दिल्ली 'सिद्धाश्रम'
में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में
ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान
के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं,
जो कि उस दिन शाम 6 से 8
बजे के बीच सम्पन्न होती है यदि
श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी
दिन से साधनाओं में सिद्धि का
अनुभव भी होने लगता है।

धूमावती साधना एक प्रचण्ड और अचूक साधना है, जिसे यदि सही तरह सम्पन्न
किया जाए तो इसका निशाना खाली नहीं जाता। शिवयुक्त होने से धूमावती साधना
सौभ्य रूप ले लेती है, परन्तु इसका प्रभाव और भी अधिक बढ़ जाता है। इस साधना के
निम्न लाभ हैं - (1) यदि किसी प्रकार की आपके ऊपर कोई तंत्र बाधा है, अथवा कोई
तंत्र दोष है तो वह सामान होता है। (2) यदि शत्रु अधिक हावी एवं बलशाली हो गये हों,
तो वे परास्त होते हैं और आत्मबल प्राप्त होता है। (3) यदि किसी प्रकार का कोई लम्बा
रोग हो तो स्वास्थ्य लाभ होता है और दुर्बलता समाप्त होती है। (4) भूत-प्रेत आदि
इतर योनियों को कोई प्रकोप हो, तो उसका शमन होता है। (5) धूमावती का विशेष
सुरक्षा चक्र प्राप्त होता है, जिससे किसी भी स्थिति में साधक की अकाल मृत्यु या
दुर्घटना नहीं हो सकती। आज के वातावरण व युगनुसार सभी साधकों को यह प्रयोग
सम्पन्न कर ही लेना चाहिए

बुधवार, 29-06-05 कृष्ण सौन्दर्य आकर्षण प्रयोग

किसी भी व्यक्ति का चेहरा उसके व्यक्तित्व का दर्पण होता
है। यदि आपके मुख पर तेजस्विता है, आकर्षण है, तो स्वतः
सामने वाला व्यक्ति आप से प्रभावित होगा ही। शरीर यदि
दुर्बल भी हो, परन्तु यदि मुख पर आभा है, सौन्दर्य है तो
कोई भी आप से बात करने को लालायित होता है। सौन्दर्य
वह भी कृष्ण के समान जहां हर कोई उन्हें टकटकी बांध कर
देखने को विवश हो जाती है आप भी ऐसे ही कायाकंचन एवं
मुख मंडल पर तेजस्विता ला सकते हैं कि आप किसी से भी
अपने मन की बात मनवा सकते हैं और सौन्दर्य तो भीतर
और बाहरी दोनों ही होना चाहिए एक बार कृष्ण सौन्दर्य
आकर्षण प्रयोग को अवश्य ही करके देखिये।

गुरुवार, 30-06-05 पूर्व जन्म दोष शमन प्रयोग

वर्तमान में जब व्यक्ति सुकर्म करने के उपरान्त भी
अनेक प्रकार के कष्ट और दुःख आदि भोगता है, तब
उसका विश्वास ईश्वर के प्रति और गुरु के प्रति हिलने
लगता है। इसके विपरीत दूसरी ओर छल कपट करने
वाला व्यक्ति आनन्द और मस्ती के साथ जीवन व्यतीत
करता है। इन सबका कारण पूर्ण जन्मों में ही छिपा होता
है। इस साधना द्वारा न केवल पिछले कई जन्मों को
साधक देखने में सफल होता है, अपितु उन कर्म दोषों का
शमन भी इसी साधना द्वारा संयुक्त रूप से हो जाता है।
इस साधना के बाद ही साधक को सिद्धि सम्भव हो पाती
है। प्रत्येक योग्य साधक हेतु।

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

१. आप अपने किन्हीं दो मित्रों अथवा स्वजनों को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर दिल्ली गुरुधाम में सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की सदस्यता का एक वर्षीय शुल्क रुपये 240/- है, परन्तु आपको मात्र रुपये 460/- ही जमा करना है। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मंत्र सिद्ध, प्राण प्रतिष्ठित सामग्री (यंत्र गुटिका, आदि) आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

२. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मित्र के लिए पत्रिका वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।

३. पत्रिका सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को क्रषि परम्परा की इस पावनसाधनात्मक ज्ञान धारा से जोड़कर एक पुनीत एवं पुण्यदायी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयास से एक परिवार में अथवा कुछ प्राणियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनात्मक चिंतन आ पाता है, तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो निःशुल्क हैं और गुरु कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की न्यौछावर राशि को अर्थ के तराजू में नहीं तोल सकते।

गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व

शास्त्रों में वर्णन आता है, कि मंदिर में मंत्र जप किया जाए तो अति उत्तम होता है, उससे भी अधिक पुण्यदायी होता है यदि नदी के किनारे करें, उससे भी अधिक समुद्र तट, और उससे भी अधिक पर्वत में करें, तो और पर्वत में भी यदि हिमालय में किया जाए, तो और भी कई गुना श्रेष्ठ होता है। इन सबसे भी श्रेष्ठ होता है यदि साधक गुरु चरणों में बैठकर साधना सम्पन्न करे और यदि गुरुदेव अपने आश्रम अर्थात् गुरुधाम में ही यह साधना प्रदान करें, तो इससे बड़ा सौभाग्य और कुछ होता ही नहीं।

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां दिव्य शक्तियों का वास सदैव रहता ही है। जो सदगुरु होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से अथवा सशरीर प्रतिपल अपने धाम में अवस्थित रहते हुए प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्म रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इसलिए यदि शिष्य गुरुधाम में पहुंच कर गुरु से साधना, मंत्र एवं दीक्षा प्राप्त करता है और गुरु चरणों का स्पर्श कर उनकी आज्ञा से साधना प्रारम्भ करता है, तो उसके सौभाग्य से देवगण भी ईर्ष्या करते हैं।

तीर्थ स्थल पुण्यप्रद हैं पर शिष्य अथवा साधक के लिए सभी तीर्थों से भी पावन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस धाम में सदगुरुदेव का निवास स्थान रहा हो, ऐसे दिव्य स्थान पर गुरु चरणों में उपस्थित होकर गुरु मुख से मंत्र प्राप्त करने की इच्छा ही साधक में तब उत्पन्न होती है, जब उसके सत्कर्म जाग्रत होते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए साधकों के लाभार्थ गुरुदेव की व्यस्तता के बावजूद भी दिल्ली गुरुधाम में तीन दिवसों में तीन दिवसों को साधनात्मक प्रयोगों की श्रृंखला निर्धारित की गई है।

योजना के बाबत इन 3 दिनों के लिये 28-29-30 जून

किन्हीं पांच व्यक्तियों को वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क $240 \times 5 = \text{Rs.} 1200/-$ जमाकर के या उपरोक्त राशि का बैंक डाप्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर सदस्यों के डाक पते लिखवाकर उपहार स्वरूप ये दीक्षा आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

यदि दीक्षा फोटो द्वारा प्राप्त करना चाहें तो निर्धारित तिथियों के पूर्व ही अपना फोटो एवं पांच सदस्यों के सदस्यता शुल्क की राशि का ड्राप्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर दिल्ली कार्यालय के पते पर ऐसे आपका फोटो पांच सदस्यों के नाम पते एवं ड्राप्ट हमें उपरोक्त तिथि से पूर्व ही प्राप्त हो जानी चाहिए पत्र विलम्ब से मिलने पर दीक्षा सम्पन्न न हो सकेगी। यदि राशि मनीऑर्डर से भेजना चाहें तो फोटो एवं मनीऑर्डर जोधपुर कार्यालय भेजें।

* दीक्षा आज के युग में एक प्रामाणिक उपाय है सफलता की ऊर्जाओं को प्राप्त कर लेने का, जीवन के अभाव का, अधूरेपन को दूर कर देने का, जीवन में अनुलौटी बल, साहस, पौरुष एवं शैर्य प्राप्त कर लेने का साधना में सिद्धि प्राप्त कर लेने का...

* गुरु प्रत्यन्त शक्तिपात द्वारा शिष्य निस कार्य द्वारा वह दीक्षा प्राप्त करता है, उसमें निषुणता प्राप्त कर लेता है, क्योंकि वह सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त करने का एक लघु उपाय है...

* दीक्षा में भाग लेने वाले साधकों का जल से अमृत अभिषेक करने के उपरान्त विशेष शक्तिपात प्रदान किया जाएगा। यह दीक्षा इन तीनों दिवसों में सायं ७ बजे प्रदान की जाएगी।

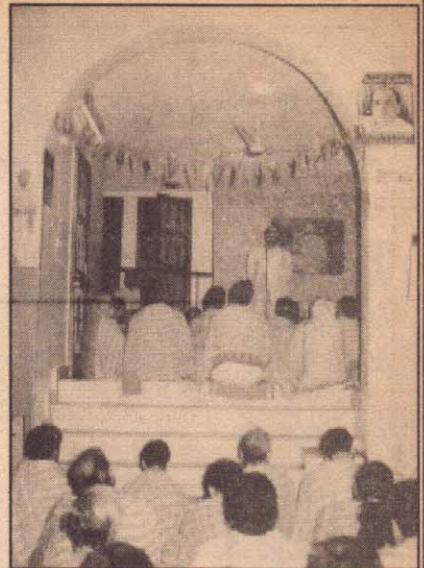
शक्तिपात युक्त दीक्षा

गुरु हृदय धारण दीक्षा

जब रिष्या को यह बोध हो जाता है, कि सदगुरुदेव सब कुछ हैं, तो वह अपने हृदय की एक-एक रग में उन्हें उतार लेना चाहता है। उसके भाव होते हैं, कि हर हाल में वह गुरुदेव में निमग्न हो जाए। यह एक प्रकार की छटपटाहट होती है, विरह की भाव भंगिमा होती है, और ऐसे में गुरु हृदयस्थ धारणा दीक्षा वहीं कार्य करती है, जैसे प्यासे को पानी, अंधे का दो नैन। इस दीक्षा के उपरान्त रिष्या को यह नहीं लगता कि गुरुदेव मुझसे दूर हैं। इस दीक्षा से जब गुरुदेव हृदय में स्थापित हो जाते हैं, तो फिर हृदय में बैठे-बैठे ही रिष्या का कल्याण करते रहते हैं। वस्तुतः रिष्या जीवन का प्रारम्भ तो गुरु दीक्षा से होता है, परन्तु इस दीक्षा को लिए बिना गुरुदेव से पूर्ण रूप से जुड़ने की क्रिया संभव हो नहीं पाती। एक तरह से यह दीक्षा साक्षात् गुरु कृपा ही होती है, जो तभी प्राप्त हो पाती है, जब साधक के अन्दर गुरु के प्रति श्रद्धा पूर्ण रूपेण पल्लवित हो चुकी होती है।

गुरुद्वारा दिल्ली

जिसे भूमि पर कैकड़ें प्रयोग और अकंक्ष्य दीक्षाएं
करने के लिए हो चुकी हैं, उसे किंद्र चैतन्य दिव्य भूमि
पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग



समस्त साधकों एवं शिष्यों
के लिए यह योजना प्रारंभ हुई
है, इसके अन्तर्गत विशेष
दिवसों पर दिल्ली 'सिद्धाश्रम'
में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में
ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान
के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं,
जो कि उस दिन शाम 6 से 8
बजे के बीच सम्पन्न होती है यदि
श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी
दिन से साधनाओं में सिद्धि का
अनुभव भी होने लगता है।

शुक्रवार, 29-07-05

मंत्र तंत्र और यंत्रों के इस विशाल समुद्र में अवगाहन करने का प्रयोजन सिद्धि ही होता है। यह सिद्धि किसी को शीघ्र तथा किसी को बहुत अधिक प्रयास के बाद मिल पाती है, और जिनको बहुत प्रयास के बाद भी नहीं मिलती वे साधनाओं को भ्रम जाल ही मान लेते हैं। परन्तु यह सत्य नहीं है, यदि किसी को मंजिल नहीं मिली तो इसका यह अर्थ नहीं है, कि मंजिल है ही नहीं। हां यह अवश्य सत्य है, कि मंजिल तक का रास्ता लम्बा था और वहां तक पहुंचते-पहुंचते व्यक्ति निराश हो गया, अथवा यह भी हो सकता है, कि उसे सही रास्ते का ज्ञान नहीं हो या फिर जो रास्ता मंजिल तक जाता हो, वह किसी कारण बंद पड़ा हो। मनुष्य के मस्तिष्क तन्तुओं में स्वयं के ही विकारों के फलतः कई ऐसी ग्रंथियाँ पढ़ जाती हैं, जो साधनाओं में सिद्धि मार्ग के अवरुद्ध कर देती हैं। इस प्रयोग द्वारा ऐसी ग्रंथियाँ के खुलने की क्रिया प्रारम्भ हो जाती है और इस प्रयोग को कर साधक को शीघ्र ही साधनाओं में सफलता अनुभूत होने लगती है।

शनिवार, 30-07-05

शत्रुनाशक छिन्नमस्ता प्रयोग

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में शत्रुओं से परेशान रहता ही है, चाहे वे बाह्य शत्रु हों या काम, क्रोधादि आन्तरिक, वे हमेशा ही उसे पीड़ित करते ही रहते हैं और उसकी उच्चति में बाधाएं उत्पन्न करते ही रहते हैं। अधिकतर ऐसा होता है, कि व्यक्ति चाह कर भी उनके चुंगल से नहीं निकल पाता। यदि आपके शत्रु भी आप पर हावी हो रहे हों, तो आपके इस प्रयोग के माध्यम से महाविद्या छिन्नमस्ता यह शत्रुओं पर बज्र की तरह प्रेहार करती है। उनका नामों निशान नहीं रहता है। आप इस प्रयोग को अवश्य ही सम्पन्न करें। इसकी प्रचण्डता को अपने जीवन में उतार कर उन पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

रविवार, 31-07-05

टेलीपैथी साधना

क्या यह सम्भव है, कि हम सामने वाले व्यक्ति के मन की बात पहले से ही जान जाएं? क्या हम जान सकते हैं, कि जिस व्यक्ति के साथ व्यापार कर रहे हैं, उसके मन में कैसी भावनाएं हैं? वह क्या सोच रहा है? कहीं उससे धोखा तो नहीं होगा? आपकी पत्नी के मन में या आपके पति के मन में क्या विचार हैं, क्या भावना है? आपके उच्चाधिकारी और आपके सहयोगी आपके बारे में क्या सोच रहे हैं? आपके शत्रु आपके बारे में क्या योजनाएं बना रहे हैं?

टेलीपैथी एक ऐसी विद्या है, जिसके द्वारा दूसरे के मन के विचारों को एक खुली पुस्तक की भाँति पढ़ा जा सकता है, चाहे वह व्यक्ति निकट ही अथवा दूर हो साधना द्वारा मस्तिष्क के उन तन्तुओं को चेतना प्राप्त होती है, और उनके जाग्रत होने पर मनुष्य की यह सुम अलौकिक शक्ति जाग्रत होती है, जिससे उसके लिए फिर रहस्य नहीं रह जाता है।

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

१. आप अपने किन्हीं दो मित्रों अथवा स्वजनों को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर दिल्ली गुरुधाम में सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की सदस्यता का एक वर्षीय शुल्क रुपये 240/- है, परन्तु आपको मात्र रुपये 460/- ही जमा करना है। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मंत्र सिद्ध, प्राण प्रतिष्ठित सामग्री (यंत्र गुटिका, आदि) आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

२. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मित्र के लिए पत्रिका वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।

३. पत्रिका सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को कृषि परम्परा की इस पावनसाधनात्मक ज्ञान धारा से जोड़कर एक पुनीत एवं पुण्यदायी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयास से एक परिवार में अथवा कुछ प्राणियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनात्मक चिंतन आ पाता है, तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो निःशुल्क हैं और गुरु कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की न्यौछावर राशि को अर्थ के तराजू में नहीं तोल सकते।

गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व

शास्त्रों में वर्णन आता है, कि मंदिर में मंत्र जप किया जाए तो अति उत्तम होता है, उससे भी अधिक पुण्यदायी होता है यदि नदी के किनारे करें, उससे भी अधिक समुद्र तट, और उससे भी अधिक पर्वत में करें, तो और पर्वत में भी यदि हिमालय में किया जाए, तो और भी कई गुना श्रेष्ठ होता है। इन सबसे भी श्रेष्ठ होता है यदि साधक गुरु चरणों में बैठकर साधना सम्पन्न करे और यदि गुरुदेव अपने आश्रम अर्थात् गुरुधाम में ही यह साधना प्रदान करें, तो इससे बड़ा सौभाग्य और कुछ होता ही नहीं।

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां दिव्य शक्तियों का वास सदैव रहता ही है। जो सदगुरु होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से अथवा सशरीर प्रतिपल अपने धाम में अवस्थित रहते हुए प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्म रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इसलिए यदि शिष्य गुरुधाम में पहुंच कर गुरु से साधना, मंत्र एवं दीक्षा प्राप्त करता है और गुरु चरणों का स्पर्श कर उनकी आज्ञा से साधना प्रारम्भ करता है, तो उसके सौभाग्य से देवगण भी ईर्ष्या करते हैं।

तीर्थ स्थल पुण्यप्रद हैं पर शिष्य अथवा साधक के लिए सभी तीर्थों से भी पावन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस धाम में सदगुरुदेव का निवास स्थान रहा हो, ऐसे दिव्य स्थान पर गुरु चरणों में उपस्थित होकर गुरु मुख से मंत्र प्राप्त करने की इच्छा ही साधक में तब उत्पन्न होती है, जब उसके सतर्कमंडल जाग्रत होते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए साधकों के लाभार्थ गुरुदेव की व्यस्तता के बावजूद भी दिल्ली गुरुधाम में तीन दिवसों में साधनात्मक प्रयोगों की श्रृंखला निर्धारित की गई है।

योजना के बारे में इन 3 दिनों के लिये 29-30-31 जुलाई

किन्हीं पांच व्यक्तियों को वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क $240 \times 5 = \text{Rs.} 1200/-$ जमाकर के या उपरोक्त राशि का बैंक डाप्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर सदस्यों के डाक पते लिखावाकर उपहार स्वरूप ये दीक्षा आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

यदि दीक्षा फोटो द्वारा प्राप्त करना चाहें तो निर्धारित तिथियों के पूर्व ही अपना फोटो एवं पांच सदस्यों के सदस्यता शुल्क की राशि का ड्राप्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर दिल्ली कार्यालय के पते पर भेजें आपका फोटो पांच सदस्यों के नाम पते एवं ड्राप्ट हमें उपरोक्त तिथि से पूर्व ही प्राप्त हो जानी चाहिए पत्र विलम्ब से मिलने पर दीक्षा सम्पन्न न हो सकेगी। यदि राशि मनीऑर्डर से भेजना चाहें तो फोटो एवं मनीऑर्डर जोधपुर कार्यालय भेजें।

शक्तिपात्र युक्त दीक्षा

कमला दीक्षा

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार प्रकार के पुरुषार्थ को प्राप्त करना ही सांसारिक प्राप्ति का ध्येय होता है और इसमें से भी लोग अर्थ

को अत्यधिक महत्व प्रदान करते हैं। इसका कारण यह है, कि भगवती कमला अर्थ की अधिष्ठात्री देवी हैं। उनकी आकर्षण शक्ति में जो मातृ शक्ति का गुण विद्यमान है, उस सहज स्वाभाविक प्रेम के पाश से वे अपने पुत्रों को बांध ही लेती हैं। जो भौतिक सुख के इच्छुक होते हैं, उनके लिए कमला स्वर्वश्रेष्ठ साधना है।

यह दीक्षा स्वर्व शक्ति प्रदायक है, क्योंकि कीर्ति, मति, धृति, पुष्टि, बल, मेधा, श्रद्धा, आरोग्य, विजय आदि देवी शक्तियां भिन्न-भिन्न देवों के अंश से उत्पन्न हुई हैं।

भुवनेश्वरी यंत्र

पराम्बा माँ जगज्जनी माँ भुवनेश्वरी दस महाबिद्याओं में से एक हैं तथा अपने साधक को धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष चारों पुरुषार्थों को प्रदान करने में समर्थ हैं। माँ भुवनेश्वरी की साधना से बाक् सिद्धि प्राप्त होती है, समस्त विद्याओं में श्रेष्ठता प्राप्त होती है, कला, विज्ञान आदि क्षेत्रों में पूर्ण सफलता प्राप्त होता है। दरिद्रता का नाश हो कर सौभाग्य का उदय होता है तथा शत्रुओं, विरोधियों व समस्त प्रकार की विपरित परिस्थितियों पर विजय प्राप्त होती है। मंत्र सिद्धि प्राण प्रतिष्ठित भुवनेश्वरी यंत्र में भगवती भुवनेश्वरी की समस्त शक्तियां समाहित होती हैं, जिसके स्थापन मात्र से, यदि उस पर भुवनेश्वरी मंत्र का जप न किया जाए तो भी, साधक को माँ भुवनेश्वरी की कृपा प्राप्त होती होने लगती है। 'मंत्र महार्णव' में तो यह भी कहा गया है कि जिसके घर में भुवनेश्वरी यंत्र स्थापित होता है, वह घर स्वर्ग के समान होता है।

जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान - 'ज्ञानदान'

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, अपने मित्रों को, धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे वंचित हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

आप क्या करें?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड क्रमांक 3) भेज दें, कि "मैं यह अद्वितीय उपहार प्राप्त करना चाहता हूँ एवं 20 पूर्व पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूँ। आप निःशुल्क मंत्र सिद्धि प्राण प्रतिष्ठित 'भुवनेश्वरी यंत्र' 390/- (20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क 300/- + डाक व्यय 90/-) की वी. पी. पी. से भिजवा दें, वी. पी. पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर छुड़ा लूँगा। वी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे 20 पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें", आपका पत्र आने पर हम 300/- + डाक व्यय 90/- = 390/- की वी. पी. पी. से मंत्र सिद्धि प्राण प्रतिष्ठित 'भुवनेश्वरी यंत्र' भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके।

सम्पर्क -

अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राजस्थान)

फोन - 0291 - 2432209, 2433623 टेलीफैक्स - 0291 - 2432010

३५ 'मई-जून' 2005 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '84' ३५

मंत्रं सत्यम् पूजा सत्यम् देवो निरंजनम् । गुरोवार्क्यं सदा सत्यम् सत्यमेव परं पदम् ॥

गुरु शब्द का अर्थ है अंदकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाला, लैकिन गुरु पूर्णिमा ऐसा अवसर है जब चित शक्ति अपनी पराकाष्ठा पर पहुंचती है उस समय शिष्य के भाव में, लय में, गति में एक सम्पूर्णता आ जाती है।

गुरु पूर्णिमा का दिवस केवल गुरु पूजा का ही दिवस नहीं है यह दिवस प्रत्येक शिष्य के लिए अपने अपने गुरु के प्रति श्रद्धा की अभिव्यक्ति का दिवस है। भारतीय आद्यात्मिक परम्परा में गुरु से शिष्य का गुरु पूर्णिमा के अवसर पर मिलन एक संगम की भाँति है। जहां हजारों शिष्य खपी नदियां गुरु में आकर बिलीन होती हैं। इसी कारण गुरु पूर्णिमा के दिन प्रत्येक व्यक्ति अपनी अपनी चेतना को गुरु का अधिष्ठान गुरु का आधार लेकर व्यक्त करता है इसीलिए यह दिवस प्रत्येक शिष्य के लिए परम हर्ष का दिवस है।

आओ इस गुरु पूर्णिमा के अवसर पर हम संकल्प लें कि हम अपने निखिलसद्गुरुदेव के ज्ञान का प्रकाश अपने भीतर तो प्रकाशित करेंगे ही क्योंकि अंदर का गुरु ही सद्गुरु है और जब हमने सद्गुरु को पा लिया है तो यह हमारा संकल्प है गुरु ने जो प्रकाश दीप सौंपा है, उस प्रकाश दीप से पूरे जंगल को प्रकाशमान अवश्य करेंगे। यही हमारा संकल्प है।

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः । मामकाः पाण्डवाश्वेद किमकुर्त सञ्जय ॥

इस बार एकप्र होंगे सद्गुरुदेव निखिल के शिष्य, जिन्हें संघर्ष करना है पूरे संसार की कौरती शक्ति से और हर स्थिति में जीत ही है क्योंकि साथ है सद्गुरु योगेश्वर निखिल।

निखिल गुरु पूर्णिमा भव्यात्मा

19-20-21
जुलाई 2005

शिविर स्थल: ब्रह्म सरोवर का पश्चिम घाट, कुरुक्षेत्र, हरियाणा

आयोजक: हिसार : ओम प्रकाश मलिक - 09896251881/09416136595 ○ दिल्ली: डॉ. जगदीश - 09350548689 ○ विजय नागरु - 09899025416 ○ कुरुक्षेत्र: ब्रजलाल धिमान - 09813237470 ○ निर्मल परिवार - 01744-221963 ○ परमिन्द्र कुन्द्रा - 09416086191 ○ इन्द्रकुमार दीपक - 234560 ○ सतीश जिन्दल - 230516 ○ अशोक शर्मा - 234373 ○ पानीपत: सत्यवीर सक्सेना - 0180-2643770 ○ राजेश गोयल ○ नारनौल: विजय प्रकाश शास्त्री - 01282-255064 ○ पूर्णचन्द्र सौपर्णा - 257134/248441 ○ जय प्रकाश - 255064 ○ धर्म सिंह सैनी - 255027 ○ सोहना: किशन नारायण गुप्ता - 0124-2363402 ○ भिवानी: लीलूराम - 01664-290002 ○ बालमुकन्द सौपर्णा - 248072 ○ सत्यवीर कुगड़ - 09896024688 ○ हिसार: सुभाष धर्मेन्द्र - 09812021794 ○ नफे सिंह - 01663-281627 ○ सत्यनारायण ○ फतेहाबाद: वरदान कन्हड़ी - 09416096466 ○ करनाल: सुरेश भारद्वाज - 0184-252517 ○ प्रवीण सोलंकी - 2281945 ○ अम्बाला: इन्द्रराज छिब्बर - 0171-2660305 ○ राधेश्याम कौशिक - 2670123 ○ नरेश कुमार धिमान - 09416188249 ○ सेलर ग्रीन ○ शाहबाद: अशोक खुराना - 09416084960 ○ यमुना नगर: सुरेश कुमार - 01732-242571 ○ ऋषिपाल - 09416113560 ○ सिरसा: शेरसिंह - 247120 ○ जीन्द: होशियार सिंह - 01681-249257 ○ रोहतक: चन्द्रसिंह पहल - 09813087249 ○ फरीदाबाद: ज्ञान बढ़ाना - 0989194330 ○ वीरेन्द्र ठाकुर - 0129-2512248 ○ विजय सहारा - 25064358 ○ अमृतसर: के.एल.शर्मा - 09417311701 ○ लुधियाना: धर्मपाल - 09417256607 ○ महेन्द्र सिंह - 09417039217 ○ सतेन्द्र सिंह - 09417239217 ○ चण्डीगढ़: शरणसिंह - 0172-27499125 ○ सरहिन्द: अशोक शर्मा - 01763-222585 ○ जम्मू: दुर्गा प्रसाद दत्ता - 09419197409 ○ मंजुल रायजादा - 09906006499 ○ राजेश बाली - 09419189596 ○ पठानकोट: अविनाश शर्मा - 0186-2251221 ○ अजय नैयर - 09814328898 ○ हिमाचल: के.डी.शर्मा - 09418065655 ○ आर.एस.मिन्हास - 01894-238356 ○ शैलेन्द्र शैली - 09418050051 ○ सतपाल शर्मा - 09419150422 ○ रायपुर: सुदामा चन्द्रा - 07757-208476 ○ दिनेश सैनी - 09425211588 ○ सिद्धाश्रम साधक परिवार, होशियारपुर ○ सिद्धाश्रम साधक परिवार, जालन्धर ○ सिद्धाश्रम साधक परिवार, पटना - 09334126251/09234888896 ○

21-22 मई 2005

शिवशक्ति महालक्ष्मी साधना शिविर, बैतुल

न्यू बैतुल महाविद्यालय ग्राउंड, कोठी बाजार थाने के पास, बैतुल
◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆

29 मई 2005

माँ चामुण्डा साधना शिविर, कांगड़ा।

शिविर स्थल: माँ चामुण्डा धाम, जिला-कांगड़ा (हि.प्र.)
दर्मशाला एवं कांगड़ा-पालमपुर राष्ट्रीय मार्ग में मेला स्थान से
चामुण्डा धाम के लिए रीटी बस सेवा उपलब्ध है।

◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆

3 जुलाई 2005

द्वंस महाविद्या साधना शिविर, मुम्बई

शिविर स्थल: सेन्ट्रल रेलवे ट्रेलफेर घर हॉल, परेल रेलवे
वर्क शॉप, बाबासाहेब अम्बेडकर रोड, वी.आई.पी.
शोखम के सामने, परेल मुम्बई

आयोजक: मुम्बई : चन्द्रु एन. तवरमलानी - 022-24929090
○रंगनाथन बोसले - 93232-76153 ○भास्करन एम. ए. -
98215-40392 ○वात्सल्य सक्सेना - 022-24160213 ○एस.बी.
द्विवेदी - 98211-81782 ○तुलसी माहोत्तम - 022-22828072 ○मंगेश
पटेल - 98921-59220 ○राहुल पांडे - 98925-56363 ○प्रितम
भारद्वाज - 93222-17845 ○सतीश जाधव - 022-24173396
○शीतल महाराज - 95251-2580342 ○नन्दकिशोर शर्मा -
022-28626766 ○योगेश मिश्रा - 95250-2308171 ○सी.बी.पाटील
- 95250-2351368 ○

◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆

19-20-21 जुलाई 2005

निरिविल गुरु पूर्णिमा महोत्सव, कुरुक्षेत्र

शिविर स्थल: ब्रह्म सरोवर का पश्चिम धाट, कुरुक्षेत्र, हरियाणा
◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆

19-20 अगस्त 2005

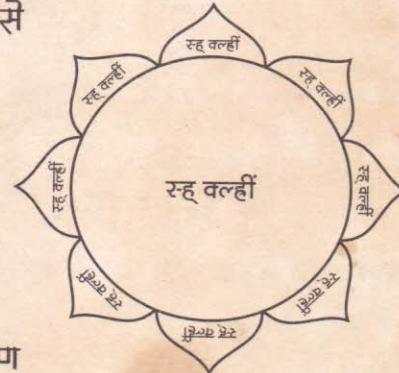
शिव सायुज्य सौभाग्य सिद्धि साधना शिविर

शिविर स्थल: गांधी मैदान, पटना, बिहार
आयोजक: पटना : डॉ.वी.के.आर्य - 09334126251/09234888896
○नागेश्वर प्रसाद - 0612-2022206 ○आर.के.मिश्रा - 3952251/
093341170179 ○मिथिलेश कुमार - 09431104963 ○चन्द्रीका
प्रसाद - 09431461613 ○जितेन्द्र नाथराय - 09334334484
○अशोक कर्ण - 2344892 ○विद्याभूषण श्रीवास्तव -
09835051771 ○रणजीत सिंह - 02521920 ○जनार्दन प्रसाद -

2359445 ○अजय कुमार गुप्ता - 09213134714 ○मधु श्रीवास्तव
- 09334164335 ○जय प्रकाश - 2027866 ○शशीभूषण -
09934081269 ○संजय सिंह - 2550221 ○दिनेश प्रसाद -
09334112491 ○अतुल कुमार - 09334109040 ○मीना कुमारी
- 09334152150 ○संतोष कुमार - 09334206619 ○रविन्द्र कुमार
- 09334966366 ○महेन्द्र पाल सिंह - 09835045726 ○शैलेन्द्र
कुमार - 09431004452 ○मुरलीधर प्रसाद - 3099703
○सिद्धेश्वर प्रसाद - 09350566998 ○जय किशोर -
09431090742 ○मनोज कुमार - 09334200417 ○योगेन्द्र कुमार
- 3097531 ○राजीव कंठ - 09334338266 ○नन्दकिशोर राय -
09835465258 ○सुषमा अशोक - 3069882 ○साधु शरण
○राजेन्द्र बहादुर ○सुबोध कुमार ○के.पी.सिंह ○वकील सिंह
○बालाजी सहाय ○दरभंगा: उपनंदन यादव - 09334911276
○राजकुमार साह - 09835250349 ○रामनरेश महासेठ -
06247-258618 ○अरुण गुप्ता - 09334029521 ○रामनाथ महासेठ
- 09334912587 ○अभय सिंह ○संजय कुमार ○पंकज
○बैगुसराय: सुबोध गुप्ता - 09835259322 ○संजीव सिन्हा -
06243-210988 ○कहलगांव: नवीन - 06429-224293 ○लौकहा:
गंगन देवी यादव - 06277-287280 ○गया: योगेन्द्र प्रसाद -
09431495917 ○सुरेश पंडित - 0631-2331848 ○रांची: विनोद
कुमार - 09835332733 ○कोलकता: आनन्द मिश्रा -
09831194605 ○जुरुपुर: पीताम्बर - 01893-250312 ○बिलासपुर:
आर.सी.सिंह - 07817-234343 ○रायपुर: के.के.तिवारी - 0771-
2442680 ○दिनेश सैनी - 09425211588 ○सम्बलपुर: सदानंद
पांडा - 09437158514 ○जमदेशपुर: रामबाबू सोनकर -
09334804480 ○कतरास: जे.पी.सिंह - 0326-2000865
○धनबाद: यू.पी.सिंह - 09334005958 ○जमानियां: मनीष -
09415242455 ○वाराणसी: एच.एन.सिंह - 09415318363
○रामनगर: कैलाश सिंह - 09415648215 ○इलाहबाद: अजीत
श्रीवास्तव - 0532-2506000 ○इन्दौर: कुलदीप सिंह -
09425057411 ○कचरापाड़ा: कामेश्वर प्रसाद - 09831190352
○आगरा: प्रो. रामसिंह - 09412374869 ○नेपाल: विष्णु नेपाने
- 009711528372 ○नरेश कुमार कर्ण - 009771494832 ○बिहार
शरीफ: रामकेश्वर प्रसाद - 06112-240050 ○पारसनाथ वर्मा -
222894 ○पैठना: राम किशन प्रसाद ○गुरु चरण प्रसाद -
06112-287817 ○धनबाद: जनार्दन प्रजापति - 0326-2220889
○आजमगढ़: प्रदीप गुप्ता ○झाझा: प्रदीप कुमार सिंह
○सिजुआ: आर.के.राय - 0321-2273505 ○मुजफरपुर: रजनी
रंजन द्विवेदी - 0621-2245548 ○राम नेक सिंह - 09835249313
◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆

सौभाग्य प्रदायक यंत्र

- ★ सौभाग्य जागरण साधना कर श्रीमुद्रिका धारण करने से भाग्योदय होता है।
- ★ पूर्व जन्म कृत संस्कार, दोष ढूर होते हैं।
- ★ आर्थिक उच्छ्रिति के नये अवसर प्राप्त होते हैं।
- ★ रुका हुआ धन प्राप्त होता है।
- ★ कर्ज का बोझ धीरे-धीरे कम होने लगता है।
- ★ परिवार में आर्थिक उच्छ्रिति से सौभाग्य का वातावरण बनता है।



सौभाग्य प्रदायक यंत्र

कुछ तो ग्रहों का प्रभाव होता है, और कुछ व्यक्ति के स्वयं के पूर्व कर्म व संस्कार जिनसे मिलकर व्यक्ति के भाग्य का निर्माण होता है। भाग्य के सम्बल की जीवन में अत्यन्त आवश्यकता होती है। क्या कारण होता है, कि समान रूप से परिश्रम करते वाले दो व्यक्तियों में, अथवा समान योग्यता रखते वाले दो व्यापारियों में एक का धनधा चमक जाता है, जबकि दूसरे का सामान्य ही रहता है - कहीं न कहीं इसका कारण उसके भाग्य में ही होता है।

साधना विधान

यंत्रों के द्वारा सौभाग्य का जागरण किया जा सकता है। इस यंत्र को कपड़े पर अंकित कर उसके मध्य में 'श्री मुद्रिका' को स्थापित करें। यंत्र के सामने एक दीपक प्रज्ज्वलित करें तथा उसके सामने एक पात्र में 'शुभ' एवं 'लाभ' नामक दो गुटिकाएं स्थापित कर लें। मुद्रिका एवं दोनों गुटिकाओं का कुंकुम, अक्षत एवं पुष्प से पूजन करें।

फिर निम्न मंत्र का 15 मिनट तक जप करें। प्रत्येक मंत्रोच्चारण के साथ एक आचमनी जल शुभ एवं लाभ पर डालें।

सौभाग्य जागरण मंत्र

// ॐ श्री सौभाग्य सिद्धिं ह्रीं ॐ नमः //

साधना सामग्री - 210/-

जप समाप्ति के बाद कुछ जल को ग्रहण करें। शेष जल को स्वयं अपने ऊपर तथा घर में छिड़क दें। ऐसा 11 दिन तक करें। बारहवें दिन यंत्र व गुटिकोंओं को मन्दिर में चढ़ा दें एवं श्री मुद्रिका धारण कर लें।

श्रीमद्भागवत श्रीमद्भागवत श्रीमद्भागवत श्रीमद्भागवत समर्पक :- श्रीमद्भागवत श्रीमद्भागवत श्रीमद्भागवत श्रीमद्भागवत

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट, कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

फोन : 0291-2432209, फैक्स : 0291-2432010



COLLECTION OF VARIOUS

- HINDUISM SCRIPTURES
- HINDU COMICS
- AYURVEDA
- MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server]

A.H.W

रजिस्ट्रेशन नं- 35305/81

With Registrar Newspapers of India
Posting Date 29-30 every Month

Postal No. RJ/WR/19/65/2003-05
Licence to post Without pre payment
Licence No. RJ/WR/PP04/2003-05



माह : जून-जुलाई में दीक्षा के लिए निर्धारित विषेष दिवस

पूज्य गुरुदेव निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे
व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों
पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

निर्धारित दिवसों पर यह दीक्षाएं प्रातः 11 से 1 बजे के
मध्य तथा सायं 5 बजे से 7.30 बजे के मध्य प्रदान की जाएंगी।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)

दिनांक
15-16-17 जून
8-9-10 जुलाई

वर्ष - 25

स्थान
सिद्धाश्रम (दिल्ली)

दिनांक
28-29-30 जून
29-30-31 जुलाई

अंक - 05-06

:: संपर्क ::

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान डॉ. श्रीमालीमार्ग हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 राज. फोन : 0291-2432209, 2433623, टेलीफैक्स-0291-24320
सिद्धाश्रम 306, कोहाट एन्कलेव पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-27182248, टेली फैक्स 11-27196700